डॉ. सुमेर सिंह 'शैलेश' जिन्दगी के प्यास का सफर

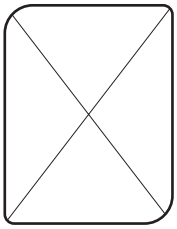

सेवाराम त्रिपाठी - परिचय - सतना जिले के ग्राम जमुनिहाई 22 जुलाई 1951 में जन्मे, उच्च राज्य शिक्षा सेवा में विभागाध्यक्ष के पद से 2016 में सेवा निवृत्त। म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी में संचालक के रूप में सेवाएँ दी। देश के सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में 1970 से निरंतर लेखन। प्राय: सभी प्रमुख विधाओं, कविता, निबंध, आलोचना, संपादन में सृजन हिन्दी आलोचना का एक प्रतिष्ठित नाम, 2 कविता संग्रह, अंधेरे के खिलाफ, खुशबू बांटती हवा एवं 14 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन, आलोचना वैचारिक विमर्श काव्य संकलन दो निबंध संग्रह प्रकाशाधीन। वैचारिक संगोष्ठियों के प्रख्यात वक्तों।

डॉ. सुमेर सिंह शैलेश को जानते - पहचानते हुए एक जमाना हो गया। वे एक सौम्य, सुसंस्कृत व्यक्तित्व के स्वामी हैं। मेलजोल में खुलापन, सहजता, सादगी तथा शिष्टता। वे संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहे और अपनी एक अलग पहचान बनाई। विवादो में उलझने की उनकी प्रकृति नहीं थी। अन्तर्मुखी वे ज्यादा थे। किसी न किसी प्रसंग में लगभग पच्चीस-तीस वर्षों तक उनसे सम्बद्ध रहा हूँ। उनके मिलने-बोलने में सहजता थी, वे मितभाषी भी और उत्सव प्रेमी भी। वे सुंदर सुसज्जित और सबका भला चाहने वाले भी हैं और हमेशा आह्लादित रहने वाले भी। किसी को ढंग से जानने के लिए संस्मरणात्मक होना जरूरी है।

एक प्रसंग याद करता हूं तो अभी भी एक फुरफुरी सी अनुभव करता हूँ। बात जुलाई 1988 की है। मेरा स्थानांतरण नागौद से शासकीय महाविद्यालय सतना के लिए प्रशासनिक रूप से हुआ था और सुमेर सिंह जी का स्वेच्छा से सतना से सागर की तहसील बण्डा में स्थित महाविद्यालय के लिये। बात विचित्र है कि सतना का रहने वाला आदमी, अपनी चाहतों को पूरा करने वाला स्वेच्छा से बिना किसी लाग लपेट के क्यों सागर जाना चाहेगा ? बहरहाल ऐसा हुआ। उसके कार्य-कारण संबंधों में न जाइए। कभी-कभी घटनाएं ऐसी भी घटती हैं।

खुड़पैचिए कहां नहीं होते ? उनकी दुनिया ही इसी तरह से फलती-फूलती है, परवान चढ़ती है और लोगों को उत्तेजित करती है। खबर फैली और मेरे कानों में भी उसकी भनक पहुंची कि यह गोरखधंधा मैंने ही कराया है। यह बात भी हवा में उड़ी कि शैलेश जी मुझसे काफी खफा हैं हालांकि खफा होना उनके स्वभाव में नहीं है। तब मैं नागौद से रोज स्कूटी से सतना आता जाता था। फिर मुझे लगा कि यह स्थिति साफ होनी चाहिये। अफवाहें बहुत तेज होती हैं और न जाने क्या-क्या रूप अख्तियार कर लिया करती हैं। मैं एक दिन उनके सतना स्थित घर गया और यह बताया कि यह गोरखधंधा मेरा नहीं है। आप चाहें तो भोपाल जाकर पता करें और मैं अपनी सहमति देता हूँ कि मुझे सतना से कहीं भी स्थानांतरित कर दिया जाए। मैं जाने को सहर्ष तैयार हूँ। असली बात यह थी कि शैलेश जी के पिताश्री कैंसर के मरीज थे और उनका लगातार इलाज हो रहा था। परेशान मैं भी था क्योंकि मेरे छोटे बेटे अभिषेक का इलाज बंबई के बांबे हास्पिटल में चल रहा था। वह क्रानिक आस्टोमलाइटिस लेफ्ट टीबिया का मरीज है लेकिन शैलेश जी का सतना रहना जरूरी था। मेरा डेरा तो उठना था सतना न सही कहीं और जम जाएं। क्या हर्ज है। मैंने भी कोशिश की शैलेश जी ने भी। शैलेश सतना रह गए और मैं स्वेच्छा से रीवा आ गया।

हुआ यह कि शैलेश जी ने राग भोपाली के लहजे में जब पता किया तो उन्हें यह तथ्य मालूम हुआ कि किसी सज्जन ने भोपाल जाकर सुमेर सिंह जी के नाम से आवेदन कर दिया कि वे बंडा जाना चाह रहे हैं और सहज प्रक्रिया में उनका स्थानांतरण वहीं के लिए हो गया। खैर मामला रफा-दफा हुआ और एक सन्देह की स्थिति समाप्त हुई। कालांतर में कुछ अरसा बाद शैलेश जी का स्थानांतरण शासकीय महाविद्यालय गुढ को हुआ। तब मैं टी.आर.एस. कॉलेज रीवा में पदस्थ था। उस दौर में शैलेश जी से अक्सर मिलना होता रहा। वे गुढ़ कॉलेज से वापस लौटते हुए कभी-कभी मेरे टी. आर .एस. कॉलेज रीवा स्थित आवास में आ जाया करते थे। खूब गप्पे होती थीं। एक दूसरे से कहते सुनते थे और अपने आपको ऊर्जावान महसूस करते।

उन्होंने मुझे जानकारी दी कि साठ साल का हो रहा हूं और कुछ लोग आयोजन भी कर रहे हैं। यह मेरे लिये प्रसन्नता की बात है कि वे साठ के हो गये।''साठा सो पाठा''सुमेर सिंह जी मेरी नजर में अभी भी खूबसूरत थे और नौजवान भी । उनके कंठ में रागिनी थी। जब भी गीत, गजल पढ़ते, अत्यंत तन्मय होकर ही। एक विशेष अदा के साथ कवि सम्मेलनों में अक्सर उनका आना- जाना बहुत दूर-दूर तक होता है। वहां वे अपनी रचना और कंठ की खुशबू बिखेरते रहते। जब परिचित लोग मुझे बताते तो सचमुच बहुत अच्छा लगता। मैंने उन्हें कई बार सुना भी। उनके अंदाजेबयां, स्वरलहरी और भाव-भंगिमायें मुझे आकर्षित करती थी।

उनकी एक किताब मुझे मिली- गीत गजल संकलन व गीतों के रश्मि द्वार जो राजश्री बुक सेन्टर भोपाल से 1984 में प्रकाशित हुई थी। इन गीत - गजलों में एक विशेष प्रकार की छुअन, रसमयता, एक अतिरिक्त किस्म की तरलता, किशोर मन की भावुकता का अहसास भी होता है। उनकी रचनात्मकता में रोमांटिक भाव-बोध, एक अजीब सी प्यास, एक अनकही सी थरथराहट और ऐन्द्रिकता बराबर पिरोई हुई है। यह सही है कि उनके गीत और गजल किन्हीं बड़ी चिन्ताओं को फोकस नहीं करते। वे जीवन की सहजता को ही व्यक्त करते हैं। हां, उनकी लम्बी परछाइयां आपको इर्द - गिर्द तैरती नजर आएंगी। छोटे-मोटे अहसास छोटी- छोटी चिन्तायें और हल्के-हल्के पदचाप संयमित ढंग से उनकी रचनात्मक छवियों से उभरते हैं। प्रेम की एक चाहत, एक विकल वेदना यत्र -तत्र- सर्वत्र है। तय है कि इस संकलन के बाद भी उनकी रचनाशीलता में कुछ व्यापकता और विस्तार भी पाया जाता है। शैलेश जी ने लिखा है कि- ''मैं विशुद्ध रचनाकार बना रहना चाहता हूं। सर्वथा मेरी कोशिश यही रही है कि गीत अपनी सुकुमारता, कोमलता और रागात्मकता से जुड़ा रहे। हृदय की धड़कन और सांसों के स्पंदन की तरह लयवद्ध रहे। बेमानी शब्द और प्रयोग की होड़ मूलक प्राचीर में गीत की नन्ही सी जान घुटने से बच जाए यही सजगता मुझे शिल्प के कई स्तरों में भटकाती रही है।''

शैलेश जी ने जिस दौर में लिखना शुरू किया उसमें माहेश्वर तिवारी, रमेश रंजक, बुद्धिनाथ मिश्र, गोपाल दास नीरज, मुकुट बिहारी सरोज, नईम, नचिकेता, शिव कुमार अर्चन, सोम ठाकुर, शांति सुमन और सतना के अनूप अशेष जैसे लोग रचनाशील थे। सबके अपने-अपने पदचिन्ह हैं। सबके अपने-अपने मिजाज हैं और सबकी अपनी-अपनी पहचान बनी है। गजल में दुष्यंत कुमार, रामकुमार कृषक, अदम गौड़वी जैसों ने जो मुकाम हासिल किया वह अद्भुत है। गीत नवगीत का एक परिदृश्य रहा है। जरूरी होता है कि कौन किस वस्तुस्थिति और यथार्थ को मनुष्य की संघर्षशीलता और तड़प को किस निगाह से देखता है। माहेश्वर तिवारी ने लिखा था- ''**धूप में जब भी जले हैं पाँव तुम्हारी याद आई**'' लेकिन रमेश रंजक ने उसी प्रसंग को एक विशिष्ट ढंग से और एक विराट कैनवास और निगाह से देखा और रेखांकित किया- ''**धूप में जब भी जले हैं पाँवसीना तन गया है, और आदमकद हमारा जिस्म/लोहा बन गया है।**'' कहीं न कहीं नजर चीजों को आर-पार देखने से बहुत कुछ शायरी में फर्क आता है । जैसे एक गीतकार की एक पंक्ति दस्तक दे रही है-''**एक छुअन फागुनी, पलाशबन उकेरे, मेंरा ही नाम कहीं, बांसुरिया टेरे**'' मेरी काव्य यात्रा के प्रारंभिक दौर में गीत-नवगीत से वास्ता रहा है लेकिन मैं गीत नवगीत चिल्लाता नहीं रहा। बाद में तो उस गैल से ही बाहर निकल आया । भाई रमेश रंजक से मैं कहा करता था कि आप कविताएं न लिखें, यह आपका असली मिजाज ही नहीं है। कृपा करके गीत ही लिखिये वह आपसे सधता है। कविता में हाथ मत आजमाओ दूसरे मित्र भाई शिव कुमार अर्चन से भी मैं यही कहा करता था कि कविताएं आपके मनोसंसार से मेल नहीं खाती।

गीतों के रश्मिद्वार में कुल 42 गीत गजल हैं। उनमें से कुछ का बानगी के तौर पर जायजा लिया गया। अधरों लगी प्यास की सिसकी/और दूर तक मृग तृष्णा जल /सूनापन भी मर जाता है/आकर कोई वीराना पल/रेतीले सैलाब लिए हम/छलके हैं कितना साजन में/ ''एक गीत में शैलेश जी ने इस मन: स्थिति को रेखांकित किया है कि, ''प्रिय के बिन सब कुछ सूना है- तुम बिन आंगन, चैबारे,/सारा जग सूना है,/मन सूना आँखें सूनी, यह दरपन सूना है/ ''..आज अकेला ही मेरा दु:ख, मुझसे दूना है।/'' यह आकुलता यह चाहत, यह प्यास, यह वेदना की बारम्बारता शैलेश जी कि रचनात्मकता का मूलधन है। सद्इच्छाओं के बावजूद उनकी टेर यहीं ज्यादातर मचलती हैं। एक और गीत की कुछ पंक्तियां देखें- ''**मै सनातन तृषा की भरूं आंजुरी, तुम मुझे उम्र भर प्यास देती रहो/ चिरपुरातन मिलन की गहूँ बाँसुरी, श्वास को क्षीण विश्वास देती रहो।**''

शैलेश जी कोमल कृपनाओं की पालकी पर सवार होकर गीतों के रश्मिद्वार खोलते हैं। **जैसे ''गुलमोहर अधरों पर खिलते, तेरी पलकों पर सावन है/ बाहों के झूले जब पड़ते, सांसों में ही वृंदावन है/ आज हठीली पुरवाई से बोलो, क्या कह दूँ, लगता गीतो**

की मेहदी से सारा तन, रच दूं/''जाहिर है शैलेश जो भोले विश्वासों और मधुर भावनाओं के कवि हैं। सद्इच्छाएं उनके मनोसंसार का आईना है। हालांकि जिंदगी का विकट संग्राम सद्इच्छाओं मात्र से लड़ा नहीं जा सकता। उनकी एक गजल है''एक चर्चा है इन हवाओं में/ बिजलियां कैद है घटाओं में/ ये अमन होश में रहे कैसे /दर्द से दर्द है दवाओ में/''

शैलेश जी की शायरी का फलसफा आकर्षित करता है । उनकी कोमल भावनाएं बार-बार मचलती हैं- लगता है वे कुछ बड़ा संदर्भ उगाना चाहते है। जीवन के बड़े परिप्रेक्ष्य में कुछ बड़ा सन्दर्भ रखना चाहते हैं और एक नई तड़प पैदा करना चाहते हैं। कुछ पंक्तियां पढ़ें - ''इन उजालों में बदहवासी है/ जिंदगी रेत जैसी प्यासी है/ कैसे अभिव्यक्ति दे जमाने की/दर्द अपना नहीं सियासी है/'' इस संकलन को पढ़ते हुए अनुभव करता हूं कि गीत शैलेश की कविता की आराधना और भक्ति का सोपान है। पीड़ा उनकी चिरसहचरी है। अपने संसार की समूची परछाइयां वे गीत गजलों में खोजते हैं। कितना उन्हें मिली और कितना नहीं, यह अलग बात है। सच्ची श्रद्धा और भक्ति के साथ-उभरा एक अन्यतम उदाहरण हैं ये पंक्तियां ''**गीत के शिवालय में दीप जो जले होंगे / जख्म बनके पीने में उम्र भर पले होंगे/ पीर के समुंदर में मोतियों का भ्रम कैसा /सीप में नयन होंगे अश्रु ही ढले होंगे/..सिसकियों के मेले में, याचना की गालियों में/ पूछिए थकन उनकी पाँव जो चले होंगे**/''

गीत और गजल के ऐसे आस्थावान राही शैलेश जी को साठ वर्ष पूरा करने पर सुख और संतोष का अनुभव करता हूँ। मेरी कामना है कि वे हमेशा एक सच्चे प्रेमी बने रहें और सैकड़ों वसंतों में कोयल की तरह अपनी तान छोड़ते रहें। गीत और पीड़ा से ही वे आंसुओं से इबारत लिखते हैं । उनकी पंक्तियां हैं- ''आंसुओं में जो डूब जाएगा/ गीत की चांदनी नहाएगा /दर्द के नित नए स्वयंवर स/ अपनी पीड़ा को ब्याह लाएगा/''

(2) अखबारों से और सोशल मीडिया से ज्ञात हुआ कि सुमेर सिंह शैलेश हमारा साथ छोड़ गए। अभी भी आश्चर्य चकित हूं कि गीतों गजलों में लगातार रमने वाले, उन्हें जीभर कर प्यार दुलार करने वाले शैलेश जी नहीं रहे। उनकी दो पंक्तियां स्मरण कर रहा हूं -''शायरी का मुकाम मत पूछो, कोई दीवाना चल के आएगा/शब्द की आरती सवारों तुम, जो भी आएगा सिर झुकाएगा /'' मैं भी सिर झुका रहा हूं गीत के इस राही को कभी-कभी खबरों से लड़ने का मन होता है। वे हमें भीतर तक हिला देती हैं। जाते सभी हैं, अच्छे भी बुरे भी। सबको एक न एक दिन जाना ही है।अमरौती खाकर कोई नहीं आया । राम-कृष्ण और बुद्ध भी गए। कोई भी काल की लपटों से बच नहीं सके। लगता है समय अच्छे लोगों को हमसे थोड़ा जल्दी ही छीन लेता है। मेरे आत्मीय मित्र श्री सुमेर सिंह शैलेश का बिछुड़ना कुछ इसी तरह ही हमें एक अजीब रिक्तता से भर गया। सुमेर सिंह शैलेश एक हँसमुख, सुदर्शन,भावों से भरे इंसान, प्यार से छलकते जिंदादिल और तरोताजा और खुश कर देने वाले इंसान थे। डूबकर प्यार करने वाले, आंतरिक भावों से मिलने वाले। भीतर तक छलक जाने वाले और छलका देने वाले। कहते कम उनकी आँखें ज्यादा बोलतीं थीं। उनके गीतों, गजलों में स्पर्श, सुगन्ध और चाहत का सुखद मिश्रण रहता था। वे संगीत को दिल की गहराइयों से चाहने वाले थे। कविताएं वे जीते थे और दिल से लिखते थे । उन्होंने गजलें लिखी हैं । मेरी नजर में अपनापा उनकी सबसे बड़ी पहचान रही है और संपत्ति भी। लिखना-पढ़ना और मस्त रहना यही उनकी जिंदगी का रोजनामचा रहा है। मैं विशेषणों में न जाकर उनकी आत्मीयता और सहजता को उनके गीत की कुछ पंक्तियों के साथ याद करना चाहता हूं- ''पत्थरों से भरी मुट्ठियां यहांध्बिजलियों से भरा आकाश हैध्आज अपना है क्या, कल को होगा भी क्याध्सोचकर मौन सारा इतिहास हैध्आदमी की तरह आदमी है नहींध्जिंदगी उससे कोसों हुई दूर हैध्आवरण और हैं आचरण और हैंध्व्यूह में वह फंसा कितना मजबूर हैध्घर में रहते हैं हमअजनबी की तरहध्राम से भी कठिन अपना वनवास है।''

हमारा यह समय अपने समूचे किए-धरे का रेसा- रेसा बटोर लेने का भी समय है। शैलेश जी शब्द साधक रहे हैं। यानी उन्होंने शब्दों की ही आराधना की है। उनकी चिंताओं में भारतीयता के विकृत स्वरूप को हमेशा संवारने की ही रही है। वे सत्ता व्यवस्था की लोलुपता और चारित्रिक गिरावट पर बहुत दु:खी होते थे। उनकी पंक्तियां हैं - ''क्या होगा इस देश का मेरे'' सब कुछ जाने राम गोली खाकर सो जाता है जहां विनम्र प्रणाम धर्म और आचरण हमारे ऐसे तंग हुएध् घर- आंगन-देहरी, गलियारे सब ही जंग हुए'' वे मरण के घर से भी होड़ लेने को तत्पर हैं । उनके गीत की पंक्तियां पढ़ें - ''जो अचर्चित रहे उम्र भरध् वे ही मेरे बने गीत- धन जो समय संग चल न सके ध्आज ओढ़े हुए हैं कफन ध्हो सृजन को भी चेतावनी ध् मैं मरण के भी घर होड़ लूं'' ऐसे प्यारे दुलारे और गीत गजलों के पुजारी को स्मरण करते हुए कहना चाहता हूं - ''दर्पण में देखिए तो आर पार देखिएध्चेहरे का हर चढ़ाव हर उतार देखिए/''

MOBILE ADDICTION IN CHILDREN

Dr. Mansi Parihar Harshey :- She is a senior consultant in Pediatrics and Neonatology. "She also has a special interest in adolescent medicine and is working towards optimizing the physical and psychosocial development of adolescents. Pediatric Consulant in Omega Children Hoshpital, Jabalpur.

Today's children are spending an average of 7 hours a day on entertainment media, including television, computers, phones and other electronic devices. Out of these "smart phone addiction " is now a rapidly growing problem in children.

It is adversely affecting the physical and psychosocial development of children

Definition : Cell phone addiction may refer to a compulsive and excessive dependence on mobile devices that causes negative consequences in various aspects of life.

Signs and Symptoms : Identification of mobile addiction is difficult Alcohol addiction and intake can be identified, Drug intake can be identified but there is no objective test to identify mobile addiction.

How ever, we must look for certain features : Lying about phone use.

Secretive Behavior : A child or teen may become secretive about phone activities. It may include hiding phone usage or becoming defensive when asked how much time they're spending on their phone.

Deteriorating Academic Performance : An inability to concentrate, Mood swings, irritability and aggressive behavior.

In older children, we can check for 3 parameters

1. Freqency : how frequently a person touches his mobile without work.
2. Duration: How long a person views his mobile.
3. Intensity : How deeply one is engrossed in mobile.

Impact of Mobile Addiction

Impaired Social Skills : difficulties with face to face interactions, empathy and effective communication

2. Sleep disturbances
3. Emotional and mental well-being: loneliness, depression and anxiety
4. Increased risk of Cyber bullying and online dangers
5. Obesity
6. Musculo skeletal problems due to wrong postures

Brain and Chemicals involved in Addiction

Whenever we see mobile, Dopamine gets released in our brain. It is also released when we smoke, drink or gamble. In other words, Dopamine is highly addictive. We have age restrictions on smoking, alcohol and gambling but no age restriction on social media and cell phones . It's available free of cost, anywhere and anytime.

Emotional intelligence: How does our mind work?

The information received through our five sensory organs (eyes, ears, nose, skin, tongue), directly goes to the Hypothalamus. From here it reaches the thinking brain and then emotional mind. Based on the information received, the person reacts or behaves.

How ever, sometimes the information bypasses the thinking minds and directly moves from the Hypothalamus to the emotional mind. This is known as Emotional Hijack. Because of this, the individual loses the capacity to think and reacts purely on emotional grounds. Unfortunately, mobile addiction causes this Emotional Hijack and leads to impulsive behavior.

How to avoid smart phone addiction in children: Children below 2 yrs of age should not be exposed to

any of the electronic devices (even while feeding). Children between 2 to 12 years of age: One hour of screen time per day (supervised). Learn to say NO. Let the child cry or scream for some time. It will not cause any long term harm. Do not use mobile as a pacifier to stop crying or screaming episodes in children . As parents, we should not try to keep the children entertained all day. Let them learn to deal with boredom. It will actually unlock their own imagination and creativity.

The key to deal with mobile addiction: Acceptance of problem is the first step and an important parameter to deal with addiction often the child as well as parents are in denial mode !

Recommendation for Parents

Establishing open communication: It is important to build trust by allowing a child or teen to express concerns and listening without judgment to their perspectives. Be a good role model - Children rarely listen to us, they have a strong impulse to imitate. So it's important to manage our own smart phone usage. Create "phone free" zones. No smart phone on dining table “Children and adults should eat together whenever possible. Encourage healthier interests (sports, reading) and social activities “*Teenagers should not be given their personal smart phone “Parents phone can be used for exchanging school work and try to take out a print out whenever possible (instead of copying directly from the phone).

Setting clear boundaries : establishing clear guidelines and rules regarding cell phone use or screen time to 1-2 hours per day or keeping phones out of the bedroom.

Ask for help : Teenagers often rebel against their parents, but if they hear the same information from a different authority figure, they may be more inclined to listen.

Try a sports coach, a doctor, a respected family friend. “DO NOT HESITATE TO ASK FOR PROFESSIONAL HELP.

Mobile Addiction is a disease of Sensations, Thoughts, Emotions and Behavior. “Let us come together for minimizing smart phone usage in today's children.

लघु कथा - इंगलिश मीडियम (बघेली बोली में)

एक रोज हम अपने साथ के पढ़इया रमेस्सर के घरे गयेन। संकरी खटखटाएन त एक ठे बीस-एकइस साल के लड़िका निकरा औ पूछिस- क्या काम है? किससे मिलना है?

- दादू ! तँ रमेस्सर भाई के लड़िका आहेऽ न?

- जी अंकल।

- दादू, तोंहार पिता जी हमार मित्र आहीं। हम पंचे एक साथै पढ़त- लिखत रहेन। उनहिन से मिलै क रहा।

- अंकल, पापा तो घर में नहीं है। कहीं चले गये हैं।

- लउटिहीं कब तक म?

- पता नहीं, कब तक लौटेंगे। बताकर नहीं गये हैं।

- दादू अपने पिता जी के मोबाइल नंबर दइ देऽ। हम बाति करि लेऽब।

लड़िका मोबाइल नंबर दिहिस। हम लइ के चलै लागेन, त उआ हमारौ मोबाइल नंबर माँगिस। हम कहेन- लिखि लेऽ चौरान्नये चौसठ ओनहत्तर ओन्यासी ओंचास। लड़िका लिखै के कोसिस त किहिस, पै लिखि नहीं पाइस। उआ कहिस- अंकल, नम्बर जरा इंगलिस में बोल दीजिए। हम अंगरेजी म मोबाइल नम्बर औ आपन नाव बताएन। उआ लिखिस औ बोला- थैंक यू अंकल।

- बेटा, तँ का पढ़तेऽ हएऽ ?

- जी अंकल, मैं बी.एस-सी. सेकेण्ड इयर में हूँ।

हम लउटि चलेन औ सोचै लागेन, बाह रे अँगरेजी सभ्भिता ! न बइठै कहिन, न दुआ सलाम किहिन। अउर त अउर बी.यस-सी. पढ़त है, पे हिन्दी के गिनती नहीं जानें।

कवितायें

बिग्रेडियर शिवपाल सिंह :- विशिष्ट सेवा मेडल (रिटायर्ड) का जन्म 05 मई 1965 सतना जिले के कोठारा गांव के सोमवंशी परिवार में हुआ था। सैनिक स्कूल रीवा से शिक्षा पूर्ति के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकेडिमी (NSA) और इंडियन मिलीटरी अकेडिमी (IMA) से ट्रेनिग पूरी करके ग्रेनेडियर रेजिमेन्ट में कमीशन हुए। 38 साल की प्रशंसकीय सर्विस के बाद सेवानिवृत्त होकर संस्कार धानी जबलपुर में जनमानस की सेवा में समर्पित है।

जिन्दगी - बस जीते चले जाओ

यह है जिन्दगी का सच,
जो चाहा कभी पाया नहीं,
जो पाया कभी सोचा नहीं,
जो सोचा कभी मिला नहीं,
जो मिला रास आया नहीं,
जो खोया वो याद आता नहीं,
पर जो पाया संभाला जाता नहीं,

जिन्दगी जीने के दो तरीके हैं,
पहला जो पसंद है उसे हासिल करना सीख लो,
दूसरा जो हासिल है उसकी कदर करना सी लो,
जिन्दगी जीना आसान नहीं,
बिना संघर्ष कोई महान नहीं,
जब तक न पड़े हथौड़े की चोट,
पत्थर भी भगवान नहीं।

क्यों अजीब सी पहेली है जिन्दगी,
जिसको कोई सुलझा पाता नहीं,
जीवन में कभी समझौता करना पड़े तो,
कोई बात बड़ी नहीं,
क्योंकि झुकता वहीं है, जिसमें जान होती है,
अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है।

चेहरे की हंसी से हर गम चुराओं,
बहुत कुछ बोलो पर कुछ ना छुपाओं,
खुद न रूठो कभी पर सबको मनाओं,
राज है ये जिन्दगी का बस जीते चले जाओ,
यही है जिन्दगी का सच बस जीते चले जाओ।
बस जीते चले जाओ।।

लघु कथा - निबाहे परत है (बघेली बोली)

मुन्नी महीना म एक बेर दुइ बेर मउसी के घरे जरुर जाबा करै। मउसी के बिटिया के साथ दिन भर रहै औ साँझि होय लागै त परोसी राजा अपने मोटर साइकिल से ओही घरे पहुँचाय देंयें। एक बेर मुन्नी, मउसी के घरे गै रहै। लउटै के टाइम जब पहुंचावै के बाति आई, तब पता चला के राजा घरे म नहीं आहीं। मउसी के बिटिया फोन किहिस। ऊँ पन्द्रा मिनट म पहुँचि गें, औ मुन्नी क घरे पहुँचाय आयें।

सालन इहै मेर चलत रहा। मुन्नी मउसी के घरे जाय। राजा अपने मोटर साइकिल से ओही पहुँचामै, पै दूनौ के बीच म कबौ कउनौ मेर के बतकहाँव नहीं भ। राजा, मुन्नी क ओके दुआरे पर उतारै। मुन्नी निहरतिन रहि जाय औ राजा लउटि पर।

मुन्नी के महतारी-बाप राजा क लड़िकई से देखत-जानत रहें। ओके सुभाव, घर-दुआर, परिवार सबके निकहा के पता रहा। एहीं से राजा के साथे मुन्नी के काज करै के फैसला होइ ग।

राजा से काज भये के बाद जउने रोज मुन्नी बिदा भै, ओ रोज हम अपने सिरीमती जी से पूँछेन, के इया और राजा दुनौ एक-दुसरे क चाहत रहें। अब जब राजा के साथे एकर काज होइ ग, राजा के घरे जाय रही है, तब एतना रोय काहे रही है ?

सिरीमती जी हँसतै-हँसत कहिन मोर उछिन्न, तु इया नहीं जनतेऽ के मइके से बिदा होत के हर बिटिया का रोबै क परत है। इया रीति-रिबाज आय, जउने क हर बिटिया क **निबाहे परत है।**

कवितायें (बघेली बोली)

रमेश प्रताप सिंह जाखी :- नागौद, जिला-सतना म.प्र., सम्प्रति - शिक्षा विभाग में कार्यरत, योग्यता - एम.ए. (इतिहास) एवं आयुर्वेद रत्न, डी.एड., समय-समय पर विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन, रेडियो एवं दूरदर्शन में प्रसारण। साहित्य सम्मान - नर्मदा सम्मान।

अब आबा कउन जमाना हो

तबै रहा कइसन मनई, अब आबा कउन जमाना हो।
कुतिया स्वाबै खटिया मां, गइया का सड़क ठिकाना हो।।
कहा न मानैं लड़का बिटिया, अब सयान के बातन का।
झूँठ कहैं अब वेद शास्त्र का, डेगूं कहैं सनातन का।
रहा जउन परदा मां पहिले, होइगा खुल्लम खुल्ला अब।
बरी बिआही बन बन बागै, उढरी का रसगुल्ला अब।
नहिं ख्यालय अब देबर फगुआ, अपने सग भउजाई से
खान पियन सब टूट है, सग भाई का अपने भाई से।।
होय समय जब संध्या का, तब मुन्नी वाला गाना हो।
घर से बहिन के गा बलिहारी, घरै पहुँच गा सारी के।
धरे बइठ रहिगै वा राखी, पहुँचा नहीं बिचारी के।।
लइगा जउन पठउनी घरसे, भरि आबा सब हउली माँ।
घर के पूँछिन कहाँ हये त, कहिस हयन सिंगरउली माँ।।
रात के एक दिन आबा पीके, जिव भर मारिस दाई का।
हम जानेंन जब नाती आबा, हमरे लघे दबाई का।।
दुई करोड़ का डेरा ज्याखर, नहिं पाबै दुई आना हो।
उनखर लड़िका पढ़ैगा दिल्ली, बन गा होंन घरवाला वा।
डिगरी लये पहुँचगा एकदिन, डारे गर मां माला वा।
राजश्री पगुराय भँइस कस, हींग न ध्वारय पानी मां।
हर चुनाव मां सबसे पहिले, खड़ा होय परधानी मां।
घर का काम करै सब बाबू, बसै रात के अहरी मां।
ड़ेढ शाल पहिरै मिरजांई, चढ़ा कबहूँ लहरी मां।
आधा गाँव कचेहरी माँही, आधा पहुँचै थाना हो।
भ्याजत रहा न पहिले कोऊ, बृद्धाश्रम महतारी का।
कर देय खुद का गहन भले, पै पइ सा देय उधारी का।।
एक बोट से हार गे सत्ता, श्रद्धेय अटल बिहारी जी।
दये न पाइन रहा किराया, क्वाटर का गुलजारी जी।।
लिहिन रहाअम्बेसडर शास्त्री, चुकै न पाइन करजा उँय।
पटना से कर्पुरी घरै गे, बनगे फेर से परजा उँय।।
अब कुबेर कस सरपंच के, घर मां भरा खजाना हो।।4
तबै रहा कइसन मनई, अब आबा कउन जमाना हो।।

चला चली ध्वज वंदन का

पवरित दिन पन्दरा अगस्त का, चला चली ध्वज बंदन का।
मरगे अपने देस का जे, उनके स्वागत अभिनन्दन का।।
एक सौ नब्बे साल देश मां, अंगरेजन कय राज रही।
रहे गुलाम देस बासी, उनखर बुलंद आवाज रही।।
खोलबाइन व्यापार का पहिले, भारत का दरवाजा उँय।
आपुस मां लड़वाय के सबका, नगे हैंन के राजा उँय ।।
सौ मां सत्तर जने देस मां, तरसत रहे वियारी का।
बनत रही पूड़ी तरकारी, फगुआ दिया देबारी का।।
नागफनी रोपित भारत मां, बिरबा काटिन चंदन का। 1।
संतामन मां रण भा, नाना साहब के अगुआई मां।
मंगल तात्या कुमर धीर, रण लइगए बहुत ऊँचाई मां।
अंगरेजन से भीषण रण भा, झांसी वाली रानी का।
श्यामशाह सिंह टंट्या मामा, रणमत सिंह बलिदानी का। दुर्गावती
अवंती झलकारी जीवन बलिदान किहिन।
जफर तीन ठे लड़िका, भारत माता का कुरबान किहिन ।।
वहे आँख से आँसू सबके, सुन वा करुणा क्रंदन का। 2।
एक सौ पइसठ जन का, लहू बहा पिंडरा के भुइंया मां।
हल्ला होय रात के अबहूँ, जलियां वाले कुइयाँ मां।।
राजगुरू सुखदेव भगतसिंह, चूमिन फंदा फाँसी का।
मंत्र दिहिन आजादी का, गांधी हर भारत बासी का।।
असफाकउल्ला बिस्मिल, चंद्रशेखर गोरन का झुके नहीं।
आवत देखिन गोली का, पै लाल पद्मधर लुके नहीं।
अंत भा रावण के शासन का, बिजय मिली रघुनन्दन का। 3।

फौजी की प्रियतमा

बसंत पंचमी का था त्योहार।
सूनी पड़ी डगर अपार ।।
प्रियतमा करती जिसका इंतजार।
चाहती करना उसका दीदार ।।
बह भी है मिलने को बेकरार।
खड़ा है सरहद पर बनके सरदार।।
प्रिया ने लिखी अपनी जुबानी।
खत में अश्रुओं की निशानी।।
भाव विभोर कर गई वो दीवानी।
यही है हर सैनिक की कहानी।।
शरद पूर्णिमा की रात आई।
जो एक शुभ संदेश लाई ।।
खबर आने की सबको सुनाई।
खत्म होनी थी जिसकी जुदाई ।।
श्रृंगार करने मन ललचाया।
नयनों में काजल रचाया।।
शशि शोभित हुआ मस्तक पर।
छाई गुलाबी छटा अधर पर।।
सिंदूरी माग निखरे कपाल पर।
हावी हुआ यौवन उस पर।।
बैचेनी उसकी बढ़ती गई।
इंतजार की घड़ी घटती गई।।
दरवाजे पर एक दस्तक हुई।
शरमा के सकुचाके वो भागी गई।।
वर्दी धारियों को देख हैरान हुई।
प्रीतम को न पाकर परेशान हुई ।।
जिनके हाथों में थी सुहाग की निशानी।
बंया की जिसने दुख भरी कहानी।।
किस्मत को कुछ और था मंजूर।
मिटाया उसके मांग का सिंदूर ।।
खत्म कर दिया उसका गुरूर।
ख्वाब हुए सारे चूर चूर ।।
आखों में थी अश्रुओं की नदिया।
पोंछ रही थी उसकी सखियाँ ।।
अनभिज्ञ था उसका दुलारा।
उसको जिसने खूब संवारा ।।
माँ की थी बस एक कामना।
प्रभु से नहीं काई और प्रार्थना ।।
फौजी बनके हो बेटे से सामना।
वात्सल्य को पड़ा त्यागना।।
काल चक्र चलता गया।
हौसलों से आगे बढ़ता गया।।
कर्ज चुकाने मातृभूमि का।
मां की चाह साकार कर गया।।
वो माँ भी क्या कम थी बलिदानी।
हर जन जो वीरांगना को जानी।।
मेरा वंदन तेरे चरणों में अर्पित।
जग जानेगा तू कितनी समर्पित ।।

लघु कथा - बस चुपारेन रहेऽ

बड़कवा लड़िका से तिलकहा सब सामान भेजवाय के राजेस्वरी कहिन-तहसीलदार साहेब से हमार विनती कहि दिहेऽ, के तिलक चढ़वाबत रहिहीं। कुछ रूपिया धटत लागि है, त ओही के बेबस्था कइ के हम आय रहेन है। बड़कवा लड़िका तहसीलदार साहेब क अपने पिता जी के विनती सुनाइस, त तहसीलदार साहेब पंडित-नाऊ क बोलबाय के तिलक चढ़बाबै लागे।

तिलक समाप्तै होय बाला रहा, तबहिनै राजेस्वरी पहुँचि गें। कुरता के खीसा से रुपिया के बंद पैकेट निकारिन औ तहसीलदार साहेब क ठेंघावै लागें, त ऊँ कहिन-उहै टठिया म धरि देऽ। राजेस्वरी, रुपिया गिनिन है। रुपिया सहित टठिया भितरे भेजि दिहिन औ गोहराइन, के रुपिया आलमारी म धइ दिहेऽ।

आलमारी म रुपिया के बंद पैकेट धरि त दिहिन, पै तहसीलदार साहेब के मलकिन से रहाई न परै। कुछ देर बाद उँ रुपिया के वंद पैकेट निकारिन, जौ खोलि के टठिया म उलिद दिहिन। एक-एक रुपिया के गेरह ठे सिक्का खनखनाय के टठिया म गिरें औ मोट बाला पड़पड़ात चउपरता सफेद कागज उलदरि ग। तहसीलदार साहब के मलकिन दिखिन, एकदम सुखाय गईं। हरबिन तहसीलदार साहब क बोलाय के देखाइन, त उनहूँ के जिउ झक्क होइ ग।

तहसीलदार साहब तुरन्तै टठिया उठाइन औ लइ जायके राजेस्वरी के सउँदै पटकि दिहिन, औ जोर से चिल्लाय के कहिन - राजेस्वरी, इहै आय ईक्यामन हजार रुपिया, जउन तँ दिहेऽ है ?

राजेस्वरी कहिन - हजूर! रुपिया त अपना गोहराय के आलमारी म धराय दिहेन है। इया त चउपरता कागज के गड्डी आय। तहसीलदार साहेब पुनि के जोर से चिल्लानें- राजेस्वरी ! बस चुपारेन रहेऽ।

वृतांत नाटक 'आनन्द रघुनन्दन'

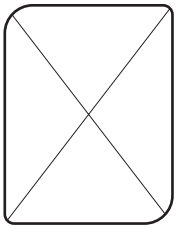

लेखक परिचय- रविरंजन सिंह परिहार, जन्म 5 अप्रैल 1935, ग्राम –रायपुर कर्चुलियान, जिला–रीवा (म.प्र.) शिक्षा – कृषि पत्रोपाधि। प्रकाशन(बघेली साहित्य)– 'रीवा तब अउर अब' (बघेली का प्रथम उपन्यास), 'सूरजगढ़ के बब्बा' (रिपोतार्ज, व्यंग और कहानी संग्रह), 'नैकहाइ जुज्झि' और 'अजस मोचन' (दोनों बघेली नाटक), 'किहनी, कहनूति उखान कोष' (प्रविष्ठियाँ किहिनी- 544, कहनूति–2966, उखान–2175) 'मेर मेर केर यात्रा' (यात्रा वृतांत आधारित आत्मकथा तथा संस्मरण)' बघेली लोक कथायें (यंत्रस्थ) बघेली शब्द कोष (निर्माणाधीन।) प्रकाशन (हिन्दी साहित्य)– 'परिहार इतिहास एवं रायपुर के परिहार', 'हंस की उड़ान' तथा 'तब और अब रीवा'। सम्मान – 'विन्ध्य शिखर सम्मान' तथा 'आदित्य अक्षर सम्मान। सम्प्रति- कृषि विभाग म.प्र. से सेवा निवृत्त, साहित्य रचना में संलग्न।

महाराजा विश्वनाथ सिंह रचित 'आनन्द रधुनन्दन' को आधुनिक हिन्दी नाट्य साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु ने, हिन्दी का प्रथम नाटक कहा। आचार्य शुक्ल का कथन है- 'ब्रजभाषा में नाटक इन्ही ने पहिले–पहल लिखा। इसी दृष्टि से इनका 'आनन्द रघुनन्दन' विशेष महत्व की वस्तु है।' बाबू गुलाबराय तथा बाबू ब्रजरत्नदास का भी मत है कि आनन्द रघुनन्दन ही हिन्दी का सर्व प्रथम नाटक है। वहीं कुँवर सूर्यबली सिंह का वक्तव्य है- 'यदि काल के अन्तिम भाग में यह नाटक न लिखा गया होता तो हिन्दी मध्यकाल रसात्मक अभिव्यक्त की एक सशक्ति सारिणी श्रव्य काव्य से वंचित रह जाता। उसकी सम्पन्नता बधित हो जाती।'

नाटक आनन्द रघुनन्दन का मुद्रण, प्रकाशन तथा मंचन

नाटक 'आनन्द रधुनन्दन' का मुद्रण तथा प्रकाशन पहली बार सदी उन्नीसवीं के इकहत्तरवें वर्ष में लायड प्रेस काशी से हुआ। किन्तु छपी प्रतियाँ बँट गयीं राजसंबधियों तथा राजदरबारियों मध्य। बात वही जंगल में मोर नाचा किस ने देखा? साहित्य अनुरागी रह गए मुँह ताकते। दूसरी बार 89 वर्षों बाद, बीसवीं सदी में सम्पादित कृति का मुद्रण और प्रकाशन हुआ सन 1960 में। संपादक- मंडल श्री दीपचन्द्र जैन, श्री शंकर शेष एवं श्री कृष्णकान्त पाण्डेय। मुद्रक–बल्देवप्रसाद अवस्थी, मार्तण्ड प्रेस रीवा और प्रकाशक 'विन्ध्य प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन रीवा'। जिसके लिए विशेष साधुवाद के पात्र 'सम्मेलन' के प्रधानमंत्री पं. राममित्र चतुर्वेदी जी ने, 240 साहित्य प्रेमी नागरिकों से रुपया 10–10 दान प्राप्त कर, 2000 प्रतियों का मुद्रण कराया।

यह थी सदी इक्कीसवीं, जब नाटक आनन्द रघुनन्दन के मंचन का सिलसिला भी शुरू हुआ। प्रथम प्रदर्शन सम्पन्न हुआ 'भारत भवन' भोपाल में, 4 नवंवर 2015 को। दूसरा प्रदर्शन, वहाँ हुआ जहाँ दो सदियों पूर्व इस नाटक की रचना हुई रही। तारीख थी 30 नवंबर 2015, स्थल रहा, किला रीवा परिसर, उस पंचमंदिर के सामने वाले मैदान में, जिसका निर्माण आनन्द रघुनन्दनकार इन्हीं महाराजा विश्वनाथ सिंह ने कराया रहा।

मंचित नाटक के निर्देशक थे संजय उपाध्याय और कलाकार मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के छात्र गण। किला रीवा परिसर में मंचित नाटक के सम्पूर्ण आयोजिनों की सफलता संभव हो सकी स्थानीय संस्था 'मण्डप संस्कृतिक शिक्षा कला केन्द्र' तथा 'आर्ट प्वाइन्ट' रीवा के सहयोग से।

बता दूँ, मंचन योग्य मूल नाटक का बघेली रूपांतरण किया है, नाटककार योगेश त्रिपाठी रीवा ने। मंचन का सिलसिला चालू है। अब तक सीधी, उज्जैन, जबलपुर, चित्रकूट, पटना और दिल्ली में प्रदर्शन हो चुके है। नाटक 'आनन्द रघुनंदनं' भारत रंग महोत्सव दिनांक 10 फरवरी 2017 को प्रतिष्ठित 'कमानी सभागार' में प्रदर्शित हुआ जहाँ अभिभूत दर्शकों ने ताली पीट पीट कर प्रदर्शित नाटक 'आनन्द रधुनन्दन' की तारीफ की।

मूल नाटक आनन्द रघुनन्दन का रचना काल

'विन्ध्य प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन' वाली 'आनन्द रधुनंन्दन' पुस्तक की भूमिका के पृष्ठ पाँच की इबारत है- 'न तो उसके रचनाकाल का उल्लेख. पाण्डुलिपि में हैं और न अन्यत्र ही कहीं उसका उल्लेख हो पाया है। किसी प्रमाण के अभाव में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि 'आनन्द रघुनंदन' नाटक की रचना संवत 1800 से लेकर 1911 के मध्य कभी हुई होगी।' अभी हाल में ही एक प्रतिलिपिकार की हस्त लिखित 'आनन्द रधुनन्दन' की प्रति प्राप्त हुई, जिसमें अंतिम इबारत है- '**इतिश्री महाराज कुमार**

श्री बाबू साहब बिसुनाथ सिंह जू देव कृत आनन्द रघुनन्दन सम्पूर्णा समाप्त शुभमस्तु श्रीराम सुदि सुक्र को संवत 1888 ते मुकाम बिजौरी बैठे लिख्यौ।' इससे प्रमाणित होता है कि 'आनंद रधुनंदन' की रचना, रचनाकार के 'बाबू साहब' काल में हुई। ज्ञयातब्य है आनन्द रधुनन्दनकार विश्वनाथ सिंह का जन्म वैसाख शुक्ल 14 संवत 1846 (सन 1789) को हुआ। जिनका 'बाबू साहब' काल समाप्त हुआ सन 1833 में, शासनाधिकार प्राप्त कर 'महाराजा' पद प्राप्त करने पर। उक्त काल में रीमाँ राज्य में 'बाबू साहब' पद मंजूर रहा है युवराज को । जिसे इन्ही महाराजा ने शासनाधिकार प्राप्त कर बदल दिया रहा 'महाराज कुमार' (एम.के.) नाम पद में।

नाटक की कथा वस्तु

नाटक की कथा का मुख्याधार तुलसीकृत रामचरित मानस ही प्रतीत होता है। राम नाटक के नायक और हैं प्राणतत्व, अत: इन्ही के नाम पर इस नाटक का नामकरण किया गया है। नाटक में महाकाव्य के विस्तृत कथानक के सात अंको और 153 पृष्ठों के आकार में नाटकीय ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। घटनाओं की संख्या भी वही है जो रामचरित मानस में है।

नाटक के पात्र

नाटक में प्रधान पुरुष पात्रों की संख्या 32 और, नारी पात्रों की 08 है। जिनके नाम है पर्यायवाची। इनके अलावा 20 हैं अधम पात्र, विदूसक, सूत्राधार परिपार्शवक आदि ।

कतिपय प्रमुख पात्रों के नाम

हितकारी (राम), डीलधराधर (लक्षमण), डिंभीधर (श्त्रुघ्न) दिगजन (दशरथ), दिकशिर (रावण), त्रेतामल्ल (हनुमान) रिक्षपति (जामवंत) महिजा (सीता) कुशला (कौशिल्या) काश्मीरी (कैकेयी) और कुटिला (मंथरा)।

अंक प्रबंध तथा पात्र चरित्र

आनन्द रधुनन्दन में सात अंक हैं। इन सात अंकों में प्रथम छ: की घटनाओं के क्रम का प्रमुख अधार रामचरित मानस है। सातवें अंक के स्वरूप में अवश्य परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

पुरुष पात्रों के चरित्र-चित्रण में, आनन्द रघुनन्दनकार ने जितने विस्तार और सूक्षमता का परिचय दिया है उतना स्त्री पात्रों के चरित-चित्रण में नहीं। उदात्त स्त्री पात्रों में राम और उनके बन्धुओं की मातायें, महिजा (सीता), अनसूया (अनीर्श्या), शवरी (तपस्विनी) आदि और अधम कोटि के स्त्री पात्रों में मंथरा (कुटिला), ताड़का (घातिनी), शूर्पणखा (दीर्धनखी) आदि हैं। कौशल्या और सुमित्रा का नाटक में उल्लेख मात्र है, कैकेयी के चरित्र को भी एक ही दृश्य में स्थान मिलता है। उसका चरित्र अपनी पूर्णता में पाठकों के समक्ष नहीं किया जा सका। वह एक स्वार्थी स्त्री के रूप में ही हमारे सामने आती हैं। आनन्द रघुनन्दनकार ने उसके चरित्र को न्याय संगत सिद्ध करने का प्रयत्न नहीं किया। अनीर्श्या (अनसूया) और तपस्विनी (शबरी) भी अपने भक्ति-भाव की झलक दिखा कर चली जाती है।

हितकारी (राम)- धीरोदत्त नायक हैं। वे पुराण प्रसिद्ध रघुवंश के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। इतना ही नहीं उनमें ईश्वरत्व का भी अंश है। वे लौकिक और अलौकिक की संधि-रेखा पर खड़े है। राम गुणों की खान हैं, अत: उनमें उन सब गुणों की प्रतिष्ठा हुई है जो किसी भी श्रेष्ठ नायक में शास्त्रीय दृष्टि से आवश्यक है। राम की भूमिका इस नाटक में परम शौर्यवान है। राम के क्षात्र-तेज का परिचय आरंभ से ही मिलने लगता है। ताड़का (घातिनी) का बध करने के बाद भी राम में गर्व नहीं है।

राजा जनक (शीलकेतु) के यहाँ भी राम सर्वत्र संयत है; वे धीर, वीर और गंभीर है। राम में विनयशीलता, गुरु-भक्ति और आत्मगौरव का भाव है। परशुराम (रेणुकेत) के समक्ष राम (हितकारी) अपनी विनयशीलता के कारण झुकते ही चले जाते है। लक्षमण (डीलधराधर क्रोध में आपे से बाहर हो जाते हैं, शत्रुघ्न (डिंभीधर) भी अपना संतुलन खो बैठते हैं, किन्तु राम (हितकारी) की विनयशीलता अडिग है। राम (हितकारी) की विनयशीलता में मर्यादा की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न है, उनके हृदय में परशुराम (रेणुकेत) के प्रति आदर है परंतु उस परशुराम (रेणुकेत) के प्रति नहीं जो मर्यादा की सीमा का उल्लघन कर अपने गुरुत्व का महत्व कम करते हैं।

राम अवतारी तो हैं, पर नाटक के कुछ प्रसंगों को छोड़ दें तो शेष संपूर्ण नाटक में उनके व्यवहारों और प्रयत्नों की प्रतिष्ठा विशुद्ध मानवीय धरातल पर हुई है। राम स्वयं अपने शब्दों में कहीं भी अपने ईश्वरत्व का आभाष नहीं देते।

महिजा-(सीता) का चरित्र आनंद रघुनंदन में विस्तार नहीं पा सका है। नाटक में राम के व्यक्तित्व और उनके जीवन-संघर्ष की प्रधानता के कारण सीता का व्यक्तित्व बहुत कुछ अप्रस्फुटित ही रह गया है। सीता नाटक के संघर्ष की सबसे बड़ी प्रेरणा हैं किन्तु वह

निमित्त रूप में ही विशेष आयी है। उसके व्यक्तित्व के अंतर–वाह्य स्वरूप का अत्यंत अल्प परिचय नाटक में प्राप्त होता है।

डीलधराधर (लक्ष्मण)– नाटक आनंद रघुनंदन में तुलसीकृत रामचरित मानस व्यक्तित्व वाले रामानुज लक्ष्मण ही दिखाई देते हैं। वे अपने अग्रज राम के साथ सदैव छाया की भाँति अनुगमन करते हैं। आनन्द रघुनन्दन नाटक में राम का व्यक्तित्व यदि समग्रता का सूचक है, तो लक्ष्मण उसके अनिवार्य अंग है। राम के नित्य सहचर, प्राण–प्रिय बंधु और सजग प्रहरी होने के बाद भी आनन्द रघुनन्दनकार ने यत्र तत्र लक्ष्मण के व्यक्तित्व को अपने व्यक्ति वैशिष्ट्य का परिचय देने के लिए स्थान दिया है।

राम की निरंतर सेवा और आदर ही मानों लक्ष्मण का जीवन–व्रत है। राम की अनुपस्थित में सीता की रक्षा का भार भी उन्ही का है। आनन्द रघुनन्दन में लक्ष्मण के व्यक्तित्व की खासियत यह है कि वह अन्य पात्रों से अधिक मुखर हैं।

डहडह जगकारी – (भरत) का चरित्र परंपरित आदर्शों के अनुरूप है। नाटक में भरत के दर्शन मात्र तीन प्रसंगों में होते हैं– पहला वे ननिहाल से लौट कर मंथरा (कुटिला) और कैकेयी (काश्मीरी) को ताड़ना देने का है, दूसरा चित्रकूट में राम से मिलने का और तीसरे में हनुमान (त्रेतामल्ल) द्वारा ही भरत का उल्लेख होता है। भरत इन तीनों प्रसंगों में भी अत्यंत संक्षेप में ही आए हैं। भरत का व्यक्तित्व किसी भी दोषारोपण से परे हैं।

दिकशिर– (रावण) आनंद रघुनंदन नाटक का प्रतिनायक हैं। मानस का हठी और अभिमानी रावण आनन्द रघुनन्दन में एक नीति कुशल राजा के रूप में आता है। वह प्रत्येक कार्य के लिए मंत्रियों से परामर्श करता है और अंत में कार्य–सिद्ध के लिए साम, दाम, दंड, भेद सभी का प्रयोग करता है। आनन्द रघुनन्दन का रावण एक श्रेष्ठ येाद्धा है और साथ ही है एक कुशल सेनापति भी। आनन्द रघुनन्दन में भी रावण के दुर्गुणों के रूप वही हैं जो रामचरित मानस में है।

अन्य पात्रों में सुगल (सुग्रीव) और त्रेतामल्ल (हनुमान) को छोड़ दें तो शेष पात्र उल्लेख मात्र के लिए हैं।

रस योजना–

नाटक आनंद रघुनंदन का मुख्य रस 'वीर' है, अन्य रस उसके सहायक हैं। साथ ही अद्भुत, रौद्र और भयानक आदि रस भी अपने अपने स्थान पर अत्यन्त समृद्ध रूप में अवतरित हुए हैं। श्रृंगार की योजना अपेक्षाकृत कम हुई है, किन्तु जहाँ भी उसकी झलक है अपने अल्प विस्तार में भी वह पूर्ण प्रभावशाली है। संक्षेप में आनन्द रघुनन्दन हिन्दी का प्रारंभिक नाटक होते हुए भी रस योजना की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है।

कथोपकथन–

कथोपकथन नाटक का प्रधान तत्व है। कथोपकथन का नाटक में जो महत्व है वह साहित्य की किसी भी अन्य गद्यात्मक अथवा पद्यात्मक विधा में नहीं है। यद्यपि आनंद रघुनंदन भी आद्योपांत गद्य नाटक नहीं है और उसमें पद्यों की संख्या भी कम नहीं है फिर भी जहाँ नाटक में गद्य के व्यापक प्रयोग का प्रश्न है हिन्दी के प्रथम नाटक के रूप में उसका ऐतिहासिक महत्व सुरक्षित है। फिर भी ब्रज भाषा गद्य और पद्य दोनों का अत्यन्त प्रांजल स्वरूप उसमें बराबर मिलता है।

भाषा–

आनंद रघुनंदन की भाषा ब्रजभाषा है। नाटक के सार्वजनिक एवं लोकधर्मी स्वरूप की रक्षा के प्रयत्न में नाटककार ने विभिन्न प्रदेशों के व्यक्तियों से उनके अपने प्रदेश की भाषा का ही व्यवहार कराया है। आनंद रघुनंदन में मिथिला वासी–मैथिल, महाराष्ट्रियन – मराठी और कर्नाटक का व्यक्ति कन्नड़ का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण जन प्राकृतिक पाली अवधी, बघेली का प्रयोग करते हैं। अपभ्रंष के प्रयोग के भी इक्के दुक्के उदाहरण मिल जाते हैं। विदेशी पात्र भी अपनी ही भाषा बोलते हैं। अरब देश का अरबी बोलता है और गुरुंड देश का नर्तक यदि पूरी तरह अंग्रेजी का प्रयोग नहीं करता तो ऐंग्लोब्रज का प्रयोग अवश्य ही करता है। उदाहरण के लिए–

ए किंग हितकारी, माई डियर व्हेरी!

लिबेरल एण्ड ब्रेव्ह बिष–ट्री, गुड स्प्रेड माई सिन टाप लार्ड।

गुड आल टैम बिसुनाथ आफ गाड।

नाटक के उपर्युक्त भाषा–वैविध्य को देखते हुए लेखक की विभिन्न भाषा–ज्ञान संबंधी असाधारणता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

वास्तव में दो विरोधी शक्तियों के संघर्ष का चित्रण कर अंत में कल्याणकारी शक्ति की विजय दिखाना ही इस नाटक की मूल भावना है।

सम्पर्क– 17/411 'रविकर' नरेन्द्र नगर, रीवा म.प्र.,

मोबाइल– 08085533483, 08120093962

कवितायें

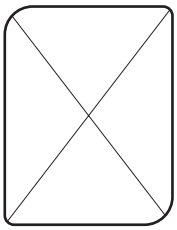

एअर कमाडोर व्ही के तिवारी –

छब्बीस जनवरी

यह राष्ट्रीय पर्व महान है छब्बीस जनवरी,
एक आन–बान, शान है छब्बीस जनवरी।
जनतंत्र की जड़े यहां मजबूत है कितनी,
इस बात का प्रमाण है छब्बीस जनवरी।।

आजादी हमने पाई थी पन्द्रह अगस्त को,
लेकिन वह अधूरी थी बिना संविधान के
नेहरू, पटेल, भीमराव, किदवई, आजाद,
उस समिति का सम्मान है छब्बीस जनवरी।

दुनिया के लोकतंत्रों का निचोड़ है इसमें,
भारत की हर समस्या का तोड़ है इसमें।
भारत की राष्ट्र पुरुषों ने देखे थे जो सपने,
उन सपनों का प्रतिमान है छब्बीस जनवरी।

इतिहास बदलना नहीं है बस में किसी के,
इतिहास से हम सीखें, न दोहराएं गलतियां।
अभिमान है अतीत का सपना भविष्य का,
संकल्प वर्तमान है, छब्बीस जनवरी।

विज्ञान की, तकनीक की कौशल–विकास की,
भारत की युवा शक्ति के प्रण और विश्वास की,
अनुशासित सैन्य–बलों की संहार–शक्ति की,
क्षमता का कीर्तिमान है छब्बीस जनवरी।

हर प्रांत के पहनावे, रिवाजों का के दर्शन,
गृह शिल्प और लोक कलाओं का प्रदर्शन।
हर झांकी में दिखती है विविधता में एकता,
इस संस्कृति की पहचान है छब्बीस जनवरी।

संदेष मित्रता का है यह मित्रों के लिए,
चेतावनी आतंक के आकाओं को भी है।
यह एक मिसाल धार्मिक सहिष्णुता की है,
विश्व–शांति का आहान है छब्बीस जनवरी।

मंदिर हो या मस्जिद हो, गुरुद्वारा या गिरजा,
हर दर यहां सबके लिये सजदे का सबब है।
अरदास है, पूजा है, मास है ये हमारा,
हर सुबह की अजान है, छब्बीस जनवरी।

यह श्लोक है गीता का शबद गुरु ग्रंथ का,
और एक वर्स है पवित्र बाइबिल का भी।
धागे में मुहब्बत के पिरोता है जो हमको,
वो आयते कुरान है छब्बीस जनवरी।

साहस का बिगुल, वृंदगान देश प्रेम का,
संकल्प फिर जगाने का बीता हुआ गौरव।
जय घोष है यह एक सौ चालीस करोड़ का,
राष्ट्रीय स्वाभिमान है छब्बीस जनवरी।

आजादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्र के इतिहास में एक मील का पत्थर,
हो गए स्वाधीनता के वर्ष पचहत्तर।
आज साधारण नहीं, अमृत महोत्सव है,
आओ लहराएं तिरंगा आज हम घर-घर।

आत्मचिन्तन, आत्म-मंथन, आत्म-अवलोकन
आत्म अनुसंधान का भी है ये एक अवसर।
हम कहां से चले थे और कहाँ जाना है,
सोचना है आज हमको पहले से बढ़कर।

धर्मान्धिता, आतंक के विकरालकुछ विषधर
ताक में बैठे, मिले कैसे कोई अवसर।
प्रण करें हम आज इनके फन कुचलने का,
अन्यथा पहिया प्रगति का रूकेगा अड़कर।

धर्म तो समवेदना है, भाईचारा है,
धार्मिक उन्माद केवल हम, हमारा है।
शांति और सद्भावना है मंत्र उन्नति का,
साथ मिलकर हम बनाएं देश ताकतवर।

राष्ट्र को सक्षम, सबल, सम्पन्न करना है,
आत्म निर्भरता अब हमारा राष्ट्रीय सपना है।
वैश्विक सद्भाव, सह अस्तित्व आवश्यक,
राष्ट्र हित सर्वोच्च, सर्वोपरि, सदा ऊपर।

राष्ट्रध्वज सम्मान है हर चीज से बढ़कर,
भूल से भी हम न समझौता करे उस पर
गर्व से उत्सव मनाएं हम आजादी का
आओ लहराएं तिरंगा आज हम घर-घर।

इतिहास के झरोखे से गढ़ कुण्डार

आर. बी. सिंह. - बहुमुखी प्रतिमा के धनी श्री आर. बी. सिंह ने प्राणी शास्त्र मैं स्नातकोत्तर उपाधि के साथ आई.सी.ए.आर. अंतर्गत मुंबई तथा हैदराबाद के केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थानों से स्नातकोत्तर डिप्लोमा उपाधियों के साथ, विधि स्नातक तथा योग में डिप्लोमा किया है। मत्स्य विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ आर्कीटेक्चर में भी गहरी रूचि है वर्ष 2016 में संयुक्त संचालक मत्स्योद्योग, जबलपुर पद से सेवा निवृत्ति उपरांत वे कृषि कार्य में संलग्न है। उनकी जन्म तथा कर्म स्थली बुन्देलखण्ड रही है बुन्देलखण्ड के साहित्य में उनकी गहन रूचि है, पूर्व विन्ध्यिका मैं उनकी रचना ''बुन्देलखण्ड का महाभारत'' पठनीय है, तथा प्रस्तुत आलेख उनकी इसी रूचि का परिचायक है।

मध्यप्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र छोटी-छोटी पहाडियों पर स्थित चन्देल कालीन किलों, तालाबों तथा मन्दिरों के लिए जग प्रसिद्ध है, यहां की प्राकृतिक भू-संरचना का उपयोग कर जल सरक्षण तथा इनके समीप बनवाये गये तालाब तत्कालीन इंजीनियरिंग कौशल का सुन्दर उदाहरण है तथा इनके समीप बनवाये गये अनेको गढ़, किले की सुरक्षा तथा सामाजिक दृष्टि से अत्यत महत्वपूर्ण है। वर्तमान निवाडी जिला मुख्यालय से लगभग पचास किलो मीटर की दूरी एवं झांसी खजुराहों राजमार्ग से अठारह किलो मीटर की दूरी पर कुडार ग्राम में स्थित गढ कुण्डार का रहस्यमयी किला पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्पूर्ण है। यह छोटी-छोटी पहाड़ियों के मध्य स्थित होने से 5 किलोमीटर दूर से दिखाई देता है परंतु समीप जाते ही गायब हो जाता है। किले के सामने दो पहाड़ियों के मिलन स्थल के मध्य निर्मित सिंदूर सागर तालाब अत्यंत रमणीय है, जो दो पहाड़ियों के जोड़ पर पत्थर मिट्टी का बधान बनाकर निर्मित किया गया है। तालाब की ओर का पक्का बधान चार मंजिला दलान के रूप में निर्मित है. तालाब का जल स्तर बढ़ने पर क्रमश: एक एक मजिल डूबती चली जाती है, मध्य की दलान में शिवलिंग विराजमान है और आप सीढ़ियों से उतरकर पानी के समीप पहुंच जाते हैं। भीषण गर्मी में तालाब की ओर से आने वाली शीतल वायु सम्पूर्ण क्षेत्र को शीतलता प्रदान करती है, तथा वातावरण को अत्यत मनोहारी बनाती है। तालाब की दूसरे छोर की पहाड़ी पर गिद्ध वाहनी देवी अथवा गजानन माता का मंदिर है, जिसे स्थानीय जन देवी माँ के नैनों में अश्रुबिन्दु बनने के कारण अश्रुमाता का मदिर भी कहते हैं। बंधान के ऊपर तक पक्की सड़क निर्मित है, जिसके नीचे से नहर निकली है। कुंडार का नामकरण कुंड + अर्क से हुआ है, कुण्ड का आशय तालाब तथा अर्क का आशय सूर्य है, ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति इस कुण्ड मे स्नान करता है वह चर्म रोगों से मुक्त हो जाता है।

आइये अब पुरात्वय विभाग द्वारा सरक्षित गढ़कुंडार के रहस्यमयी किले की ओर चलते है। जो पहाड़ों के मध्य चौकोर आकार में ऐसी ऊंचाई पर स्थित है, जिसे तत्कालीन समय पर तोप के गोलों से भी नहीं तोड़ा जा सकता था। किला लगभग 1500 से 2000 वर्ष पुराना है. जो वर्तमान में 5 मंजिला है. जिसमें तीन मंजिलें ऊपर तथा दो मंजिले पहाड़ी के अन्दर तलघर में स्थित है। जनश्रुति अनुसार तलघर के अन्दर दो मंजिले और भी हैं, जिसमें सुरंग द्वारा निकास हेतु मार्ग बने हैं परंतु वर्तमान में यह सम्पूर्ण भाग जमींदोज हो गया है। किंवदन्ती है कि किले की लावारिस अवस्था में कुछ समय यहां कुख्यात बौना चोर रहता था। जिसने बावन गढ़ों को लूटकर अपना खजाना यहां छुपाकर रखा था। इसी कारण लावारिस दशा में कई खजाना खोजी इसके तलघर की खुदाई का प्रयास कर चुके हैं। लोककथा है कि एक बार कोई बारात किला देखने के लिए तलघर की अंधेरी भूल भुलैया में नीचे उतरती चली गई और वहीं फंस कर गुम हो गई। वर्तमान में तलघर की ओर जाने वाले सभी मार्ग बंद कर दिये गये है।

किले की ऊपरी मंजिलों को देखने पर किले की सम्पूर्ण व्यवस्था का अनुमान किया जा सकता है। सबसे ऊपरी मंजिल जो शायद राजा का निवास तथा रनिवास रहा होगा में चारो ओर बड़े कक्ष तथा बीच की चौगान में रंगमंच बना है। किनारों पर स्थित बुर्ज का गोलाकार भाग प्रशाधन हेतु उपयोग होता था, जिसमें मध्य में स्नानागार और उसके चारों ओर पत्थर काट कर शौचालय बनाये गये है. जिससे मलमूत्र का निपटान सीधे किले के बाहर हो जाता था। सम्पूर्ण किला तत्कालीन भवन निर्माण कला का सुंदर उदाहरण है, जिसमें

किले के बाजू में परकोटे के अन्दर एक बावड़ी निर्मित है, जो एक सुरंग मार्ग से किले के अंदर से जुड़ी हुई है। वर्तमान में किले के भग्नावशेषों में सम्पूर्ण ज्ञात-अज्ञात इतिहास समाहित है।

आइये अब गढ़ कुण्डार के राजनैतिक इतिहास को जानते हैं। आठवी शातब्दी में चेदी साम्राज्य अंतर्गत चदेलों का उदय मनियागढ तथा खुजराहों के निकट हुआ। चन्देल काल में वर्तमान बुन्देलखण्ड जुझोती प्रदेश कहलाता था, जहां चन्देल राजाओं का श्री गौरव अपने चरम पर था। चन्देल काल में ही सम्पूर्ण जुझोती प्रदेश में अनेको किले, तालाब, मंदिर बनवाकर एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली स्थापित की गई, हम आज भी खजुराहों जैसे विश्व प्रसिद्ध मंदिर तथा किले देखते हैं। सम्पूर्ण बुन्देखण्ड में लगभग चार सौ चन्देल कालीन तालाब निर्मित है। इसी काल में गढ़ कुण्डार किले का निर्माण 925-940 ए.डी. में यशोवर्मा चन्देल द्वारा दक्षिण पश्चिमी बुन्देलखण्ड विजय उपरांत किया गया, जिसे जिनागढ़ किले के नाम से जाना जाता था। सन् 1182 ए.डी. में पृथ्वीराज चौहान द्वारा अंतिम चन्देल राजा परमार्दिदेव अथवा परमाल को पहूज नदी के तट पर सिरसागढ़ में हराकर चन्देलों के गौरव का अंत कर दिया गया तथा चन्देलों के सैनिक मुख्यालय गढ़ कुण्डार के शासक सभाजी परमार से किला छीनकर गुजरात के खगार वंशी राजा रुद्रदेव के पुत्र राजा खेत सिंह को देकर उसका सामंत बना दिया। 1192 ए.डी. में पृथ्वीराज चौहान तराईन युद्ध में जब मोहम्मद गौरी से परास्त हो गए तब खेत सिंह खंगार ने स्वयं को स्वतंत्र रूप से गढ़ कुण्डार का शासक घोषित कर दिया, इस प्रकार राजा खेत सिंह ने गढ़ कुण्डार किले का पुर्ननिर्माण कराकर उसमें नवीन खगार साम्राज्य की स्थापना की। खंगार साम्राज्य अंतर्गत बेतवा नदी के पूर्वी तट पर स्थित देवरा, सेधरी, माधुरी, शक्तिभैरव तथा पश्चिमी तट पर देवल देवघर, भरतपुरा, बजटा, सीकरी तथा रामनगर की सैन्य चौकियां थी। राजा खेत सिंह के उपरांत उनके वंशज राजा नंदपाल, राजा छत्रपाल, राजा खूबसिंह ने गढ़ कुण्डार पर शासन किया, तथा गढ़ कुण्डार किले में सिंहवाहनी मंदिर का निर्माण कराया।

राजा हुरमत सिंह खगार के कार्यकाल में राजा अर्जुनपाल महौनी राज्य का शासक था। उसके पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र वीरपाल शासक बना परंतु उसका कनिष्ठ पुत्र पुत्र सोहनपाल जो उच्च लड़ाका तथा सेनापति था असंतुष्ट होकर राजा हुरमत सिंह खगार की सहायता से उसके राज्य में अपनी सैन्य टुकड़ी सहित आ गया। राजा वीरपाल तथा सोहनपाल मूलत: गहड़वाल (गहरवार) वंशी क्षत्रिय थे, जो विन्ध्यवासिनी देवी में इनके भाई पंचम सिंह द्वारा शीश दान में रक्त की बूंदे गिरने से बुन्देला कहलाये। खंगार राजा हुरमत सिंह के राज्य में सोहनपाल बुन्देला के अतिरिक्त अन्य क्षत्रिय परिहार, पंवार, धंधेरे, चौहान, सेंगर, चन्देल तथा कछवाहा वंशीय सरदारों के अतिरिक्त लोधी, अहीर तथा खंगार शामिल थे। इस प्रकार राजा हुरमत सिह की सेना में गढ कुण्डार के बाईस हजार पैदल तथा घुड़सवार सैनिक रहते थे।

सन् 1228 एडी में सोहनपाल बुन्देला को प्रदत्त संरक्षण के बदले में राजा हुरमत सिंह खगार जो लड़ाकू, हठी तथा उदार शासक था. पुत्र मोहवश अपने एक मात्र पुत्र नागदेव से सोहनपाल की कन्या का विवाह कराना चाहता था, जो बुन्देलों को कतई स्वीकार नहीं था परंतु वे खगारों के अधीनस्थ सैन्य सरदार थे, राजा का विरोध कैसे करते इस प्रकार की विकट परिस्थिति में सोहनपाल ने गोपनीय रूप से अन्य क्षत्रिय सरदारों तथा अपने मित्रों जिसमें धीर प्रधान, विष्णुदत्त पाण्डे, अर्जुन कुम्हार आदि थे से सलाह मशविरा करके संकट से निपटने की रणनीति बनाई तदनुसार राजा का प्रस्ताव इस शर्त के साथ स्वीकारा गया कि, विवाह हेतु राजा को बारात लेकर वधू पक्ष के निवास पर आना होगा जहां खगारों के रीति रिवाज अनुसार विवाह संपन्न होगा। इस प्रकार विवाह में वधू पक्ष द्वारा एक बड़ा समारोह आयोजित कर मद्यपान तथा मांसाहार की भरपूर व्यवस्था की गई। रणनीति अनुसार विवाह समारोह में राजा अपने सभी सामन्तो, सैन्य सरदारों तथा सैनिकों के साथ शामिल हुए जिसमें उन्हें अनेक प्रकार के मासाहारी व्यजनों के साथ भरपूर मदिरापान कराया गया। जब सभी मेहमान मंदिरापान कर मस्त हो गए तब वर को वधू पक्ष के आंगन में अग्नि वेदिका के समक्ष विवाह हेतु आमंत्रित किया गया। तत्सबंध में जनश्रुति है कि, जब राजा अपने अगरक्षको सहित घर के अंदर जाने लगा तभी वधू पक्ष से सोहनपाल ने आगे आकर कहा कि, हुजूर हमारे घर में पर्दानशीन महिलाये है और हम लोग स्वयं आपके रक्षक सैनिक है अत: अन्य अंग रक्षक सैनिकों को साथ ले जाना उचित नहीं है। विश्वास दिलाने के लिये उसने अपना सीना ठोककर कहा कि ''जब तक हम जिन्दा है आपका बाल बाका भी नहीं हो सकता अत: राजा तथा राजकुमार नागदेव बिना अंगरक्षकों के घर में प्रवेश कर गये, अन्दर विवाह वेदी के समक्ष ढोल नगाड़ों के बीच सोहनपाल तथा उसके

सहयोगियों ने अपनी तलवारे निकाल ली, जब राजा ने सोहनपाल को उसके वचन की याद दिलाई तब सोहनपाल ने अपनी शेरवानी के अंदर से एक कबूतर निकालकर उसकी गर्दन मरोड़कर राजा को दिया गया वचन निभा दिया, और तलवार के एक ही वार में राजा की गर्दन उड़ा कर युद्ध की घोषणा कर दी। बाहर सोहनपाल के सैनिक अपने राजपूत साथियों के साथ नशे में धुत्त सैनिको पर टूट पड़े और खंगारों की सम्पूर्ण सैन्य शक्ति का अत कर दिया। इस प्रकार सन् 1228 ए.डी. में राजा सोहनपाल बुंदेला द्वारा बुंदेली साम्राज्य की नींव डाली गई। बुन्देलों ने उसी रात किले पर आक्रमण कर बचे खुचे सैनिको तथा खगार वंश के समस्त वयस्क पुरुषों का वध कर दिया तथा उनकी महिलाओं बच्चों को अपना सेवक बना लिया। राजा सोहनपाल का देवहसान सन् 1299 में हो गया, उसके बाद राजा सहजेन्द्र ने सन् 1326 तक गढ़ कुण्डार से अपनी शासन व्यवस्था का संचालन किया। राजा सहजेन्द्र की राज्य प्राप्ति में करेरा के पंवार सरदार पुण्यपाल ने सहायता की थी उसके उपलक्ष्य में राजा सहजेन्द्र की बहन रूपकुमारी का विवाह पुण्यपाल से किया गया। सन् 1507 में बुन्देला राजा रूद्रप्रताप सिंह द्वारा बेतवा नदी के किनारे ओरछा राज्य की स्थापना की गई, जिससे राजधानी के रूप में गढ कुण्डार का महत्व समाप्त हो गया और कालान्तर में गढ़ कुण्डार का वैभव काल के गाल में समाहित हो गया।

उपरोक्त एतिहासिक तथ्यों पर बुन्देलों का पक्ष यह है कि कुण्डार का खंगार राजा बुंदेला राजकुमारी का अपहरण कर उसका विवाह युवराज से कराना चाहते थे। खंगार शासक अपने अतिम दिनों में शराबी शिथिल और राज्य व्यवस्था संचालन के अयोग्य हो गये थे अत: मदांध होकर विवाह प्रस्ताव की आग में कूद पड़े और एक संक्षिप्त खूनी संग्राम में उनका अंत हो गया, आज भी खंगार अपने आप को क्षत्रिय कहते हैं और कई क्षेत्रों में उनकी शासन सत्ता रही है और अन्य राजाओं सामांतो के साथ उनके वैवाहिक संबंध होते रहे हैं, उनका कथन है कि बुन्देलों ने पहले अपनी लड़की देने का प्रस्ताव किया और फिर छल कपट से खंगारो की शासन सत्ता का अन्त कर दिया।

कवितायें

अनूप अशेष – परिचय – सतना नगर की परिधि में स्थिति ग्राम सौनौरा में 1945 में जन्में ख्यातिलब्ध नवगीतकार अनूप अशेष विगत 4 दशक से निरंतर सृजनरत हैं। वय ने इनकी सृजनात्मकता का क्षय न करके उसे परिपक्व ही किया। अनूप अशेष के अब तक 12 नवगीत संग्रह, 2 खंडकाव्य प्रकाशित हो चुके हैं, 3 संग्रह प्रकाशनाधीन है। श्री अनूप अशेष भाषा में अपनी प्रयोगधर्मिता के लिए चर्चित रहते है। साथ ही अपने बिम्ब व प्रतीकों की चात्तुषता के लिये जाने जाते हैं। अब तक अनेक आंचलिक, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित एवं समादृत हो चुके हैं। म.प्र. राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार, शम्भुनाथ सिंह अखिल भारतीय नवगीत पुरस्कार, निराला सम्मान, विन्ध्य शिखर सम्मान आदि।

"इसमें कौन खिलौना है"

हमको तुमको
इस जीवन को
साध रहा है कौन??
मिट्टी तो मिट्टी है,
इसमें कौन खिलौना है
ऊपर है आकाश
बीच में
लटका छौना है।
अजगर से पाँवों की
आशा
काँध रहा है कौन??

भंगुर हैं जो क्षण
उनमें किनका जीवन है,
सपनों–सा
आना–जाना
जैसा अपनापन है।
उँगली में मुँदरी–सा
कसता
बाँध रहा है कौन??

"आना मेरे घर"

घुँघरू बँधे पॉव से आना
मेरे घर,
अमराई से करह–गंध
ले आना
मेरे घर।।
ताल नदी नरवे में
पानी कम होगा,
तलवे के ऊपर
एँगुर
कुछ नम होगा।
एड़ी भरने का एहसास
कराना
मेरे घर।।
उँगली की मुँदरी में
स्वप्न टँके होंगे,
वर्षों के सूने
दिन
अभी ठमी थके होंगे।
अपनी कत्थक–देह
बसाना
मेरे घर।।

'आगे खड़ा जमाना होगा"

भीतर हम सब भूखे होंगे
इनका
ताल–मखाना होगा।।
बाहर खुली मुनादी होगी
पाबंदी होगी,
सत्ता के नीचे
सिर होगा
सिर ऊपर आसंदी होगी ।
परजा वाले खेत जुतेंगे
राज–सेठ का
दाना होगा।।
हर विधान सत्ता का होगा
हाथ बधेंगे,
हर निर्वाचन
पर्ची वाले
यंत्र सधेंगे।
बाहर धुला–धुला सब होगा
भीतर
ताना–बाना होगा।।
आय न होगी कर तो होगा
कर्ज चढेगा,
अपनी सूखी
चमड़ी से
अब ढोल मढ़ेगा ।
अपना कोई पक्ष न होगा
खाली पेट
अघाना होगा।।
मर जाओगे तब भी इनके
वोट रहोगे,
कफन के बदले
इनके
जाकिट कोट रहोगे ।
अपने चूल्हे राख न होगी
इनके घर में
खाना होगा।।

इनके खेल में अपने माथे
चोंट दखेगी,
कोई कलम
हमारी पीडा
कहाँ लिखेगी।
खेल का हर मैदान है इनका
जन का कहाँ
ठिकाना होगा
राजनीति के अंधे-गढ़ में जो बैठा है
अपनी खाई और गिरेगा,
देश-ताल को
गँदला करता
डूबेगा तब जल निथरेगा
आज ये राजकूट रच रहे
कल इनका दिन
काना होगा
बात बढ़ेगी तब बोलोगे
बोलो भी तो,
अपनी सोच को
आकारों में
खोलो भी तो।
हाथ उठाओ पाँव बढ़ाओं
आगे खड़ा
जमाना होगा ।।

"तुम्हारा होना"

आज तुम्हारा होना,
देह धरे है
धूल पसीना
जैसे पत्तल में दोना।।
पीके फूट रहे हैं मन में
भीगे ओस में घास,
कितनी दूर चले थे
दिन-दिन
अब हैं अपने पास ।
बाँस की घूप
नीम की छाया
घर का है हर कोना।।
फटी एडियों करबर हाथों
महका यह जीवन,
जुते खेत में
खेल रहा-सा
यादों में बचपन।
प्यास ओठ में
लोटे में जल
आँखों-आँखों खोना।।

"दीवारों के बाहर चेहरे"

फटे-पुराने वस्त्र
सिए से लगते है,
नई हाट के
आधे-चोले
रफू किए-से लगते हैं।।
दीवारों के बाहर चेहरे
नंगे और पुराने हैं,
बनी सड़क के
गड्ढों-से
ये दिखते बड़े सयाने हैं
पाँवों के हर फटे अँगूठे
बोझ
जिए-से लगते हैं।।
घर का आँगन छोटा लगता
अँधियारे का कोना है,
छद्म ओढ़ते
और बिछाते
ऐसा ही तो होना है।
सूरज की उजली देहरी में
बुझे
दिये-से लगते हैं।

सम्मान

नेता जही के लग्गू-भग्गू सगले छेत्र मइया हल्ला मचाय दिहिन के कालिह क्षेत्र के हर एक पंचाइत से एक रिटायर मास्टर का नेता जी सम्मानित कारहों। दूसरे रोज सगले छेत्र भर के पंचइतन से पचासन ठे रिटायर माध्य उहाँ पहुँचे में।

पाँच-छ ठे बड़कये नेतन के भासन भ। फेर बिटियन क सम्मानित कीन जाय लाग। सगले मास्टरन के चेहरा म खुसी के लहर दउड़ि गै, के बिटियन के बाद हमरे पंचेन के नम्बर लागी। पै इया खुसी कुछ देर म उदासी म बदलि गै, जब बिटियन के सम्मानित किहे के बाद आभार प्रदर्सन कोन जाय लाग।

असल बाि त इया रही, कि पूरे छेत्र म जउन-जउन बिटिया पढ़े-लिखे म हुसियार हई औ उँ अउर आगेव पढ़े-लिखे चहतीं हैं, उनहिन क रिटाया मास्टरन के आगे आर्थिक मदत के रूप म चेक दइ के सम्मानित कोन बद पै उनकर लग्गू-भग्गू गलत समाचार फइलाय दिहिन।

आभार प्रदर्सन के बाद सब क जलपान करै क कहा ग। सगले मास्टर दुइ-दुइ लड्डू औ दुइ-दुइ आलूबंडा के सम्मान पाइन औ घरे कइती चलि दिहिन।

राव रण बहादुर सिंह से स्वामी प्रशान्त की अद्भुत यात्रा

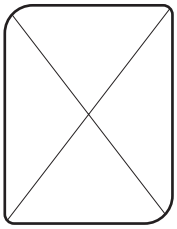

चन्द्र मोहन गुप्त :- लेखक सीधी में वरिष्ठ अधिवक्ता है। सामाजिक सरोकार से संबंधित विषयों पर इनकी पैनी नजर रहती है। व्यंगात्मक टिप्पणियाँ स्वान्त: सुखाय करते रहते हैं। जो चोटकर विचार करने हेतु प्रेरित करती है। विधि व्यवसाय के अतिरिक्त वे सेवी संस्था रोली फाउण्डेशन के माध्यम से समाज सेवा में भी सक्रिय हैं। इनकी व्यंग टिप्पणियों का एक संकलन प्रकाशित एवं अगले की तैयारी। गुप्त जो की टिप्पणियाँ हमें वर्तमान, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिवेश के बारे में कुछ सोचने के लिये प्रेरित करती हैड्ड।

21 दिसम्बर 1928 को चुरहट राज घराने के राव शिव बहादुर सिंह के पुत्र के रूप मे अवतरित राव रणबहादुर सिंह का ऐसा ब्यक्तिव था कि जो उनसे मिला उन्ही का होकर रह गया। राज घराने मे जन्मे राव रण बहादुर सिंह जिन्हे हम सब राव साहब के आदर सूचक शब्द से संबोधित करते थे, का लालन पालन यूरोपीय गर्वेनेस के साथ राजसी था। इलाहाबाद के सेन्ट मेरीज स्कूल, राजकुमार कालेज बनारस, दरबार कालेज रीवा की शिक्षा कानून की भी पढ़ाई ने राव साहब को हर तरह से परिष्कृत कर दिया। भारत सरकार को अग्रणी कृषकों को उन्नत कृषि का प्रशिक्षण के लिये अमेरिका भेजने की योजना तथा बाद मे लगभग पूरे विश्व की यात्रा ने राव साहब को पूरी दुनिया से अवगत कराया। उन्होने कृषि प्रषिक्षण के बाद आधुनिक कृषि उपकरणों से स्वंय खेती कर पूरे क्षेत्र को एक उत्कृष्ट कृषि का उदाहरण दिया। पिता राव शिवबहादुर सिंह के स्वर्गवास के बाद महाराजा मार्तण्ड सिंह ने ज्येष्ट पुत्र रण बहादुर सिंह को चुरहट राज घराने का राव का पद सौंपा। उसके बाद वे पूरे क्षेत्र मे राव साहब के नाम से विख्यात हो गये। चुरहट के राव की हैसियत से जैसे ही उन्हे जानकारी हुई कि बढ़ौरा मे उनके हिस्से पट्टे कब्जे की भूमि पर विराजे शिवलिंग की ख्याति बढ़ रही है, भक्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है तो उनके या उनके उत्तराधिकारियों के मन मे कोई लालच न आये इसलिये उन्होने दिनांक 28-03-1960 को जिस भूखण्ड पर शिव जी बिराजे थे उसका बकायदा पंजीकृत ट्रस्ट बनाया और भूमि ट्रस्ट को दान में दे दिया। इस तथ्य की जानकारी बहुत कम ही लोगों को है कि मंदिर की चढ़ोत्तरी की पूरी राशि हमेशा दान मे दी गई तथा वर्तमान मे चिन्मय सेवा ट्स्ट को दी जा रही है जिसका पूरा हिसाब है।

सार्वजनिक जीवन - उन्होने सेमरिया के सरपंच पद से प्रारम्भ किया। राव साहब ने साबित कर दिया कि प्रजातंत्र की प्रथम इकाई सरपंच का पद ग्राम विकास की प्रथम सीढ़ी है। उन्होने सेमरिया कसबे की सड़क, हायर सेकेन्ड्री स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जो बाद मे सामुदायिक स्वास्थ केन्द्र मे प्रोन्नत हुआ, के लिये अपनी भूमि दान मे दे दिया। वे दो कार्यकाल के लिये जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष रहे तथा सहकारी विभाग के भ्रष्टाचार के कचरे को साफ किया। वर्ष 1971 मे राव साहब, महाराजा रीवा के आग्रह व प्रेरणा से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप मे सीधी लोक सभा से चुनाव मे उतरे व भारी मतों से विजय हासिल किया। एक निर्दलीय सांसद, संसद भवन मे कितना प्रभावी हो सकता है, राव साहब उसके अप्रतिम उदाहरण हैं। उन्होने बेरोजगारों को भत्ता देने का एक विस्तृत विधेयक संसद मे प्रस्तुत किया जिसमें उन्होने इस भत्ते के लिये धन कहां से आयेगा इसका विवरण भी दिया। पूरा विधेयक स्वयं टाइप किया। उनके संसदीय कार्य, वाक शैली, अत्यंत प्रभावशाली ब्यक्तित्व ने संसद मे बेहद लोक प्रिय बना दिया। श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हे स्वयं कई बार आमंत्रित किया व कांग्रेस मे आने का आग्रह किया। जिसे बाद मे उन्होने स्वीकार किया। राव साहब ने पूरे ससंदीय क्षेत्र की पद यात्रा कीया। आपतकाल के बाद हुये लोक सभा चुनाव मे इन्दिरा गांधी की तरह वे भी चुनाव हार गये। चुनाव हारने के बाद भी संसद भवन में राव साहब से मिलने के लिये उत्सुक सासंदो को देखने का मै भी गवाह हूँ।

राजनीतिक जोड़ तोड़ के बाद हुये परिसीमन में सीधी लोक सभा अनुसूचित जन जाति के लिये आरक्षित कर दिया गया। राव साहब को रीवा तथा अन्य सामान्य सीट से चुनाव लड़ने का आमंत्रण मिला लेकिन तब तक उनका मन फकीरी मे लग गया। स्वामी चिन्मयानंद के सानिघ्य में आये। उन्होने सीधी के मानस भवन में स्वामी तेजोमायानन्द का नारद भक्ति सूत्र पर एक गीता ज्ञान यज्ञ अर्थात प्रवचन कराया और हम सबको बताया कि गीता ज्ञान क्या है। राव साहब ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया वे 60 वर्ष की आयु में सेमरिया छोड़

देगें। पूरे क्षेत्र मे यह चर्चा का विषय बन गया। विश्वास नहीं था कि राव साहब चुरहट राज घराने का वैभव छोड़ कर चले जायेंगे, लेकिन मुझे विश्वास था। घोषणा के अनुसार राव साहब ने सब कुछ त्याग कर सपत्नीक सेमरिया छोड़ दिया। स्वामी चिन्मयानन्द के निर्देशानुसार रीवा से लगभग 15 कि.मी. दूर चिन्मय आश्रम लक्ष्मण पुर की स्थापना किया। सर्व प्रथम मंदिर, बाद में पितामह सदन का निर्माण कराया, जिसकी आधार शिला स्वयं स्वामी चिन्मयानंद जी ने रखी, गवाह मैं भी रहा। आश्रम तथा पितामह सदन की ब्यवस्था के लिये चिन्मय सेवा ट्रस्ट की स्थापना की गई जिसकी आय का प्रमुख श्रोत राव साहब को मिलने वाली सांसद पेंशन तथा बढ़ौरा शिवालय की चढ़ोत्तरी ही रही। पितामह सदन की एक कुटी मे राव साहब ने आजीवन निवास किया। आश्रम तथा पितामह सदन को चलाने के लिये राव साहब पूरे वर्ष देश प्रदेश जिले मे गीता ज्ञान यज्ञ के प्रवचन करते थे। दक्षिणा के रूप में मिलने वाली राशि को आश्रम के कार्यों में लगाया जाता था। सोच कर आश्चर्य होता है कि एक राजा, चिन्मय आश्रम तथा पितामह सदन चलाने के लिये गली गली भटक रहा है। समाज शायद राव साहब के इस त्याग व तपस्या को ठीक से नही समझ सका। लेकिन पूरे चिन्मय मिशन में उन्हे बहुत सम्मान प्राप्त था।

राव साहब पढ़ने लिखने के बहुत शौकीन थे। वे शास्त्रीय संगीत के पारखी व प्रेमी दोनो थे। उनके पास बहुत उच्च कोटि का म्यूजिक सिस्टम था तथा रिकार्डों को अमूल्य संग्रह था। उनके पुस्तकों तथा संगीत संकलन पर ही एक लेख लिखा जाना चाहिये। राव साहब के हाथ मे हमेशा कोई न कोई पुस्तक रहती थी, ज्यादातर अग्रेंजी की। लेकिन आश्रम जाने के बाद राव साहब ने संस्कृत का भी अध्ययन किया। उनके द्वारा सरल भाषा मे हिन्दी व अंग्रेजी मे गीता, रामायण तथा अन्य बौद्धिक विषयों पर सरल भाषा मे कई पुस्तके लिखी गई। जो केवल पठनीय ही नही, वरन एक धरोहर है।

राव साहब सभी का बहुत सम्मान करते थे। वे न कभी किसी की आलोचना करते थे और न उन्हें आलोचना सुनना पसंद था। वे हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि उनकी गढ़ी मे आये को सम्मान जनक आसन, चाय, नाश्ता मिला है कि नही ? व यदि दोपहर मे कोई रूका है तो उसके भोजन की ब्यवस्था होगी। यात्रा मे हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि उनके सेवक या ड्राइवर के रूकने, खाने पीने की ब्यवस्था है या नहीं। अत्यंत कुशल चालक होने से वे कई बार गाड़ी स्वयं चलाते थे। उन्होंने अपने लोक सभा क्षेत्र को इस प्रकार छान रखा था कि मैंने उन्हे कभी किसी गांव के लिये रास्ता पूंछते नही देखा। उन्हें सब मालुम था। वे बहुत उच्च कोटि के निशानेबाज तथा शिकारी थे। जंगलो के बीच से गुजरने पर वे अक्सर बताते थे कि यहां उन्होने बाघ का शिकार किया या किस जानवर का शिकार कब किया।

अत्यंत सुदर्शन काया तथा ब्यक्तिव के धनी राव साहब हमेशा अवसर के अनुकूल पोषाक मे रहते थे उनके छरहरे शरीर पर हर पोषाक बहुत भब्य लगती थी। समय के इतने पाबंद कि लगता था कि घड़ी राव साहब के हिसाब से चलती है न कि राव साहब घड़ी के हिसाब से चलते हैं। राव साहब कभी किसी कार्यक्रम मे विलंब से नही आये। उनकी दिनचर्या बहुत ही सधी रहती थी। गढ़ी सेमरिया, रीवा की कोठी हमेशा बहुत-बहुत साफ सुथरी ब्यवस्थित रहती थी। उनके प्रयोग की प्रत्येक वस्तु जहां होनी चाहिये वही रहती थी।

राव साहब जैसा आधुनिक ब्यक्ति ढूंढे नहीं मिलेगा। उन्हें नये विचार, नई पुस्तक यहां तक कि नयी फिल्म, नये इलेक्ट्रानिक उपकरणों की पूरी जानकारी ही भर नही रहती थी वरन वे नई पुस्तकों से, नये संगीत के रिकार्ड से, नये फोन व लैपटाप टेबलेट आदि से स्वयं को समृद्ध करते रहते थे। वे हमेशा कहते थे कि हमारी संस्कृत हमें पुरातन से आधुनिकता की ओर ले जाने वाली है। दकियानूसी विचारों से दूर राव साहब ऐसी पुराने रीति रिवाजों से स्वयं को दूर रखते थे जिनका कोई तार्किक आधार न हो। जाति पांति मे उनका कतई विश्वास नहीं था। उनके मुख्तार आम पं. हरिहर प्रसाद जी थे जिन्हे इतना अधिकार प्राप्त था कि चाहें तो पूरा इलाका ही बिक्री कर दें। वे हमेशा जानकारी रखते थे कि आदिवासी बस्ती मे कौन बीमार है किसे क्या आवश्यकता है। वे हर आम खास के आमंत्रण पर प्रसन्नता से जाते थे।

पूरी दुनिया की यात्रा करने वाले राव साहब को क्षेत्र के पारंपरिक ब्यंजनों के अतिरिक्त आधुनिक ब्यंजन भी पसंद थे। लेकिन उनकी फरमाइश कम ही रहती थी। शायद मेरी श्रीमती जी को यह अधिकार प्राप्त था कि राव साहब की पसंद की डिश की जानकारी लें। लेकिन धीरे-धीरे आश्रम के सादे भोजन ने उनकी रूचि मे परिवर्तन ला दिया।

राव साहब का विवाह झाबुआ नरेश की राजकुमारी कृष्णा देवी से हुआ। लेकिन वह महान देवी सारा राजसी वैभव ऐशो आराम भूल कर अपने पति के लिये समर्पित हो गई। जब राव साहब ने वानप्रस्थ होने का निर्णय लिया तो सीता की तरह वे भी सब कुछ त्याग उनके पीछे आश्रम चली गई। इतना समर्पण बिरला ही है। मुझे कई बार उनके दर्शन करने तथा सानिध्य का अवसर मिला। कभी लगा ही नहीं कि वे राज घराने की हैं। हमेशा अहंकार, अभिमान से दूर एक विदुषी महिला जो अपने पति तथा परिवार के लिये पूर्ण समर्पित।

राव साहब के पुत्र कृष्ण कुमार सिंह अपने पूज्य पिता की ही भांति उच्च शिक्षित, बेहद सीधे सादे, इमानदार तथा सबका ध्यान रखने वाले हैं। उन्होने हमेशा अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। दो बार विधायक भी रहे लेकिन उसका अहंकार उन्हे कभी नही रहा। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती दुर्गा राज्यलक्ष्मी नेपाल के राणा परिवार से होकर विदेश शिक्षित हैं। लेकिन उन्होने कभी अपने उच्च राजघराने या विदेश शिक्षा का न तो प्रदर्शन किया और न अहंकार दिखाया। कृष्ण कुमार सिंह अर्थात भंवर साहब के पुत्र अनंत विजय सिंह को राव साहब ध्रुव नाम से पुकारते थे। हमें भी यही नाम पसंद है। उसकी पत्नी उड़ीसा के काला हांडी राजघराने की राजकुमारी है। यह दोनों भी अहंकार से पूरी तरह से दूर हैं।

मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि राव साहब का वानप्रस्थ दिखावटी नहीं था। एक बार आश्रम जाने के बाद वे अपने गृह सेमरिया कभी नही आये। वानप्रस्थ का ब्रत ऐसा कि पत्नी के स्वर्गवास पर उनके दाह संस्कार में भी नही गये। अपने इकलौते पौत्र के विवाह मे भी शामिल नहीं हुये। सन्यास लेने के बाद केवल गेरूआ वस्त्र ही नहीं धारण किया, वरन रात्रि का भोजन भी त्याग दिया। है ऐसा कोई ? राव साहब इस दुनिया को 3 व 4 अप्रैल वर्ष 2016 की दरमियानी रात्रि को बहुत ही शांति से छोड़ कर चले गये। लेकिन मुझे हमेशा लगता है कि राव साहब किसी समय आकर कहेंगे, हरि ओम ।

सम्पर्क- रोली मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट, सीधी

मो.- 9425177442

गाँव की धूल के समर्थ सर्जक देवीशरण ग्रामीण अथन ग्राग्य जीवन के कुशल चितेरे देवीशरण ग्रामीण

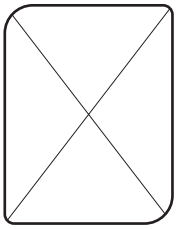

शंकर सिंह 'दर्शन' –

''धूल हूँ मैं अंक मे हीरे लिए
पर कौन मुझको जानता''

उपरोक्त अमर पंक्तियों के प्रणेता चिरस्मरणीय देवीशरण 'ग्रामीण' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रदेश ही नहीं देश के लगभग सभी समकालीन साहित्यकार परिचित थे। ग्रामीण जी का जन्म एवं पालन पोषण ग्राम के ही एक कृषक परिवार में हुआ था। वे देवीशरण सिंह परिहार से देवीशरण ग्रामीण कब और कैसे बन गये, इसे जानने के लिए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की पड़ताल निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत करने का प्रयास करते हैं –

1. **ग्रामीण जी का बचपन एवं शिक्षा :–** आपका जन्म 28 दिसंबर सन् 1935 को सतना जिला की नागौद तहसील के ग्राम बाबूपुर में हुआ था। आपके पिता स्वर्गीय हिराई सिंह एक साधारण किसान थे और आपकी माता स्वर्गीय रूकमणि देवी एक कुशल गृहणी थी। ग्रामीण जी ने अपनी जीवन यात्रा के बारे में एक संस्मरण आलेख में निम्नानुसार वर्णन किया है – ''मेरे पिता हिराई सिंह एक साधारण किसान थे। उनका जीवन अत्यंत गरीबी एवं कठिनाई में बीता था। उनके कुल तीन विवाह हुये थे। पहला विवाह ग्राम खैरहन जिला रीवा में हुआ था जिनसे कुल चार पुत्रियाँ हुईं। पहली माँ का स्वर्गवास हो जाने के बाद पिताजी का दूसरा विवह ग्राम भाजी–खैरा के जागीरदार स्व. अयोध्या सिंह की बहन अर्थात् स्व. आनन्द प्रताप सिंह (शिक्षक) की फूफू साहब के साथ हुआ था। इनसे दो पुत्र स्व. सीताशरण सिंह एवं स्व. राधेशरण सिंह का जन्म हुआ। संवत् उन्नीस सौ पचहत्तर (सन् 1918) में माना (कालश) नाम की बीमारी में दूसरी माँ का भी देहांत हो गया। पिता जी का तीसरा विवाह ग्राम भाजीखेरा (एरिया टोला) में स्व. रूकमणि देवी के साथ हुआ। इनसे एक पुत्री (कृपालू) एवं एक पुत्र (मैं स्वयं) पैदा हुआ। मेरे जन्म पर इस क्षेत्र के सबसे बड़े पौराणिक बड़ी विसाल जी ने कहा कि इस लड़के का जन्म ऐसे मूल नक्षत्र में हुआ है जो महा अशुभ है। इसका मुँह पिता को बारह वर्ष तक नही देखना चाहिए, इसे घर से कहीं दूर रखें। जब पिता जी ने पौराणिक की बात नही मानी तो वे नाराज हो गये फलस्वरूप दूसरे पंडित से पूजा–पाठ करवाना पड़ा।

ग्रामीण जी की बड़ी बहन बूट (मौहार वाली) बाल विधवा हो गई थी। वे अपने इकलौते बेटे के साथ अक्सर मायके मे ही रहती रहीं और उम्र में अपने से छोटी तीसरी माँ को ग्रह प्रबंधन एवं पकवान बनाने की शिक्षा देती रही।

उस समय ग्राम बाबूपुर में कोई विद्यालय नहीं था। कक्षा 'अ' और 'ब' कर पढ़ाई आपने ग्राम के ही पंडित द्वारिका प्रसाद बेदुआ जी के घर जाकर पूरी की। सन् 1940 में बदुआ जी ने आपका प्रवेश कक्षा एक में शासकी प्राथमिक शाला हरदुआ में दिला दिया। यहाँ पर आपने कक्षा तीसरी तक की शिक्षा नियमित रूप से ग्रहण की। सन् 1943–44 में जब आपको कक्षा चैथी की पढ़ाई करनी थी, उस वर्ष कृषि कार्य के लिए कोई हलवाहा न मिल पाने के कारण पिता जी ने उनकी पढ़ाई बन्द करा दी। वर्ष भर वे खेती किसानी के कार्य में सहयोग करते रहे। सन् 1944–45 में जब कृषि कार्य के लिये एक हजवाहा मिल गया तो उनकी माँ ने पिता जी से कह कर उन्हें पुन: विद्यालय भेजना प्रारंभ कर दिया। इस तरह आप कक्षा चैथी तक की शिक्षा ही नियमित रूप से पूर्ण कर सके। इसके बाद आप पुन: कृषि कार्य एवं पिताजी की सहायता में लग गये। प्रतिदिन शाम को आप रामचरित मानस पढ़कर पिता जी को सनाते थे और पिता जी उसका अर्ध समझते थे।

आपकी पढ़ने में रूचि थी अत: आपने घर में उपलब्ध धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ना प्रारंभ कर दिया था। आपके घर पिता जी के गुरू बाबा अपने एक चैला के साथ अक्सर आते रहते थे। आपकी पढ़ाई में रूचित देखकर चेला आपको निरंतर पढ़ते रहने के लिये प्रेरित करता रहता था, साथ ही पढ़ने के लिये अनेक आध्यात्मिक पुस्तके जैस - कबीर की साखी, चाणक्य नीति, विदुर नीति, आदि पुस्तकें भी नि:शुल्क उपलब्ध करा देता था। इस तरह आपने बचपन में ही बहुत कुछ आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सन् 1957 में आपके गांव के विद्यालय में वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्व. शिवानन्द जी (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, विंध्य.प्र.) मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। उनके स्वागत में ग्रामीण जी ने एक स्वागत गीत लिखा था। जब आपने अपना स्वागत गीत प्रस्तुत किया तो उसे सुनकर शिवानन्द जी अत्यन्त प्रसन्न हुये और उन्हें बुलाकर पूछा - ''कहाँ तक पढ़े हो'' जबाब मिला कक्षा चार तक 1 शिवानन्द जी ने सभा स्थल पर उपस्थित शासकीय प्राथमिक शाला हरदुआ के प्रधानाध्यापक श्री शीतल प्रसाद श्रीवास्तव जी से कहा कि इस को कक्षा आठवीं की परीक्षा दिलवाओं और इसे प्रोत्साहित करो। उसी वर्ष आपने कक्षा आठवीं का परीक्षाफार्म भर दिया और परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये।

आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् आप शासकीय नौकरी की तलाश में जुट गये तथा रोजगार कार्यालय में अपना नाम दर्ज करा ली। शीघ्र ही आपने ग्वालियर बोर्ड से दसवीं की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। आप नांगौद विकास कमेटी का सदस्य बना दिया गया। उस समय श्री दिनेश मोहन त्रिपाठी जी नागौद ब्लाक के एसईओ थे। वे अच्छे गीतकार थे और ग्रामीण जी की रचनाओं के प्रशंसक थे। त्रिपाठी जी ने ग्रामीण जी को एक प्रशंसा पत्र टाईप कराकर दिया था जिसमें लिखा था कि ''यह एक उदीयमान अच्छे कवि हैं।'' जब आप सतना संस्कार केन्द्र के प्रभारी व जिला समाज सेवक के पद पर कार्यरत् थे तभी आपने इण्टरमीडियट की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। इसी तरह आपने शासकीय सेवा में रहते हुये बी.ए. एवं एम.एम. (हिन्दी) की परीक्षायें भी उत्तीर्ण कर लिया। संभवत: आप नागौद क्षेत्र के ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कक्षा चार के बाद एम.ए. तक की सभी परीक्षायें स्वाध्यायी रूप से उत्तीर्ण की थी।

2. जिम्मेवार अविभावक के रूप में 'ग्रामीण' जी :- ग्रामीण जी का विवाह तेरह वर्ष की उम्र में सन् 1945-46 में ग्राम गोरइया (बरहना) में श्री जयकरण सिंह बघेल की छठी बेटी हंसराज देवी के साथ हुआ था। आपके बड़े भाई माता-पिता से पहले ही अलग हो चुके थे। माता-पिता के साथ केवल ग्रामीण जी अपनी पत्नी सहित रह रहे थे। आपका अपनी माँ से बहुत लगाव था। सन् 1950 में माता जी उन्हें छोड़कर चली गई। वे मातृ शोक से पूरी तरह उबर पाते, उससे पहले ही लगभग डेढ़ वर्ष के भीतर ही पिता जी ने भी साथ छोड़ दिया। माता-पिता के निर्देशन में चलने वाले ग्रामीण जी स्वयं को असहाय मान रहे थे आब आपको अभिभावकों से मुक्त स्वार्वंबी जीवन जीने की कला सीखा था। इन दिनों आपकी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। जमा पूँजी माता-पिता की बीमारी एवं उनके संस्कारों में खर्च हो चुकी थी। जब सन्तान उत्पत्ति की बारी आई तो लगातार तीन पुत्रियों का जन्म हुआ उनकी चिंता का कारण भी बनी रहीं। चैथी संतान के रूप में पुत्र प्राप्ति हुई जिनका नाम पुष्कर शरण सिंह रखा गया। इस समय तक आपके पास कोई स्थायी रोजगार न होने के कारण आप आर्थिक परशानियों से जूझते रहे। ग्रामीण जी अपनी साहित्यिक रूचि के कारण गोष्ठियों एवं कवि सम्मेलनों में भाग लेने के लिये अक्सर घर से बाहर रहते थे। घर पर पत्नी, बच्चों के साथ अकेले ही रहतीं एवं घर गृहस्ती की देखरेख करतीं। वे ग्रामीण जी के बारह जाने का कभी विरोध नहीं करती थी।

आप हमेशा परिवार एवं समाज के हर व्यक्ति के कृयण के बारे में सोचते रहे थे। आपके शासकीय सेवा में जाने से पहले ग्राम के ठाकुर परिवार के बीच दो गुट बन गये थे। परिवार की यह गुटबाजी उन्हें अच्छी नहीं लग रही थी। आपने एक युवक दल का गठन करके ''पार्टी उन्मूलन'' आंदोलन चलाया। इसके अंतर्गत एक पम्पलेट में हाथ से यह चैपाई लिखकर ''सांसत कर पुनि करहिं पसाऊ, नाथ बड़ेन कर इहै सुभाऊ'' गांव के पढ़े-लिखे बुजुर्गो के दरबाजों में चस्पा कर दिया जाता था। इस आंदोलन का सर्वाधिक प्रभाव ग्रामीण जी के काका स्व. जयराम सिंह पर सबसे अधिक हुआ। उन्होंने पार्टी बन्दी तोड़ने के लिये सभी को सहमत कर लिया। इस तरह आप अपने विवेक के द्वारा पूरी ठाकुर परिवार को एकजुट करने में सफल हुये।

3. कुशल सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में ग्रामीण जी :- ग्रामीण जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। यद्यपि वे बहुत सीधे-सादे एंव सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, किंतु हमेशा जनहित के कार्यो के लिये तत्पर रहते थे। कक्षा 10वीं उत्तीर्ण होते ही आपको नागौद विकास कमेटी का सदस्य बना दिया गया। आप नागौद शिक्षक नवयुवक मण्डल के प्रोजेक्ट नेता भी रहे हैं। बाबूपुर ग्राम में शाला

विद्यालय तो कई वर्ष पहले से खुला था किन्तु उसका भवन नही बन पाया था। जब गाँव के लोगों ने विद्यालय संचालन हेतु मकान देने से मना कर दिया तब आपने शासकीय भवन बनवाने का संकलप लिया। नवयुवक मण्डल से भवन बनाने का प्रस्ताव स्वीकृत करवाने के बाद स्वयं श्रमदान करने के लिये ग्राम सेमरवारा के भटवा में पत्थर तोड़ने पहुँच गये। आपके साथ आपके बड़े भाई (बड़का दादू) भी थे। दूसरे दिन से गाँप के कई लोग पत्थर तोड़ने जाने लगे। पर्याप्त मात्रा में पतथर एकत्र हो जाने के बाद आपने प्रयास करके विद्यालय के लिये दान की जमीन उपलब्ध कराई। इस प्रकार आपके नेतृत्व में जनता के श्रमदान एवं शासन के अनुदान से गांव में विद्यालय भवन का निर्माण संभव हो पाया।

आपके ही अाकि प्रयास से ग्राम बाबूपुर एवं ग्राम पाकर के मंच स्थित सतना नदी में एक उद्वहन सिंचाई योजना को मंजूरी मिली। जब सर्वे एवं समिति के रजिस्ट्रेशन का कार्य पूर्ण हो गया तो गाँव के दो-तीन बड़े कास्तकारों ने यह कहकर निर्माण कार्य में रोक लगा दी कि जमीन सिंचित है। जाने पर हमारी जमीन सीगिं में आ जायेगी। सिंचाई का नाम 'ग्रामीण' देवीशरण का ही उपनाम है। कुछ दिनों बाद देवीशरण इसको अपने नाम करा लेगा। बढ़ते विरोध के कारण यह योजना बन्द कर दी गई। इस घटना के पश्चात् आपने ग्राम विकास के कार्यो में रूचि लेना बन्द कर दिया और शासकीय सेवा में जाने का प्रयास करने लगे।

4. सामाजिक समरसता के समर्थक एवं अंधविश्वासों के विरोधी :- आजादी के बाद गांवों में ग्राम स्वराज लाने के प्रयास शासन द्वारा लगातार किये जा रहे थे। अपने स्तर पर ग्रामीण जी भी ग्राम वासियों के ग्रम स्वराज का अर्थ समझाते रहते थे। एक बार ग्राम बाबूपुर में नये ब्लाक की ओर से सेमीनार का आयोजन किया गया था। आपने ग्राम हर जाति-वर्ग के युवको को छुआछूट रहित समाज बनाने के उद्देश्य से सेमीनार में आमंत्रित किया। इस सेमीनार में ग्राम के सभी वर्गो के युवकों ने तो उत्साह पूर्वक भाग लिया किंतु सामान्य वर्ग के सयाने लोग सभी के साथ बैठने में परहेज करते रहे। शाम की सभा में गांव के कुछ संभ्रान्त लोग आये किन्तु सहभोज में सम्मिलित नहीं हुए।गांव के बारी जब पता चला कि एडीएम साहब तेली जाति के हैं तो उसने उनकी पत्तल उठाने से मना कर दिया। जब काफी देर त क किसी ने पत्तल नही उठाया तो ग्रामीण जी ने सभी के पत्तल उठाना प्रारंभ कर दिया। उन्हें देखकर कुछ लड़के भी सहयोग करने लगे। ग्रामीण जी ही उस सेमीनार के डे अफसर थे। उन्होंने शाम को राष्ट्रीय ध्वज उड़ाया। ग्रामीण जी की समाज सेवा एवं समरसता की भावना से एडीएम साहब अत्यंत प्रसन्न हुये।

ग्रामीण जी के पिता जी एक धार्मिक किंतु सुधारवादी व्यक्ति थे। उनके समय में देवी पूजा में घेटुला (सुअर का बच्चा) एवं मुर्गा की बलि दी जाती थी। आपने इस प्रथा को बंद कराकर नारियल एवं रोट चढ़ाना प्रारंभ करा दिया था। जब ग्रामीण जी का जन्म हुआ तो क्षेत्र के प्रसिद्ध पंडित ने मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण अशुभ बालक घोषित कर दिया तथा बारह वर्ष के लिए पिता से दूर रखने की सलाह दी, किंतु आपने पंडित की बातों में विश्वास नही किया और बालक का पालन पोषण अपने से ही पूरा कराया। ग्रामीण जी पर पिता जी की सुधारवादी एवं पांखण्ड विरोधी विचार धारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। आप भगवान पर भरोसा न करके मनुष्य सामर्थ और उसके द्वारा किसी कर्म के फल पर ही भरोसा करते थे। आप छूआछूट एवं पाखण्ड कट्टर विरोधी थे। आपने अपने बेटे को अपनी मृत्यु के पश्चात् मृत्यु भोज एवं कर्ममाण्ड का सुझाव दिया था।

5. ग्रामीण जी में साहित्यिक अभिरूचि एवं सृजन की प्रेरणा :- हर व्यक्ति का व्यक्तित्व मुख्य रूप से दो कारकों पर निर्भर कर है। पहला है पैतृक या आनुवांसिक कारक, दूसरा है तत्कालीन परिस्थिति या परिवेश। ग्रामीण जी में साहित्यिक अभिरूचि आनवांसिकता से प्राप्त हुई है किन्तु उनकी समझ एवं दृष्टि का विकास क्रमश: तत्कालीन परिस्थितियों एंव संगति से हुआ है। आपकी नानी कुछ पढ़े-लिखे थीं। उनमें कविता बनाने की भी प्रतिभा थी। आपकी नानी कुछ पढ़े-लिखे थीं। उनमें कवित बनाने की भी प्रतिभा भी। नानी ने ही आपकी माँ को पढ़ना-लिखना सिखया था। आपकी भी कुछ-कुछ तुकबन्दी कर लेती थीं। गाँव में रहते हुऐ आपका लोक गीत (फाग) सुनने का पर्यापत अवसर मिला था। प्रारंभ में आपने भी उन्हीं तजों पर फाग लिखना प्रारंभ कर दिया। कविता क्या होती है? इसकी जानकारी आपमें नही थी। जब आपने सुना की हरदुआ विद्यालय की सरस्वती पूजन में बच्चे ने खेब गीत कविता सुनाया है तो उनके मन में भी कविता लिखने का विचार उत्पत्त हुआ। संयोग से उसी समय ग्राम के विद्यालय में भी सरस्वती पूजन के अवसर पर वाषिर्कोत्सव का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। इस अइवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिवानन्द जी (विधान सभा अध्यक्ष) को आना था।

ग्रामीण जी ने पहला स्वागत गीत लिखकर शिवानन्द जी को सुना इस गीत से ग्रामी जी का पर्याप्त उत्साह वर्धन हुआ। तभी से आप कवित के रूप में चर्चित हो गये और आस-पास के विद्यालयों में कविता पाइ के लिए बुलाये जाने लगे। आपके स्वागत गीत की पंक्तियाँ निम्नानुसार है -

बाबूपुर की बापी तड़ाग बना, विकसे जनुकंज प्रजा जन के,
अलिबृंद हैं विज्ञ पड़ोसी ग्रामीण, जो बैठे यहाँ प्रफुल्लित मन के।
प्रात ये सत्रह मा भयो, जो मिल्यै है हमें शुभ अवसर से
जो निरीक्षण प्रान्त सपेक अध्यक्ष, उदय भये आज दिवाकर से।

ग्राम के ही कुछ वरिष्ठ लोगों ने साहित्य एंव कविता की बारीकियों के सीखने के लिए श्री रामराज सिंह जी शिक्षक उमरी (नागौद) से मिलने का सुझाव दिया। ग्रामीण जी रामराज सिंह जी के घर गये तथा वहाँ एक रात रूक कर अपी रचनायें जँचाया तथा कुछ महत्वपूर्ण सुझाव एवं व्याकारण की पुस्तक लेकर वापस आ गये। आपकी प्रारंभिक अधिकांश रख्नायें धार्मिक विषयों पर केन्द्रित थीं। इन रख्नाओं वाली कापी एक रेलयात्रा के दौरान कहीं खो गई। आप में सृजन की क्षमता ऐसी थी कि आप दिये गये विषय पर तुरंत रचना कर देते थे। जब आप कक्षा आठवीं का परीक्षा फार्म भरने शासकीय प्राथमिक शाला हरदुआ गये तो वहाँ के शिक्षकों ने विद्यालय के नये प्रधानाध्यापक श्री ताराचन्द्र जोशी से एक कवि के रूप में परिचय कर जोशी जी ने कहा कि कुछ हमको भी सुनाईये तब तो हम मान गये और थोड़ी देर बाद चार लाईन की निम्न कविता पढ़कर जोशी जी को सुना दिया ।

दिन में तो सूरज चमके, औ रात में चन्दा दमके,
इस धरती के ऊपर वो, ऐसा ही आकाश हो।
किन्तु हरदुआ माध्यमिक शाला है यह धन्य,
जहाँ ताराचन्द्र जी का, निश दिन ही प्रकाश हो।।

अपने बारे में उक्त कविता सुनकर प्रधानाध्यापक अन्यंत प्रसन्न हुये तथा ग्रामीण जी को परीक्षा की तैयारी के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

6. शासकीय सेवा के लिए ग्रामीण जी का संघर्ष :- कक्षा आटवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद से ही आप शासकीय सेवा में जाने का प्रयास करने लगे थे। आपकी प्राथमिकता में शिक्षक बनना रहा है। इसके लिये आपने हर संभव प्रयास किया किंतु प्रारंभ में सफलता नही मिल सकी। कक्षा 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद रोजगार कार्यालय मं अपना नाम दर्ज कराते समय आपने नागौदा ब्लाक के एसईओ श्री दिनेश मोहन त्रिपाठी जी द्वारा दिया गया वह प्रमाण पत्र भी संलग्न कर दिया था, जिसमें ''ये एक उदीयमान अच्छे कवित हैं'' लिखा था। कुछ दिनों बाद रोजगार कार्यालय सतना से आपको साक्षात्कार के लिए एक पत्र मिला। साक्षात्कार ने कई प्रशिक्षित एवं योग्य उम्मीदवार की उपस्थिति के बावजूद आपका चयन जिला समाज सेवाक के पद पर होगया। जैसे ही आपका संस्कार केन्द्र सतना का भी प्रभारी बना दिया गया । इस केन्द्र में पढ़ने प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हरिजन बच्चे और महिलायें आपके कार्य व्यवहार से बहुत प्रसन्न रहते थे। जब आपको यह सूचना मिली कि समाज सेवक के पद समाप्त हो रहा है, इन सभी कर्मचारियों को बस्तर भेजा जायेगा तो आप बहुत चिंतित रहने लगे। कुछ दिन बात भोपाल कार्यालय से डिप्टी डायरेक्टर फतेवीर बहुतर साहब संस्कार केन्द्र सतना का निरीक्षण करने आये। निरीक्षण के दौरान संस्कार केन्द्र के विद्यार्थियों एवं महिलाओं ने ग्रामीण जी के कार्य व्यवहार की बहुत प्रशंसा की। उप संचालक महोदय ने जिला शिक्षा अधिकारी जी से पूँछा - यह कर्मचारी बाई कास्ट क्या है ? वर्मा जी ने बताया कि साहब यह तो बाई कास्ट ठाकुर ही है पर अपने कार्य व्यवहार से यह सिर्फ सोशन वर्कर है। जाते समय उपसंचालक महोदय ने कलेक्टर साहब से कहा कि आज से इस कर्मचारी को इनाम अवश्यक दीजियेगा। जब यह बात जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ग्रामीण जी को पता चली आपने कलेक्टर हरिशचन्द्र अग्रवाल जी से मिलने का अग्राह किया। कलेक्टर साहब से मिलकर आपने अपनी पारिवरिक एवं आर्थिक समस्या को सुनाते हुऐ इनमें में शिक्षक बनाये जाने का अनुरोध किया। कलेक्टर साहब ने उसी दिन जिला शिक्षा अधिकारी सतना को लिखकर दिया कि आपके यहाँ जहाँ भी शिक्षक का पद रिक्त हो वहाँ हमारे यहाँ के समाज सेवक देवीशरण सिंह की नियुक्ति करें।

इस प्रकार आपकी समाज सेवा एंव कार्यकुशलता के कारण आपका मन पद इनाम में मिल गया। शिक्षक पद पर आपकी प्रथम नियुक्ति एक मार्च सन् उन्नीस सौ निरसठ को शासकीय प्राथमिक शाला पिपरी केन्द्र शिवराजपुर तहसील नागौद में कर दी गई। यहाँ से आपका स्थानांतरण शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पूर्ण की। यद्यपि आप सहायक शिक्षक के पद पर पदस्थ रहे किंतु हिन्दी साहितय में आपकी विशेष रूचि एवं समझ के कारण आपसे हायर सेकेण्डरी की कक्षाओं में अध्यापन कार्य कराया जाता रहा है। संयोग से मैं और मेरे पिता श्री राजबली सिंह परिहार (देहदानी) आपके साथ उसी विद्यालय में उच्च श्रेणीा शिक्षक के पद लगभग चारा वर्ष तक कार्यरत रहे। इस दौरान मुझे आपसे हिन्दी साहित्य एवं समाज के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने का अवसर मिला इकतीस दिसम्बर सन् उन्नीस सौ पंचानवे को आप अपने पद से सेवा निवृत्त हो गये थे। हम सने मिलकर आपकी समारोह पूर्वक भाव-भीनी विदाई की थी।

7. प्रगतिशील लेखक संघ में ग्रामीण जी का योगदान :- यद्यपि ग्रामीण जी बचपन से ही कवितायें लिखने लगे थे किंतु आपने लेख को गीत एवं सही दिशा तब मिली जब आपकी मुलाकात शासकी उच्चतर माध्यमिक विषलय नागौद में पदस्थ शिक्षक री रामप्रसाद श्रीवास्तव 'प्रसाद', श्री रामखेलावन वर्मा (विनीत विक्रम बौद्ध), नागौद नगर के व्यवर एवं प्रसिद्ध कवि श्री धन्य कुमार जैन 'सुधेश' जी से संपर्क हुआ। सुधेश जी के माध्यम से ही आपका संपर्क सतना नगर के साहित्य का बन्धु श्री निर्मल जैन एवं नीरज जी से हुआ। सुधेश जी के निधन के बाद नागौद में 'सुधेश संगम' संस्था का गठन किश्या गया जिसके आप भी सदस्य रहे। श्री बिहारी लाल जी निगम (तत्कालीन प्रधानाध्यापक सिंह) ने सन् 1976 में आपको प्रगतिशील लेखक संघ इकाई सतना का सदस्य बनाया था। उस समय आपका परिचय सतना के प्रगतिशील साहित्यकारों जैसे डॉ0 कमला प्रसाद पाण्डेय जी, प्रमोद पाण्डेय जी एवं डॉ भगवान दास सफड़िया जी हो गया। आप सतना प्रलेश इकाई के संस्थापक सदस्यों में से थे।

प्रलेश के सदस्य बनने के बाद आपने वामपंथी साहित्य पढ़ना प्रारंभ कर दिया। वसुधा एवं पहल जेसी प्रगतिशील विचार धारा वाली पत्रिकाओं के आप नियमित पाठक बन गये। इसी बीच आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन जिला इकाई सतना का सदस्य भीा बना लिया गया था। वामपंथी सोच के प्रति आपकी प्रगाढ़ आस्था को देखकर देश के बड़े-बड़े दिग्गज साहित्यकार आश्चर्य में पड़ जाते थे।अपने एक संस्मरण में ग्रामीण जी लिखते है कि जब में अपनी एक पुस्त की भूमिका लिखवाने के लिये प्रख्यात कहानीकार श्री दूधनाथ सिंह से मिलने इलाहाबाद गया तो उन्होंने चर्चा के दौरान मुझसे पूंछा ''आप सिर्फ कक्षा चार तक ही स्कूल में पढ़े हैं। एमएम तक की सभी परीक्षायें प्राय: ही दी हैं, फिर अपनी यह सोच आप कैसे बना पाये हैं जो हमने विश्वविद्यालय में पढ़ाकर के पाया है।'' जबाव में ग्रामीण जी ने कहा अपनी इसी सोच के लिये मैं आप जैसे विद्वानों की संगति एंव उनकी पुस्तको के अध्ययन को ही जिम्मेवार मानता हूँ सतना प्रलेश इकाई में रहते हुए आपका सम्पर्क श्री तेज सिंह जी, प्रहलाद अग्रवाल जी एवं संतोष खरे जी से भी हो गया था। इस इकाई के वरिष्ठ सदस्य तेज सिंह एवं सफड़िया जी के न रहने के बाद यह इकाई कुछ शिथिल पड़ गई थी। इसका पुनर्गठन करने का कार्य आपको सौंपा गया था। आपने श्री संतोष खरे जी की अध्यच्ता में इस इकाई का पुनर्गठन किया। जब आपको रीवा संभाग का संयोजक नियुक्त कर दिया गया तब आपने क्रमश: सीधी, शहडोल, रीवा पन्ना एवं छतरपुर की प्रलेश इकाईयों का गठन करवाया। ग्रामीण जी के निर्देशन में ही नागौद इकाई का गठन एक फरवरी सन 1982 (उन्नीस सौ बयासी) को किया गया था। अपरिहार्य कारणों से नागौदा प्रलेश इकाई कुछ वर्षों तक भंग रही किन्तु अब वह पुन: सक्रिय हो गई है।

ग्रामीण जी के निर्देश में चलने वाली प्रलेश इकाई नागौदा मध्यप्रदेश की सबसे जीवंत इकाईयों में गिनी जाती थी। इस इकाई ने ग्रामीण जी के मार्गदर्शन में अनेक जिला स्तरीय प्रदेश स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक आयोजन किए हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

(1) प्रलेश इकाई नागौदा की स्थापना के एक वर्ष के अंदर ही पाँच-छ: मार्च 1983 को प्रथम संभागीय सम्मेलन का आयोजन ग्राम गंगवरिया (नागौद) में किया गया था। कार्यक्रम के दूसरे दिन विशाल राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें बाबा नागार्जुन, मुकुट बिहारी सरोज, रमेश

बघेलखण्ड का अध्यात्मिक केन्द्र लक्ष्मणबाग रीवा

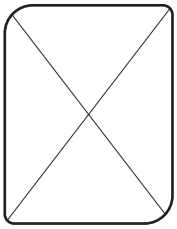

असद खान :- रीवा के इतिहासकारों में अपना अलग स्थान रखने वाले इतिहासकार सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. अख्तर हुसैन निजामी के प्रिय शिष्य रहे। उन्हीं की प्रेरणा से वे रीवा राज्य एवं बघेलखंड के इतिहास लेखन में प्रवृत हुए। इस कार्य में उन्हें रीवा राजघराने का भी सहयोग एवं समर्थन प्राप्त रहा है। राजघराने से उन्हें प्रचुर सामग्री लेखन के लिए प्राप्त हुई। अब तक उनकी हिन्दी एवं अंग्रेजी में 6 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है- 1. बघेलखंड की स्थापत्यकला, 2. बघेलखंड का खेल इतिहास, 3. रीवा राज्य की विदुषी महारानियाँ, 4. बांधवगढ़ एवं बघेलखंड के अन्य पर्यटन स्थल, 5. Historic Monuments of Baghelkhand, 6. The Monuments and wildlife in Baghelkhand.

रीवा राज्य के बघेल नरेश धार्मिक प्रवृत्ति के रहे ! उन्होंने अपने राज्य में भीतर तथा देश के प्रमुख धार्मिक स्थानों में भी मंदिर एवं धर्मशालाऐं बनवायी। महाराजा विश्वनाथ सिंह जूदेव द्वारा रीवा में लक्ष्मणबाग धार्मिक केन्द्र बनाये जाने का एक बड़ा दिलचस्प प्रसंग है।

महाराजा विश्वनाथ सिंह जूदेव (1833-54 ई.) के युवराज पुत्र बाबू रघुराज सिंह 16 साल की अल्पायु में ही प्रेत बाधित हो गये। उनकी तबियत दिन प्रति दिन गिरती जा रही थी। सैकड़ों वैद्य-हकीमों द्वारा इलाज किया गया पर कोई फायदा न हुआ। और उन्हें लगने लगा था कि उनके युवराज पुत्र जीवित नही बचेंगे। तब तक युवराज रघुराज सिंह ने किसी से गुरूमंत्र भी नही लिया था। तब महाराज ने सोचा कि, उनके बेटे का जीवन तो बचेगा नही, उन्हें गुरूमंत्र ही दिलवा दिया जाये।

महाराजा विश्वनाथ सिंह ने उत्तर प्रदेश में रहने वाले दक्षिण भारत के योग्य संत लक्ष्मी प्रपन्नाचारी जी महाराज का चयन अपने मरणासन्न पुत्र को गुरूमंत्र दिलावने तथा प्रेत बाधा दूर करने के लिए किया। स्वामी लक्ष्मी प्रपन्नाचारी जी उर्फ ख्यालीदास महाराज रीवा आये और युवराज रघुराज सिंह को देखते ही कहा कि युवराज को तो किसी खतरनाक प्रेतात्मा ने जकड़ रखा है। यह जानकर महाराज ने स्वामी जी से मुक्ति दिलवाने का आग्रह किया। स्वामी जी ने स्वत: असमर्थता बताकर अपने प्रेत बाधा मेरे गुरू जो ब्रम्हशिला में रहते हैं, उनका नाम सुझाया। महाराज विश्वनाथ सिंह, स्वामी लक्ष्मी प्रपन्नाचारी के साथ सन् 1841 ई. में स्वयं ब्रम्हशिला जाकर स्वामी मुकुन्दाचारी जी महाराज को बुला कर रीवा लाये।

स्वामी मुकुन्दाचारी जी ने रीवा किले में युवराज रघुराज सिंह को कर रीवा के आसपास उपयुक्त स्थान की पड़ताल की। बिछिया नही के किनारे जहां लक्ष्मणबाग स्थापित है। वही उपयुक्त स्थान लगा। उस समय पहले जंगल था। स्वामी मुकुन्दाचारी जी, आज ने अपने शिष्य स्वामी लक्ष्मी प्रपन्नाचारी जी व अन्य शिष्यों के साथ प्रेत बाधा दूर करने की तैयारी की। युवराज रघुराज सिंह को उस स्थान पर लाया गया। जहां स्वामी जी को देखते ही प्रेत अपनी सच्चाई उगलने लगी। स्वामी मुकुन्दाचारी जी महाराज ने अपनी मंत्रों की शक्ति से कई दिन उसी स्थान पर रह कर युवराज रघुराज सिंह की प्रेत बाधा दूर कर दी। महाराज विश्वनाथ सिंह ने उन्हीं से युवराज रघुराज सिंह को गुरूदक्षिणा दिलवाई तथा उन्हें रीवा में ही रहने का अग्रह किया। स्वामी मुकुन्दाचारी जी महाराज रूकने का तैयार नहीं थे। परन्तु महाराज विश्वनाथ सिंह जूदेव के अत्याधिक निवेदन के बाद वे रूकने को तैयार हुऐ। जिनके लिए उसी स्थान पर एक भवन (आश्रम) बनवाया एवं उसी समय 1841 ई. में अपने कुल देवता लक्ष्मण जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की। तब से यह धार्मिक स्थान लक्ष्मण बाग के नाम से जाने जाना लगा।

स्वामी मुकुन्दाचार्य जी बड़े योग्य संत थे। दक्षिण भारत वैष्णव संप्रदाय रीवा नरेश ने भी उन्हें अपना गुरू बनाकर वैष्णव संमप्रदाय दीक्षित हो गये। इसके पहले वो कबीर पंथी थे्। स्वामी जी को राजगुरू घोषित कर दिया गया दूसरा उदाहरण महाराजा रघुराज सिंह जी के राज्यकाल का है। महाराज एक बार जगन्नाथपुरी भगवान जगन्नार्थ जी का दर्शन करने के लिए पुरी गये थे। उस वक्त मंदिर का पट बंद हो चुका था। अत:उनके आग्रह करने के बाद भी जब मंदिर के द्वार नहीं खुले तब तक एक पैर से खड़े होकर हठ योग करने लगे तथा महाराज

रघुराज सिंह ने उसी समय जगन्नाथ शतक की रचना की। जैसे ही जगन्नाथ शतक की रचना पूरी होती है, मंदिर का पट अचानक अपने आप खुल गया तब उन्होंने हठ योग छोड़कर भगवान के चरणों में गिर पड़े। महाराज ने जगन्नार्थ पुरी से ही जगन्नाथ स्वामी, बलदाऊ, सुभद्रा जी की प्रतिमा लाकर लक्ष्मण बाग में मंदिर में स्थापना की थी। तथा मंदिर के राग-भोग के लिए हजारों एकड़ के कई गांव चढ़ा दिये। महाराज रघुराज सिंह की गहरवारिन महारानी साहब ने एक मंदिर, महाराजा गुलाब सिंह की बड़ी महारानी सूरज कुंवर बाई जी लाल ने तथा महाराज वेंकट रमण सिंह जूदेव की बेटी दादू साहब सुर्दशन कुमारी (महारानी बीकानेर) ने भी एक स्व मंदिर का निर्माण कराया।

महाराजा वेंकटरमण सिंह जूदेव (1880-1918 ई.) की परिहारिन महारानी कीर्ति कुमारी भगवान कृष्ण की परम उपासक थी उन्होंने लक्ष्मण बाग में भगवान कृष्ण का खूबसूरत मंदिर का निर्माण कराया।

इस पूरे क्रम में भगवान विष्णु का एक भव्य मंदिर महाराज गुलाब सिंह जूदेव (1918-1946 ई.) द्वारा कराया गया। एक बार वे दक्षिण भारत की धार्मिक यात्रा मे गये थे। उन्हें लगा कि तीन धामों के देवता तो लक्ष्मणबाग में विराजे हुऐ है, केवल भगवान विष्णु जी की मंदिर नही है। अत: दक्षिण भारत से वापस आकर उन्होंने सन् 1927 ई0 में अपने राजगुरू तत्कालीन महंत स्वामी बद्री प्रपन्नाचारी जी महाराज से बात कर मंदिर निर्माण की मंत्रणा की। इसके लिए बहुत योग्य मूर्तिकार की आवश्यकता थी, जो भगवान विष्णु के रूप को पाषाण में बना सके। उनका सुझाव था कि कच्छप तैर रहे समुद्र में शेषनाग अपना फंदा डाले हो और उसके ऊपर शेषनाग का विशाल फन फैला हो। कच्छप ब्रम्हाण्ड का भार उठाये हों। रीवा राज्य के योग्य मूर्तिकार बिछिया निवासी मोहम्मद खाँ शिल्पकार को नियुक्ता जाकर उन्हें सब समझा दिया। दूसरे दिन से शिल्पकारी शुरू कर दी गई, लेकिन कुछ समय के बाद में दो दशक तक इसका काम बंद रहा। कारण स्वामी स्वामी बद्री प्रपन्नाचारी जी की किसी बात पर महाराजा गुलाब सिंह जूदेव की तकरार हो गई थी। स्वामी जी नाराज होकर दक्षिण भारत चले गये। फिर स्वयं महाराज गुलाब सिंह उन्हें मना कर रीवा ले आये एवं फिर 1950 ई. से काम प्रारम्भ हुआ जो 1954 ई. में बनकर तैयार हो गई। इसी वर्ष रीवा नरेश महाराजा मार्तण्ड सिंह जूदेव द्वारा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की गई। शिल्पकार मोहम्मद खाँ को सम्मानित किया गया। इस मंदिर की शिल्पकला अद्भुत है। इस मंदिर के निर्माण के साथ ही लक्ष्मण बाग में चारोधाम के देवता विराज चुके थे एवं यह रीवा राज्य का एक प्रमुख धार्मिक एंव अध्यात्मिक केन्द्र बन चुका था।

इस (धर्म स्थल) के निर्माण का एक उद्देश्य यह भी था कि जो लोग आर्थिक आभाव के कारण चारो-धाम की यात्रा नहीं कर पाते हैं, वे चारो-धाम के देवाताओं का यही दर्शन कर लें। यहां रहने वाले महंत का कालखण्ड इस प्रकार रहा -

1. स्वामी मुकुन्दाचारी जी महाराज (1841-1854 ई0)
2. स्वामी प्रपन्नाचाी जी महाराज (1854-1881 ई0)
3. स्वामी जर्नादना दास जी महाराज (1881-1919 ई0)
4. स्वामी बद्री प्रपन्नाचारी जी महाराज (1923-1957 ई0)
5. स्वामी राघवाचारी जी महाराज (1960-1982 ई0)
6. स्वामी हरिवंशाचारी जी महाराज को 1983 ई0 में महाराजा मार्तण्ड सिंह जूदेव ने महंत के तौर पर प्रतिष्ठित किया था।

लक्ष्मण बाग आज भी रीवा राज्य के लोगों की आस्था का केन्द्र है। यहाँ के लोग धार्मिक यात्रा पूरी कर वापस लक्ष्मण बाग आते हैं। यहाँ चारो-धाम से लाये गये जल छिड़कते हैं, भगवान का दर्शन करते है। उसके बाद रीवा किला जा कर रीवा महाराज का दर्शन करने की परम्परा रही जो कमोवेश आज भी कायम है।

बघेलखण्ड राज्य की समृद्ध साहित्य परम्परा एवं उनके वाहक

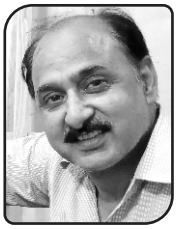

सुधीर सिंह परिहार :- उम्र 61 वर्ष, कला गुरु, मूर्ति एवं चित्रकला, ग्राफिक डिजाइन, नाट्य निर्देशक। देश की कई प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। सम्प्रति आर्ट पाइंट रीवा का संचालन।

हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने हिन्दी साहित्य की लगभग सहस्त्र वर्षों की दीर्घ कालीन परम्परा को तीन काल में विभाजित किया है- आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल।

तदनुसार

(1) आदिकाल 1000-1500 ई0

(2) मध्यकाल 1500-1800 ई0

(3) आधुनिक काल1800 ई0 से प्रारंभ।

विषयान्तर्गत अनुशीलन पर तथ्य उजागर होता है कि उक्त परंपरा का प्रारंभिक है मध्यकाल और रचना है 'दुर्गादास महापात्र कृति अजीत फते नायक रयसा। रचना काल कूति में उधृत नहीं है। आंकलन है

(क) रायसा रासो का संक्षिप्त संस्करण एवं शैली के रूप में दुर्गादास महापात्र व्दारा मूल घटना के कुछ दिनो बाद लिखा गया। इसका प्रकाशन और भी बाद में हुआ।

(ख) इससे जान पड़ता है कि ग्रंथ रचनाकाल युद्ध के दो साल के हेर फेर का है।

(ग) उक्त युद्ध 4 दिसम्बर सन् 1796 में हुआ था जो नैकर्हाइ युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

कवि दुर्गादास ने 'अजीत फते नायक रायसा की रचना हिरान्या वंश के राजाराम की आज्ञा से की। ग्रंथालोचन - बीर रस प्रधान रासों परम्परा से भिन्न इस ग्रंथ में डिंगल तथा ब्रज मिश्रित राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है, किन्तु क्रियापद बृज भाषा के हैं। अजीत फतेह का स्थाई भाव उत्साह है। रौद्र वीभत्स, अदभुत, भयानक का चित्रण, क्रोध, भय, विस्मय, जुगुप्सा जैसे स्थाई भाव परिपुष्ट रूप में मिलते हैं तथा अपुष्ट वीर रस का परिपोषण भी करते हैं।

एक बात छूटी जा रही थी, वजह महत्वपूर्ण रचनाओं का प्रभाव ही हो सकता है। राजा रामचन्द्र (1555-92 ई.) जो गहोरा का गौरव बढ़ा रहे थे 1563 ई. में बांधवगढ़ आये, इसे राजधानी बनाकर इसी नाम से रियासत कायम की। **1555 ई. से 1562 ई. तक ख्यात कलाकार तानसेन उनके दरबार में रहे।** उन्ही के दरबार में **कवि माधव उरव्य** भी रहे जिन्होने (1556 ई.) प्रशस्यात्मक महाकाव्य वीर भानूदय की रचना की। रामचन्द्र के पुत्र ने सन 1591 में इस ग्रंथ की प्रतिलिपि कराई थी।

रायल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता की पाण्डुलिपि क्र. 3109, 'रामचन्द्रयश: प्रबन्ध को जतीन्द्र विमल चैधरी ने सन 1946 को प्रकाशित किया। अकबर से कालिदास की उपाधि पाने वाले **कवि गोविन्द भट्ट ने** यह प्रशस्ति राजा रामचन्द्र को लक्षित कर लिखी है। इन्हे शाही कवि' **अक्कबरीय कालीदास गोविन्द भट्ट** कहा जाता है। इन्होने 'वीरभद्र चम्पू भी लिखा है। (प्रो. अख्तर हुसैन निज़ामी: अजीत फते नायक रायसा बघेलखण्ड का आल्हा पृ. 227)

ख्यात कवि विश्वनाथ जी की चैथी पुस्त में **कवि नरहरि महापात्र जी** हुये जो अकबर के दरबार में रहे। किन्हीं कारणों से बांधवगढ़ आये थे जो अमरकंटक चले गये उनके पुत्र हरिनाथ तत्कालीन राजा रामचन्द्र के दरबार में आये ।

राजा रामचन्द्र के पुत्र वीरभद्र देव हुये (सन1554) सन् 1577 में इन्होने काम शास्त्र पर 'कन्दर्पचूड़ामणि ग्रंथ की रचना की। इसे सन 1908 में महाराज व्यंकटरमण सिंह ने प्रकाशित कराया जिसका सम्पादन' रीवा राज्य दर्पण के लेखक जीतन सिंह ने किया। पं. सूर्यप्रसाद ने इसकी हिन्दी टीका(वेंकट रहस्य) लिखी। सन 1926 में यह संस्कृत-पुस्तकालय लाहौर द्वारा भी प्रकाशित किया गया। वीरभद्र का राज्यकाल अल्प समय का था। इनकी अन्य रचना 'दशकुमार-पूर्वकथा-सार पाण्डुलिपि कलकत्ता में सुरक्षित है। पद्मनाभ मिश्र कृत **'वीरभद्रदेव चम्पू'** पद्मनाभ मिश्र द्वारा सन् 1577 में रची गई। (डॉ. राजीवलोचन अग्नीहोत्री)

सन् 1668 में **कवि रूपणि मिश्र** ने महाराजा भाव सिंह की आज्ञा से **'बघेलवंश वर्णनम'** रचना जो सोमदेव भट्ट के कथा सरित्सागर की पाण्डुलिपि से प्राप्त की गयी थी, शुद्ध प्रति तैयार की। कवि रूपणि मिश्र ने महाराजा भाव सिंह की प्रषसित में 100 श्लोक स्वयं रच कर ग्रंथ के अन्त में जोड़ दिए। इस ग्रंथ की प्रतिलिपि कलकत्ता में सुरक्षित है।

कवि हरिनाथ की छठवीं पीढ़ी में कवि शिवनाथ राम हुये। ये गंगा तट असनी नामक गाँव में निवास करते थे, रीवा आये। महाराजा अजीत सिंह ने इन्हें अपने दरबार में राज कवि बनाया और सिलपरी गाँव दिया। संभव है कि इनके वंश परम्परा के दुर्गादास महापात्र हैं, क्योंकि नरहरि दास जी के पितामह **महाकवि धीरधर महापात्र** हैं। जिन्हें महापात्र की पदवी आलाउद्दीन से मिली थी। **धीरधर** संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ **'साहित्य दर्पण'** के रचयिता थे। इनके वंशज ही सिलपरी ग्राम के पर्वाइदार हुए और महापात्र या भट्ट कुल नाम से जाने जाते हैं।

शिवनाथ राम जी के पुत्र **अजबेश राम महापात्र** हुये और वे महाराजा विश्वनाथ सिंह तथा महाराजा रघुराज सिंह के दरबार में रहे। संस्कृत हो या हिन्दी साहित्य, रीवा का योगदान पुष्कल और महान है। वैसे देखा जाये तो महाराजा जयसिंह से राजवंश की साहित्य परम्परा चलती है। **महाराजा जयसिंह ने स्वयं बीस पुस्तकों की रचना की।** इनमें हरिचरित चंद्रिका, तथा कृष्ण तरंगिनी सुन्दर कृतियाँ हैं और उस भक्ति उन्मेष से लिखी गई हैं जो भक्तिकाल की प्रबल प्रवृत्ति रही है।

हिन्दी के प्रथम नाटक का मान **''आनन्द रघुनन्दन''** को मिला। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और कुँवर सूर्यबली सिंह ने तमाम स्थितियाँ स्पष्ट की है कि यह हिन्दी का प्रथम नाटक है। आंनन्द रघुनन्दन के रचयिता है **महाराज विश्वनाथ सिंह इनका राजकाल 1833 ई. से** 1854 ई. तक रहा। विश्वनाथ सिंह समन्वयवादी उन कवियों की श्रेणी में आते हैं जिसमें मूर्धन्य कवि गोस्वामी तुलसीदास है। इनके द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रंथ कहे जाते हैं - अष्टयाम आह्निक, गीता रघुनन्दन शतिका, आनन्द रघुनन्दन (नाटक), उत्तम काव्य प्रकाश, रामायण, गीता रघुनन्दन प्रमाणिक, सर्व संग्रह, कबीर के बीजक की टीका, विनय पत्रिका की टीका, रामचन्द्र की सवारी, भजन, पदार्थ, धनुर्विध, परमतत्व प्रकाश, आनन्द रामायण, पर धर्म निर्णय, शानि शतक, वेदान्त पंचक शतिका, गीतावली पूर्वाध, ध्रुवाष्टक, उत्तम नीति चंद्रिका, अबोध नीति, पाखण्ड खण्डिनी, आदि मंगल, बसंत, चैतीसी, चौरासी रैमनी, ककहरा, शब्द, विश्व भोजन प्रसाद, ध्यान मंजरी, विश्वनाथ प्रकाश, परम तत्व, संगीत रघुनन्दन। इनका अधिकांश सहित्य उपदेषात्मक और वर्णनात्मक है।

मध्य युगीन हिन्दी सहित्य के प्रवाह में महाराजा विश्वनाथ सिंह नही बहें, उन्होंने नाटक आनन्द रघुनन्दन की रचना की। कुँवर सूर्यबली सिंह लिखते हैं यदि यह रचना काल के अन्तिम भाग में न लिखा गया होता तो मध्यकाल रसात्मक अभिव्यक्ति की एक सशक्त सरणि - **श्रव्य काव्य** से वंचित रह जाता, उसकी संपन्नता बाधित हो जाती। अत: विश्वनाथ सिंह ने मध्यकालीन साहित्य को अनुपम अद्वितीय रचना से संवारा है। **''आन्नद रघुनन्दन''** का रचना काल ग्रन्थ में अंकित नही है। विन्ध्य प्रादेशिक सहित्य सम्मेलन रीवा द्वारा प्रकाशित पत्रिका के सम्पदिकीय मे निर्माण तिथि का निर्धारण हुआ है,- आनन्द रघुनन्दन नाटक की रचना सम्वत 1800 से 1911 के मध्य कभी हुई है। एक सौ ग्यारह वर्षों का अन्तराल मन को उद्वेलित किये रहा। खोज-बीन करते जानकारी मिली आनंद रघुनंदन हस्तलिखित पाण्डुलिपि से - **''इति श्री महाराज कुमार श्री बाबू साहब विश्वनाथ सिंह जूदेव कूति आनन्द रघुनंदन नाटक सम्पूर्ण समाप्त शुभमस्तु श्री राम, सुदि सुक्रे वौ संवत 1888 (सन 1831) को मुकाम बिजौरी बैठ लिखों।''** तदानुसार इस बात की पुष्टि होती है कि विश्वनाथ सिंह ने आनंद रघुनंदन अपने राजकुमार काल में कभी लिखा जिसकी प्रतिलिपि 1831 ई. में किसी ने किया। उनका जन्मकाल है, तिथि बैशाख शुक्ल 14 विक्रम संवत 1848 (1789 ई.) अत: आनन्द रघुनन्दन का रचना काल ई. 1831 के आस-पास

होना विदित होता है। आनंद रघुनन्दन नाटक हिन्दी एवं संस्कृत दोनों सूचियों में प्राप्त होता है किन्तु यह सत्य है कि पहले हिन्दी में ततपश्चात संस्कृत अनुवाद हुआ। महाराजा विश्वनाथ सिंह ने सगुण और निर्गुण की एक वाक्यता प्रतिपादित की।

विश्वनाथ युग में सूफी संत शाह नज़फ अली खाँ का जिक्र आता है, रायबरेली के पास सलोन गाँव में जन्म लिया जहाँ के 'पदमावत रचनाकार मलिक मोहम्मद जायसी हैं। खाँ साहब फारसी के ज्ञाता थे और फारसी की एक रचना रीवा की तुरकहटी में बैठ कर लिखी थी' प्रेम चिंगारी।

महाराज जय सिंह कृष्णोंपासक थे और पुत्र महाराज विश्वनाथ सिंह रामोपासक हुए। महाराज रघुराज सिंह कृष्णोंपासक सिद्ध होते हैं। महाराज रघुराज सिंह का जन्म सन 1823 ई. कार्तिक कूष्णपक्ष चार दिन गुरुवार को हुआ। कवि युगलेश ने कहा है''**जस प्रताप मंदिर कियो, विश्वनाथ महाराज, तापर कलसा ताहिको धरयो भूप रघुराज।** हालाँकि नींव तो महाराज जय सिंह ने ही रखी और माहौल का भी प्रभाव पड़ा, क्योंकि राज दरबार में कई विद्वान कवि आश्रय पाते थे। इनकी रचनाओं को देखा जाय और देखिये कि कितना विशिष्ट, वृहत और विशद है। समीक्षा में आचार्य कुँवर सूर्यबली सिंह ने कहा कि'' महाराज रघुराज सिंह ने जिस मनोयोग से 'रामस्वयंबर में राम कथा गाई है उसी उन्मेश में' रुकिमणी परिणय और आनन्दाम्बुनिधि में कृष्ण कथा कही है। इस प्रकार उन्होने सिद्धांत और व्यवहार को एक कर दिया है जो मध्यकालीन कवियों में शायद ही कोई कर सका हो।

आनन्दाम्बुनिधी के बारे में बघेली गद्यकार रविरंजन सिंह ने लिखा है- इस ग्रंथ से हिन्दी की एक बड़ी छति की पूर्ति हुई है। इसके पूर्व हिन्दी प्रेमी श्रीमद्भागवत की कविता का रसास्वादन करने से वंचित रह जाते थे। **महाराज रघुराज सिंह** रीतिकालीन प्रवाह में नहीं बहे। देखा जाय तो महाराज रघुराज सिंह मध्यकाल में शुरुआत से अन्त तक छाये रहे। सूरदास एवं तुलसीदास ऐसे दो चार कवि ही होंगे जिनके लिये काव्य साधन और साध्य दोनो था। रघुराज सिंह भी इन्हीं में आते हैं, ये भक्त भी हैं और साहित्यकार भी। इनकी रचनायें कुछ एक को छोड़ कर, शुद्ध धार्मिक है। 'गंगा अष्टोत्तर शतक साहित्यक स्त्रोत है और इसके जोड़ की एक ही रचना है-पदमाकर की ख्याति को उजागर करने वाली गंगालहरी।

प्राप्त सूचियों के अनुसार महाराज रघुराज सिंह के सर्व ग्रंथों की संख्या 56 तक पहुँचती है। विद्वानों के मत से वह 28 से अधिक नहीं कही जाती है। रघुराज विलास लोक साहित्य का अच्छा उदाहरण है। तुलसीदास जी के रामलला नहछू और जानकी मंगल आदि का जो स्थान है लोक साहित्य में, वही स्थान है रघुराज विलास का। उनके बनरा, बधाई, होली आदि के पद गाँवों में आज भी सुर्नाइ देते हैं।

महाराज रघुराज सिंह के **राजकवि अजबेस राम जी** रहे, जो फारसी और ब्रज के अच्छे ज्ञाता रहे। कवि अजवेश मध्यकाल को वीर काव्य देने वाले प्रसिद्ध कवियों में से थे। कवि अजवेश भट्ट (महापात्र) ने बान्धव गद्दी के महाराजाओं की वंशावली लिखी है।

कवि अजबेश के पुत्र **कवि सुखराम जी ब्रज** एवं संस्कृत के ज्ञाता थे और व्याकरण शास्त्र के पूर्ण पणिडत। ये महाराज रघुराज सिंह के दरबार में रहे। ये ब्रज भाषा में सुन्दर रचना करते थे और कविता में अपना नाम अन्य कवियों की तरह नहीं रखते। द्विवेदी युगीन कवि-त्रयी हैं मैथिली शरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्यय हरिऔध और ठा. गोपाल शरण सिंह। रीवा के नईगढ़ी इलाकेदार **ठा. गोपाल शरण सिंह** का जन्म सन् 1891 में हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की कृपा से आपने साहित्य में विशेष स्थान बनाया। खड़ी बोली को सजीव, मधुर और सशक्त बनाने वालों में आपका विशेष स्थान है। राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलनों में आपने अनेक स्थानों पर अध्यक्षता की। आपने उच्चकोटि का साहित्य सृजन किया है - माधवी, कादम्बिनी, ज्योतिष्मती, संचिता, सुमना, सागरिका, ग्रामिका, आधुनिक कवि, विश्वगीत, प्रेमान्जली, शान्ति-गीत, मीरा और जगदालोक जो पुरष्कृत हुई। माधवी घनाक्षरी छन्दों में सरस व माधुर्य गुणों से भरपूर रचनाओं का संग्रह है। आपकी कविताओं में सामाजिक समस्याओं का निरूपण एवं जन जागरण का स्पष्ट स्वर है जो काव्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

रीवा की धरती सदा साहित्यकार प्रसूता रही है और यहाँ के राजाओं द्वारा पोषित। सन् 1880-81 में उर्दू लेखक **मौलवी रहमान अली ने** तवारिख-ए-बघेलखण्ड लेखन की शुरुआत की। **महाराजा व्यंकटरमण सिंह ने हिन्दी को विशेष महत्व दिया और सन् 1895 में हिन्दी को राज्य भाषा घोषित किया था।** महाराजा व्यंकटरमण सिंह के समय इस क्षेत्र (आज का मध्य प्रदेश) का प्रथम

स्वतंत्र राष्ट्रीय पत्र भारत भ्राता सन् 1914 के बाद महाराजा व्यंकटरमण सिंह के समय में निकला। जिसके सम्पादक श्री बलदेव सिंह थे। 17 पंडित मदन मोहन मालवीय ने इस पत्र की **रारूकितना विषिष्ट राष्ट्रीय** भावना और निर्भीकता की बहुत प्रशंसा की लेकिन अंग्रेज सरकार ने पत्र की प्रतियाँ और प्रेस जब्त कर लिया।

1918, श्री ब्रजरत्न भट्टाचार्य के सम्पादन में शुभचिन्तक(सप्ताहिक) प्रकाशित होने लगा। सन 1920-21 के रीजेन्सी काल में सारे पत्रों का प्रकाशन बंद करा दिया गया। सन 1930 से प्रकाश महाराजा गुलाब सिंह की प्रेरणा से प्रकाशित होना प्रारंभ हुआ इसके सम्पादक रहे श्री नरसिंह राम शुक्ल, म. अर्जुन सिंह, केशव प्रसाद चतुर्वेदी। गुलाब सिंह के सत्ता से हटने के बाद यह अनियमित रहा। श्री बलवन्त सिंह की प्रेरणा से कुँवर सूर्यबली सिंह एवं यादवेन्द्र सिंह के सम्पादकत्व में सहित्यिक मासिक पत्रिका बान्धव प्रकाशित हुई लेकिन शुद्ध साहितियक होने की वजह से अल्प जीवी रही। श्री जगमोहन निगम भी इस पत्रिका से जुड़े हुए थे। इस क्षेत्र की पत्रिकाओं में कुँवर सूर्यबली सिंह ने सम्पादकीय लेखन और साहितियक समीक्षा की शुरुआत की।

कवि सुखराम जी के पुत्र महापात्र सीतल प्रसाद शीतलेश महाराज व्यंकटरमण सिंह एवं महाराजा गुलाब सिंह के दरबार के राजकवि रहे। आप ब्रज भाषा साहित्य के पणिडत थे और उन्होने गुलाब गौरव ग्रंथ लिखा जिसे 'गुलाब प्रकाष' भी कहा जाता है।

शीतलेश जी के पुत्र ब्रजेश जी ने साहित्य शास्त्र का गहन अध्ययन किया। आपका जन्म सन 1871, सिलपरी ग्राम रीवा में हुआ। आपकी गणना ब्रज के आचार्य कवियों में की जाती है। आपके द्वारा रचित ग्रंथों में रमेश रत्नाकर, माधव विलास, विरह-वाटिका, सोरठ शतक, अंकार निर्णय, रस रसांग-निर्णय, शान्त शतक, श्रृंगार-शिरोमणि, मोहन चरित्र माला, विश्वनाथ शरण भूषण, ब्रजेश विनोद हैं।

बख्शी हनुमान प्रसाद जी का जन्म 1872 ई. में हुआ। आपने साहित्य सरोज नामक एक अंकार ग्रंथ की रचना की। आप हिन्दी के अलावा उर्दू और फारसी के ज्ञाता थे। बघेलखण्ड की धरती साहित्यकारों से अकूत भरी रही है, मेरा दुर्भाग्य है कि अध्ययन के दौरान स्वतंत्रता पूर्व के कई कवियों के नाम जानकारी में आए लेकिन उनके साहित्य के पुण्य प्रसाद से वंचित रहा।

श्री गोविंद प्रसाद पाण्डेय जन्म सन 1874। आप संस्कूत, उर्दू और फारसी के ज्ञाता थे। **श्री भगवत प्रसाद, कवि राधिकेश जी, कवि मधुर जी, श्री हरिवंश प्रसाद श्रीवास्तव। कवि रामाधीन लालजी खरे** - रीतिकाल की परंपरा के सफल कवि थे और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया, लगभग 40 ग्रंथों की रचना की। स्वतंत्रता पूर्व काल में आप बहुत चर्चित व प्रतिष्ठित साहित्य सृजक रहे। आप अपनी काव्य प्रतिभा के कारण ओरछा राजा के राजकवि हुए। इसी क्रम में अभी और साहित्यकार हैं जैसे आचार्य केशव के वंशज **श्री श्याम सेवक मिश्र, कप्तान सम्पत कुमार सिंह, श्री बज्रपाणि सिंह पविपाणि, कप्तान यादवेन्द्र सिंह, कवि मनोहर सिंह, लाल महावीर सिंह बघेल, सरदार शत्रुसूदन सिंह, कवि हरषरण शर्मा शिव, श्री रामभद्र गौड़, श्री माधव प्रसाद और पणिडत चन्द्रशेखर शर्मा।** पण्डित चन्द्रशेखर शर्मा का जन्म सन 1894 को रायपुर कर्चुलियान रीवा में हुआ। आपकी रचनायें कई बार पुरस्कूत हुईं। **कवि शेषमणि शर्मा मणि रायपुरी** आपके पुत्र हैं। **कवि लाल महाबली सिंह बघेल** की गांधी गौरव रचना प्रकाशित हुई है। कवि परशुराम जी पाण्डेय काफी प्रसिद्ध हैं। आपका बांधव झण्डागान रीवा राज्य के सभी पाठशालाओं में गाया जाता था और वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जावें, इन्हीं की रचना मानी जाती रही है लेकिन आजकल पत्रिका अंक नवंबर 2010 में इस कविता के कवि मुरारीलाल शर्मा बालबंधु का उल्लेख है। इनकी 'हरिकीर्तन', 'साकेत पथ' एवं 'काव्य कलिका' है। **कवि अम्बिका प्रसाद भट्ट अम्बिकेष:** आपकी कविताओं में वीर रस और राष्ट्रप्रेम का स्वर प्रधान है। सन् 1941 में कविता संग्रह ज्योति प्रकाशित हुई। **श्री लखनप्रताप सिंह उरगेश:** सन् 1916 में जन्म हुआ, उल्कापात, आभा, प्रसाद, अभिनयशाला एवं मानस परिचय आपकी रचनायें हैं।

श्री भारत सिंह बघेल: जन्म सन् 1905 ग्राम महसुआ रीवा में हुआ। आपकी 'विन्ध्य वैभव', 'बान्धव गान', 'देवतालाब महात्म्य', और 'विन्ध्य' के प्राचीन ग्रंथ आदि हैं।

हिन्दी जगत में 'मिश्रबंधु' समान रीवा में मान्य रहे हैं। गद्यकार बंधुत्रय **लाल कृष्णवंश सिंह, लाल भानु सिंह और लाल दयावान सिंह,** साहित्य की हर विधाओं में पारंगत रहे हैं। समीक्षा विधा की पहचान बनाने वाले रहे हैं कुँवर सूर्यबली सिंह। इन्होने गद्य साहित्य को विभिन्न पाठयक्रमों तक पंहुचाया है।

कुँवर सूर्यबली सिंह परिहार का जन्म सन 1906 ग्राम रायपुर कर्चुलियान, रीवा में हुआ। प्रो. आदित्यप्रताप सिंह ने हंस की उड़ान में लिखा है सूर्यबली सिंह ने न तो विश्वनाथ सिंह, रघुराज सिंह, ठा. गोपाल शरण सिंह को बुर्जुआ कहकर खारिज किया है न दिनकर न अज्ञेय और न मुक्तिबोध की ही उपेक्षा की है – यहाँ तक कि गद्य लेखकों और आंचलिक कवियों पर भी मौखिक और लिखित रूप में साहित्यिक अनुशीलन करते रहे हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और सूर्यबली सिंह की दृष्टि और समीक्षा सृष्टि ऐसी निर्जीवता से ग्रस्त नहीं है। निसंदेह वे आचार्य शुक्ल के उत्तराधिकारियों में से एक हैं, उनका दोष केवल यह है कि वे काशी छोड़ रीवा चले आये। आपने आचार्य लाला भगवान दीन, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य केशव प्रसाद मिश्र जैसे दिग्गजों से शिक्षा प्राप्त की। सन 1936 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर किया।

बघेलकाल राज्य विलियन सन् 1948 तक के रीवा राज्य में साहित्य के प्रसिद्ध और भी हस्ताक्षर हैं। हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के ज्ञाता, **इतिहासकार प्रो. अख्तर हुसैन निज़ामी** जिन्होने इतिहास के धुंधलाये आइनों को साफ किया है। सन 1919 में रीवा राज्य दर्पण के लेखक **श्री जीतन सिंह,** रीवा राज्य का सैनिक इतिहास (सन 1937) लेखक– **लाल जनार्दन सिंह** और **गुरू रामप्यारे अग्निहोत्री** रीवा राज्य का इतिहास एवं प्रकाशित काव्य ग्रंथ 'प्रलाप'।

महाराज व्यंकटरमण सिंह के दरबार में **झुरवा अहीर** मौजा देवखर त्यौंथर तहसील रीवा ने नैकर्हाइ केर बिरहा सुनाया था जो शायद लिखित तो नहीं पर बहुत चर्चित हुआ। गद्य साहित्य में संख्या कुछ कम नहीं थी, **श्री सिद्धविनायक द्विवेदी(उपन्यासकार),** कथा साहित्य के शिल्पी रहे हैं **लाल यादवेन्द्र सिंह** माड़ौ रीवा। **कवि कुँवर सोमेश्वर सिंहः** जन्म सन 1910, आपके काव्य ग्रंथ हैं– 'रत्ना', 'दृगजल', सरोज और खुसरो। कवि सोमेश्वर सिंह सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि ठा. गोपालशरण सिंह के सुपुत्र हैं।

बैजनाथ प्रसाद बैजू : जन्म सन 1910 को हुआ। आपका रचना काल सन 1935 से प्रारंभ होता है। इनकी सूक्तियों का एक संग्रह ''बैजू की सूक्तियाँ'' के नाम से सन 1940 को प्रकाशित हुआ। कुँवर सूर्यबली सिंह ने बैजू को उन गिने चुने कवियों में माना है जो सामान्य भाषा को अपना कर अपनी आवाज सर्व सामान्य तक पंहुचाने वाले हैं। रिमहीं (बघेली) की यह रचना भाषा की सशक्तता और छन्द चयन के कारण विशेष है। कवि ने अपने अनुभवों को व्यक्त करने का अनूठा तरीका अपनाया है। बड़ी खूबसूरती से प्रचलित देशीय मुहावरों का प्रयोग हुआ है। कुल मिलाकर आप रिमहीं के जनप्रिय कवि हैं।

अवधी को जायसी और तुलसी मिले। बघेली को बैजू और सैफू आदि। पूरा नाम सैफुद्दीन सिद्दीकी सैफू : जन्म 1 जुलाई 1924, प्रकाशित काव्य संकलन 'दिया बरी भा अजोर', 'भारत केर माटी' की जानकारी मिली है। डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल के शब्दों में ''सैफू सच्चे अर्थों में बघेली के समर्थ और प्राणवान कवि हैं।''

यहाँ की धरती बाणभट्ट की कार्यस्थली है। क्या राजा क्या आम जन, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अउ बघेली में सृजन करने वाले कम नहीं थे, न हैं, न होंगे।

लोक भोजन - बघेली व्यंजन

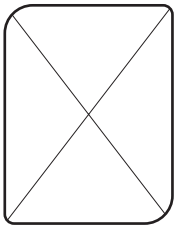

सरिता सिंह –

हमारे देश की एकता में लोक भूषा, लोक भाषा एवं लोक भोजन की विविधता का अपना एक अनूठा वैशिष्टय है। क्षेत्रवार विविधता देशकाल एवं परिस्थिति जन्म करण/कारणों से उत्पन्न हुई होगीं । क्योंकि प्राचीनकाल में संचार साधन की उपलब्धता आज के समय जैसी नहीं थी। आज दुनिया बहुत छोटी हो गई हैं। संचार साधन एवं आवागमन में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन हुये हैं कि हमारी भाषा–भूषा और भोजन सभी कुछ सार्वदेशिक होते जा रहे।

विन्ध्य प्रदेश के रीवा राज्य में बघेल राजाओं का आधिपत्य रहा, जिससे हमारे क्षेत्र को बघेलखण्ड एवं लोक भोजन को ''बघेली व्यंजन'' की संज्ञा मिली। बघेलखण्ड भौतिक रूप से विंध्याचल के पठार में बसा है। पठारी क्षेत्र होने से संचाई के साधन अल्प थे। क्षेत्र में बहने वाली नदियों की क्षेत्र की उर्वरता को पानी के साथ बहाकर गंगा के मैदान में ले जाती रही हैं। यद्यपि वर्षाकाल के पानी को हवेली सिस्टम (छोटे–छोटे बांध–बंधियों) से रोककर अनाज उत्पादन में सहायक बनाने की परपंरा थी। तथापि उपरोक्त सभी कारणों से पुराने समय के शाक/सब्जी की सुलभता केवल वर्षाकाल के थोड़े समय को छोड़कर शेष समय में लगभग नगण्य थी। कृषि प्रधानता के कारण समय की उपलब्धता एवं आवागमन सुविधा आज जैसी न होने से शादी विवाह प्राय:–प्राय: गर्मी के मौसम मे ही होते रहे। उस समय तो शाक/सब्जी – फल आदि का अभाव और भी अधिक हो जाता रहा।

उपरोक्त कारणो से ही ऐसा प्रतीत होता है कि बघेलखण्ड में अनाज और दालों के साथ अन्य सुलभ घटक जैसे आम का रस, पना, गौरस, दही, छाछ, आदि से ही भाँति–भाँति के व्यंजन बनाने की परिपाटी बनी होगी। जिन्हें हमारे बघेलखण्ड में 'सालन' कहा जाता है – व्यंजन का रिमहाई में पर्यायवाची । यहा प्रस्तुत है कुछ अत्यंत लोकप्रिय बघेली व्यंजन की रेसीपी 'सामग्री सहित बनाने की विधि एवं अन्य अनेक लोकभोजन के प्रचलित नाम'।

इन्द्रहर – बघेली व्यंजनों में इंद्रहर का नाम सबसे उपर है। अपने नामार्थ के अनुसार यह व्यंजन सर्वप्रिय है ओर इन्द्र को भी लुभाने वाला है। इन्द्रहर बनाने के लिये 5 दालों का मिश्रण लेकर उससे ढोकला की तरह स्टीम करके बनने वाले व्यंजन को 'उसिना' कहते है। उसिना का अर्थ स्टीम किया हुआ व्यंजन। उसिना डीप फ्राई करने पर स्नेक्स के रूप में खाया जाता है, जिसे कोरउर कहते है। कोरउर की कुी बनाने पर इन्द्रहर तथा मसाले वाली सब्जी बनाने पर रिकमच का नाम देते है। बनाने की प्रारंभिक विधि सबकी एक समान है।

(अ) **सामग्री** – चने की दाला आधा कटोरी, उडद की दाल आधा कटोरी, मूंग की दाल एक कटोरी, अरहर/तुअर की दाल आधा कटोरी, मसूर की दाल चैथाई कटोरी,

(ब) **मसाले** – अदरक, लहसुन, जीरा, बडी इलाइची, हरी मिर्च, धनिया पत्ती, थोडी सी हींग।

(स) **बनाने की विधि** – सभी दालों के मिश्रण को 8 से 10 घंटे के लिये पानी मे भिगोया जाता है। समय कम करने के लिये गरम पानी ले सकते है। अच्छी तरह से फूल जाने पर सभी दालों को सिल पर पीसना अधिक अच्छा होता है तथापि सिल की व्यवस्था न होने पर मिक्सर ग्राईंडर पर भी पीसकर पीठी/पेस्ट बना लेते है। साफट करने के लिये वैकल्पिक रूप से थोडा मीठा सोडा भी डाल सकते है।

सारी पीठी में उपरोक्त मसाले का पेस्ट बनाकर अच्छे से मिलाकर फेंट लेना चाहिये। जिसे गोल थाली में थोडा घी लगाकर फेला दे और इसे स्टीम द्वारा पका लेना चाहिये। 15–20 मिनट का समय पकने में लगता है। ठण्डा होने पर ढक्कन खोलकर मनचाहे आकार में छोटा या बडा पीस काटले तथा गरम गरम चटनी के साथ खाने के लिये तैयार है। इस डिष को उसना कहते है। जो प्रकारांतर से ढोकला जैसा है क्योंकि ढोकला बेसन से बनता है जबकि उसना सभी दालों के मिश्रण से।

कोरउर – उसना को तेल में डीप फ्राई करने पर स्नेक्स के रूप में सूखा खाया जाता है जिसे कोरउर कहते है।

हन्द्रहर – कोरउर को कुी में बनाने पर इन्द्रहर बनती है। कुी, छाछ में बेसन मिलाकर अथवा आम्रकूट/आम की गुठले की टुकडे से भी कुी बनाई जा सकती है।

रिकमच – उपरोक्त कोरउर से ही मसाले वाली सब्जी बनाने पर रिकमच कहलाती है।

रिकमच बनाने हेतु सामग्री, मसाला निम्नानुसार है :–

2 टमाटर, 2 प्याज, 1–1 इंच के दो टुकडे अदरक, 7–8 कली लहसुन, 2 चम्मच धनिया पाउडर, 1 चम्मच गरम मसाला, 1 चम्मच लाल मिर्च, खडा पत्ता, जीरा, बडी इलाइची, कालीमिर्च, दाल चीनी, खडी लाल मिर्च अंदाज से।

सभी मसालो का पेस्ट बनाकर कुाई में गरम तेल से मसाले भून ले पक जाने पर कोरउर से सोरबा/रसा लगा ले। उपर से धनिया पत्ती डालकर परोसे।

मउहरी – समूचे बघेलखण्ड में विशेषतया आदिवासी क्षेत में महुआ बहुतायत से होता है। महुआ के पेस्ट को गेहू के आटे के साथ गूंदकर, तल कर बनाये जाने वाली पुडी को मउहरी कहते है।

(अ) **सामग्री** – 250 ग्राम महुआ के फूल सूखे हुये, 500 ग्राम गेहू की आटा, तलने के लिये मीठा तेल या घी अपनी सुविधानुसार।

(ब) **विधि** – महुआ फूल को 2–3 बार पानी में अच्छी तरह से धो लेना चाहिये जिससे उसमें लगी धूल आदि साफ हो जावें। महुए को पकाने के लिये गर्म पानी एक घंट के लिये ढक कर रख दे अथवा कूकर में पका ले। ठण्डा होने पर मिक्सर ग्राइंडर अथवा सिल पर पीस कर पेस्ट बना ले। इस पेस्ट में थोडा थोडा आटा मिलाते हुये गूंथ लेना चाहिये। कडापन इस तरह हो जिससे पूरी जैसा बेलकर तेल अथवा घी में डीप फ्राई कर ले। खाने के लिये मउहरी तैयार है जिसे कुछ दिनो 7 से 10 दिन तक स्टोर करके रखा जा सकता है।

गोलहथी – नया चावल आने पर बघेल खण्ड में चावल को खिचडी की तरह गीला पकाकर गोलहथी बनाई जाती है, जो नाष्ते में खाने के लिये बघेलखण्ड की फैमस डिष है।

सामग्री/विधि – एक कटोरी चावल में 4–5 कटोरी पानी डालकर, थोडा घी स्वादानुसार नमक मिलाकर कूकर में पका लेते है। पकाते समय ध्यान रखना चाहिये एक सीटी के बाद गैस धीमी कर 4–5 सीटी आने दे। गाढी हो जाने पर गरम पानी डालकर मिक्स कर सकते है।

कढ़ी– कढ़ी लगभग पूरे देष में बनाई जाने वाली फैमस डिष है। यद्यपि क्षेत्रवार इसे अलग–अलग तरह से बनाते है। कहीं–कहीं बघेलखण्ड में केवल बेसन को छाछ में घोलकर छोंक लगाते हुये केवल कुी के रूप में खाया जाता है।

बघेलखण्ड में कुी के साथ कुी, इन्द्रहर/रसाज, लोकी/लउअरा, बेसन की फलोरी अथवा मुंगा/मोरिंगा के साथ कुी बनाई जाती है।

कढ़ी बनाने की विधि –

रसाज – बघेलखण्ड की एक फैमस डिष रसाज कहलाती है। कुी के साथ बनाने पर इस रसाज कहते है और मसाले वाली सब्जी के रूप में बनाने पर अखंई कहलाती है।

सामग्री एवं विधि – 1 कप बेसन में थोडा सा पानी डालकर उसको इस तरह फेंटना चाहिए जिससे गुठली न रहे। कहीं–कहीं बेसन में थोड़ा सा चावल का पाउडर भी मिलाते है। घोल में आधा चम्मच हल्दी, धा चम्मच जीरा एवं नमक स्वादानुसार मिलाकर बहुत अच्छी तरह से फेंट लेना चाहिये। जितना अधिक फेंटा जायेगा डिष उतनी अधिक साफट बनेगी। घोल का पेन में डालकर धीमी आंच में धीरे–धीरे चलाते हये पकालेना है जिससे घोल इतना गाढा हो जावे की उसे थाली में जमाया जा सके।

जमाने उपरांत लगभग 10 मिनट तक ठण्डा होने दे और फिर मनचाहे आकार में चाकोर या ंबी पीस बना लेते है। पीस बनाकर कढ़ाई में अच्छी तरह तल ले। ब्राउन हो जाने पर निकाल ले इसे सूखा अथवा छाछ के साथ कुी बनाकर खाया जाता है अथवा मसाले की सब्जी बनाई जा सकती है।

बगजा – प्रकारांतर से बगजा बूंदी का ही रूप है, जिसे छाछ से अथवा कच्चे आम का रस/पना में डालकर खाया जाता है।

सामग्री/विधि – 1 कटोरी बेसन, 1 कटोरी दही की छाछ, नमक, अजवाईन

बेसन में स्वाद अनुसार नमक और थोडा अजवाईन डालकर थोड़ा–थोड़ा पानी मिलाते हुये फेंट कर घोल तैयार करते है, जो मध्यम गाढ़ापन रहे जिससे जलेबी की तरह, फ्राई किया जा सके। कुाई में तेल गरम करके घोल से टोमेटो सॉस की बोटल अथवा बाजार में मिलने वाले सांचे से गरम तेल में जलेबी जैसा बनाते हुये डीप फ्राई करते है। तदुपरांत इसे छाछ में जीरा, राई, हरी मिर्च और हींग से तड़का लगाकर छाछ को पका लेते है। उसमें थोडी हल्दी, पिसी लाल मिर्च, काला नमक, स्वादानुसार नमक, धनिया पत्ती एवं भुना जीरा डालकर घोल तैयार हो जाता है। खाने के आधा घंटा पहले बगजे को डालकर परोसने के लिये डिश तैयार हो जाती है।

इसी बगजे को गरमी के दिनो में कच्चे आम को उबाल कर पना/रस बनाकर उसमें शक्कर, भुना, जीरा, नमक, बगजे के साथ मिलाकर परोसते है।

कवितायें

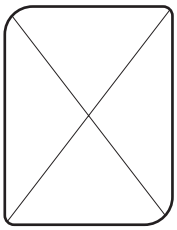

गीतेन्द्र प्रताप सिंह -

ज्यामिति की परिभाषाओं में भटके मन

गैरों का बिम्ब और अपना दर्पण ।।
प्रिज्मों में कटे हुये ज्योति फलक
खिडकी दरवाजे घर
सुबह शाम घेरते
चीन्ही अनचीन्ही
ध्वनियों के सम्मोहन
कभी देर और कभी
बड़े भोर टेरते
अविवेकी मृगतृष्णाओं
में अटके मन
ज्यामिति की.....

आंखों में आंजे हैं इंद्रधनुष
अब कैसे सूझेगी भीतर की बात,
ऊब, घुटन, कुंठा संत्रास ओढ़,
ले ले बैसाखियाँ चले,
लिखने इतिहास।

दल-दल में नहा लिए
फिर भी हैं टटके मन।
ज्यामिति की परिभाषाओं में भटके मन।

मौसम पर कुछ दोहे

पगडंडी यों तप रही, गर्म तवे पर रेत।
हरियाली दिखती नहीं, दिखते धूसर खेत।
गांव-गांव की नदी में बहती थी रसधार।
तन्वंगी सी डोलती, शेष नही आकार ।।
दूर कहं दिखती नहीं अमराई की छांव।
धूल धूसरित होगये अब चमकीले गांव ।।
पुरखों के रोपे हुये, पेड़ गये सब सूख।
शेष निरंतर कट रहे,यह कैसी है भूख ।।
बूंदा-बांदी हो गई ,जागी मनकी आस।
लेकिन इससे बढ़ गया,गरमी का संत्रास।
मानसून की आस में बाट तक रहे लोग।
रिमझिम,धरती तप्त होदिखे न कोई योग
हरियाली किंचित नहीं, वक्ष खड़े हैं ठूँठ।
मौसम के सम्बंध में है भविष्यफल झूठ।।

चिरई चुन-गुन का कहीं,रहा न कोई लेष।
अगर यही हालत रही, कौन बचेगा शेष।।
कहां तिरोहित जो गए, झुरमुट वाले बेर।
जिनके चलते सांझ को,होती रोजअबेर।।
गांव-गांव में फैलता, है शहरों का दंश।
पत्थर लोहे लीलते,हरियाली का अंश।।
एकाकी हैं हो गए, घर में सारे लोग।
अतिथि आगमन से बने,नदी नाव संजोग।।

फिर से काई सपन्दन हो

जीवन में फिर से
कोई स्पन्दन हो।
यहां वहां की बाते छोड़ें
नए सिरे से रिश्ते जोड़ें
आह्लाद आंखों में भर लें
नए छंद के साँचें गढ़ लें
वाणी की अर्चा हो
शब्दों का अभिनंदन हो ।1।
वर्षों का है ताना-बाना
अगले पल का नहीं ठिकाना
उत्सव सा आनन्द
सदा हो मन में
तर्पण, अर्पण और समर्पण
बना रहे जीवन में
जीवन के हर पल का
हर क्षण के वर का वन्दन हो ।2।

दूर दूर तक नजर न आते

दूर दूर तक नजर न आते
छप्पर-छानी वाले घर।
घर घर जाकर ढूंढ रहा हूँ
दूध मथानी वाले घर।
सुबह सुबह परभाती पढ़ते
दादी नानी वाले घर।
तुलसी को संझ वाती देते
रात कहानी वाले घर।
बटरोही को छाया देते
शरवत पानी वाले घर ।
मेरे गाँव मैं ढूंढ रहा हूँ
बोली बानी वाले घर ।।
छूट गया था शैशव मेरा
वही निशानी वाले घर ।।

हायकू

1. कैसे खुलेंगे
   सपने शैशव के
   सीपी में बंद।
2. मन में क्या
   कैसे समझाऊँ मैं
   केवल तुम।
3. ढूंढ रहा हूँ
   सपने शैशव के
   स्मृति वन में
4. अनुशासन
   पंक्तिबद्ध चीटियाँ
   ढोती भोजन

क्षणिकायें

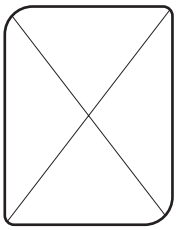

ए.पी. पाठक -

श्रेष्ठ ज्येष्ठ
तपता है ग्रीष्म
तपता है भीष्म
तपता है ज्येष्ठ
तपता है श्रैष्ठ

मौन संदेश
हम भी चुप है
तुम भी चुप हो
मौन ये परिवेश है
निशब्द मुखरित
मौन अपना
अनगिनत संदेश हैं।

शान्त समंदर
इतना गहन गहरा शान्त है
ये सम्मानित संभ्रांत समन्दर
कितनी व्याकुल हैं मिलने को
सारी नदियां संसार की।

संतुलन
सम्बन्धों समस्याओं
भावनाओं का समीकरण।
विरला स्थितप्रज्ञ
सचेष्ठ ही संभालता है
अविश्वसीय संतुलन।।

भाव भरा है मौन शब्द न
सब कुद कह सकें
सब कहता बस मौन
अर्थ सदा करते भ्रमित
भाव भरा है मौन।।

प्रेम
प्रेम है एक उदात्त भावना
प्रिय के शुभ का अभिलाषी
मात्र इष्ट पर पूर्ण समर्पण
आत्माहूति का आकांक्षी।।

यूं ही
यूं ही नहीं कुछ
कहीं भी, कभी भी
अवश्य कोई कारण
ज्ञात या अज्ञात
समझ नहीं आती
परमात्मा की लीला
क्यू खेलता है
असंख्य जिन्दगी से।

मन
बावरा मन
शांत नहीं रहता है
रात-दिन गढ़ता है
चलता है, न रूकता है
न थकता है, न थमता है
साथ सभी इन्द्रियों के
कहां-कहां भटकता है।

उद्विग्नतात ये छटपटाहट
बेचैनियों और बेबसी
ये न होता कुछ कभी भी
गर न होती ख्वाहिशें।।

ये मुश्किलें ये कोशिशें
ये हौसले ये हिकमतें
ये न होते कुछ कभी भी
गर न होती ख्वाहिशें।।

हमारी नदियाँ

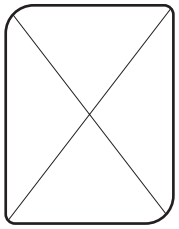

डॉ. यू.बी.एस. परिहार -

नदियों से हमारा जन्मजात नाता है, इनके बिना हम अपनी पावन पुनीत भारतीय संस्कृति को न तो पूरा मान सकते है, और ना ही नदियों के बिना अपने अस्तित्व की कल्पना कर सकते है। हमारा और नदियों का नाता जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक का है। नदी एवं समाज के बीच जीवांत सम्बन्ध सदियो से रहा है, चूंकि मानव जीवन के आने के पहले ईश्वर ने जीवनोपयोगी सारे प्राकृतिक संसाधना को निर्मित कर दिया, इसमें जल प्रमुख था। जल के बिना प्राण नहीं रह सकते अत: ईश्वर के विधान के अनुसार होने वाले धरती के निर्माण में जल का प्रादुर्भाव हुआ और जब वैज्ञानिक घटनाओं के प्रभाव से बादल बने तो वर्षा हुई। जमीन की भौगोलिक परिस्थितिवश जल धाराओं का निर्माण हुआ तब धरती की सतह पर यही जल राशि ने नदियो को निर्मित किया। प्रकृति का समय चक्र निर्धारित हुआ और जल चक्र भी वर्षा आती नदियों में जल भरकर प्रवाहित होता, पृथ्वी के गर्भ में भी विभिन्न रूपो में जल भरता। वह नदियों का सुहाना सफर, घने जंगल, उत्कृष्ट पर्वत मालयें, शीलत मंद सुगंध पवन के झकोरे, मानो प्रकृति ने मानव जीवन की धारा को पूर्णत: सुखद बनाने में केाई कसर नही छोड़ी। धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के ग्रन्थों जैसे रामायण, महाभारत, स्कंदपुराण एवं अन्य ब्राहम्ण ग्रंथों में नदिया को वर्णन आता है। मान्यता है, कि विशेष पर्वो में नदी स्नान करने से पाप धुल जाते है। पुरातनकाल से ही नदियां हमारी माँ की तरह समजा का भरण पोषण करती आ रही हैं। नदियां सकारात्मकता को बढ़ाती है, यही कारण है, कि बड़े-बड़े ऋषि महात्मा भी नदियों के तट पर बैठकर अपनी तपश्चर्या को साधने का प्रयोग करते आये है। नदियों की वजह से ही इनके किनारे बस्तियाँ बसीं और देश के महत्वपूर्ण शहर भी बसे।

नदियों से मानव का जीवनोपयोगी सम्बन्ध बना तो हमारे ऋषि मुनियों ने इनके विषयक में सारगर्भित साहित्य रचना एवं इनमें देवत्व भाव को प्रतिपादित किया। पहाड़, नदी, नालों, तालाबों को महत्ता एवं पवित्रता का मान रखते हुये इसके प्रति समर्पित-समर्पण संरक्षण एवं पूजा का भाव प्रकट किया। जैसे नदी एक देवी है, उदाहर के लिये 7 (सात) पवित्र नदियों का संबंध देवताओं से जोड़ा गया। गंगा को भगवान शिव से, यमुना को श्री कृष्ण से, सिन्धु को श्री हनुमान से, सरस्वती को भगवान गणेश से, गोदावरी को श्री राम से, कावेरी को भगवान दत्रात्रेय एवं नर्मदा को माँ दुर्गा जी से जोड़ा जाकर संबंधित बताया गया। तत् संबंध में निम्न श्लोक की रचना गंगा अष्टकम में श्री आदि शंकराचार्य जी के द्वारा विरचित की गई।

गंगे च यमुने,चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धु कावेरि, जले स्मिन् सन्निधि कुरू।।

उपरोक्त श्लोक की मान्यता है, कि पवित्र नदियों का जल आपको शुद्ध करे और आशिर्वाद दे, जो कि भगवान के प्रति आभार व्यक्त किये जाने का एक भाव है।

नदियों का महत्व मानव जीवन के लिये सर्वोपरि हैं। जब से मानव रूपी संसार निर्मित हुआ, वह नदियों के साथ बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सिंचाई व पेयजल के साथ-साथ आवागमन के लिये भी मानव से नदी का साथ होता आया है। हमारी भारतीय संस्कृति में यह आस्था का केन्द्र बनी और इन्हें पूजनीय माना गया। हमारे देश में नदियां एक महत्वपूर्ण जल संसाधन जुटाती है, इसलिये गंगा ही नदीह, अपितु भ-भाग की सारी जल वाहक संरचनाओं की मानयता व पूजा की जानी चाहिये। नदियां आध्यात्म के रूप

में मोक्षदायिनी है, एवं उपयोग में जीवन-दायिनी है। नदी एवं मानव समाज के बीच जो जीवान्त सम्बन्ध है, आज उसके समुचित कार्य एवं व्यवहार में अवमूल्यन हुआ है। मानव ने भोगवादी परंपरा की ओर आकर्षित होकर अपने स्वार्थ को पूर्ण करने में अधिक ध्यान दे रहा है, जबकि नदियों के सुसंधारण का ध्यान रखते हुये पूर्वत नदी की मान्यताओं को बल देना आज के समय में अति आवश्यक है, कि नदियाँ सतत् जीवित रह सकें।

नदियाँ हमारे कृषि का आधार है, यदि नदिया न होती तो बांध कहाँ बनते। अत: बांधो में जो अपार जल राशि संग्रहित होती है, वह राशि का श्रोत नदियां ही है। नदियों मं बांधो का निर्माण जल आपूर्ति, बांढ नियंत्रण, सिंचाई भौवहन, तलछट नियंत्रण और जल विद्युत जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है। वर्तमान में सिंचित भूमि लगभग 277 मिलियत हेक्टेयर है। ग्रामीण क्षेत्र में फैली लगभग 30 प्रतिशत आबादी को रोजगार उपलब्ध होता है। यदि प्रारंभिक तौर पर खेती के विकास की बात करे तो यह भी नदी के कछार से ही प्रारंभ होना प्रतीत होता है। ऐसा लगता है, कि आदिमानव के शिकार युग के बाद खेती का ज्ञान नदी तथ्ट पर ही हुआ होगा, क्योंकि नदियाँ जो वर्षा के मौसम में पानी भर कर लबालब होती है। नदी के प्रभाव क्षेत्र पर तलछट, मिट्टी व खनिज आदि गाद के रूप में जमा हो जाने से उर्वरा शक्ति बढ जाती है। नदियों के क्षेत्र की यह मिट्टा पोषक तत्वों से भरपूर होकर वहाँ की मिट्टी को खेती योग्य बनाती है। अत: कहा जा सकता है, कि खेती का जन्म नदी के प्रभाव क्षेत्र से ही हुआ।

तेजी से बढ़ रही जनसंख्या वृद्धि के कारण औद्योगिक कृषि के क्षेत्र में जल की मांग बढ़ी है। जब नदियों से बन्यधिक जल निकाशी की जाती है, तो इनका आयतन घटता है, दूसरी ओर उद्योगों का प्रदूषण और परिष्कृत कचरे की नदियों में डाला जाता है, साथ ही सीवेज की नालियाँ भी नदियों में ही जुड़े होने के कारण नदी में प्रदूषण फैलाती है। आस्था एवं मान्यताओं के अनुसार मूर्तियों एवं इनमें चढ़ी सामग्री को भी नदी में ही डाला जाता है, जिसके कारण नदियों में प्रदूषण फैलता है। पुराणों में भी हमें रोका गया है।

गंगा पुण्यजलां प्राव्य चतुर्दश विवर्जयेत्
शौचमायमनं केशं निर्माल्यं मलघर्षणम
गात्र संवाहनम्् क्रीडां प्रतिग्रहमथारतिम्
अन्यतीर्थ रति चैव अन्य तीर्थ प्रशंसनम्
वस्त्रत्याग मथाघातं संतारंच विशेषत:

उपरोक्त में कहा गया है कि निम्न कृत्य नदी पर नहीं होना चाहिये कि नदी की शुद्धता मं कोई विपरीत प्रभाव पड़े।

जैसे - शौचालय, गरारे करना, बालो को धोना, उपभाग की गई पूजा सामग्री को प्रवाहित करना, शरीर की गंदी को रगड़कर बहाना, मानव या पुशओं के शव को नदी में बहाना, किसी भी प्रकार की क्रीणायें करना, दान स्वीकारना, अमर्यादित आचरण करना, किसी अन्य स्थल को नदी के किनारे से बेहतर करार देना या तुलना करना। वस्त्र त्याग देना, किसी जीव को परेशान करना एवं शोर मचाना आदि।

सम्पूर्ण मानव इतिहास में प्रारंभ से ही नदियों का अत्यधिक महत्व रहा है। चूंकि नदियो का जल मूल प्राकृतिक संसाधन है, और कई मानवीय क्रिया कलापों के लिये बेहर जरूरी है। इसकारण इनका मुचित दोहन एवं साथ ही सतत् रखरखाव भी परम आवश्यक है। अगर हम नदियों को बेतरतीव दोहर करते रहेंगे पर उचित रखरखाव नहीं करेंगे तो धीरे-धीरे हमारी नदियां प्रभावहीन हो जायेंगी। ऐसा होने से धरती पर जीवित नदियां प्रभावहीन हो जायेंगी। ऐसा होने से धरती पर जीवित प्राणियों को अपने जीवन करने में बाधा उत्पन्न होगी। अत: नदियों के उचित सरंक्षण हेतु समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व होना परम् आवश्यक है। यदि हम नदियों के प्रति पूर्वत भाव एवं मान को पुनस्थापित नही कर सके तो वह दिन दूर नही जब हमारी नदिया मानसूनी रह जायेंगी इसके बाद भी ध्यान नदिया गया तो मौसम काल में भी नदी में प्रवाहित जल के भी दर्शन दूभर हो जायेंगे। हमें जंगलो के बार में भी सोचना पड़ेगा कि उनका महत्व पानी वर्षा करने में जल कैसे प्रवाहित होगा। अत: हमें जल चक्र को भी यथारथ बनाये रखने में कार्य करते रहना होगा। क्योंकि नदियों के बिना जीवन संभव नही है। बिना जल के न तो जीवन होगा न ही खेती किसानी, अत: मानव जीवन के लिये नदियां महत्वपूर्ण है।

आज हमें नदियो के बचाव के लिये परंपराओं को भी बदलना होगा, नदियों में होने वाले हानिकारण कारको की पहचान की सूची बनानी होगी। सूचीबद्ध तरीके से निदान के उपायों एवं समझाईसो को समाज तक पहुँचाना होगा नदी के कार्य व्यवहार, आवश्यकता एवं रखरखाव के प्रति समाज को जाग्रत करना होगा, यह कार्यमुक्त मात्र सरकार न हो अपितु समाज के प्रत्येक वर्ग का स्वयं का अपना हो क्योंकि नदियों में वर्ष भर जल रहेगा तभी हम अपने विकास के पहिये को समुचित ढ़ंग से गति दे पायेंगे। उदाहरणार्थ कुछ बिन्दु जैसे –

- फूलो का इस्तेमाल, अगरबत्ती, धूपबत्ती इत्र, पैकेजिंग मटेरियल बनाने में महिलाओं को रोजगार मिल सकता है एवं ठोस अपशिष्ट नदियों में जाने से रूक जावेगा।
- गांव गांव मे नदियों, नालो की प्रबंधन समिति हो जिसका दायित्व, जन, जल, जमी, जानवर, जंगल आदि के सुप्रबंधन पर हों, एवं इसके साथ ही सरकारी योजना का समावेश हो।
- क्षेत्रों की खरपतवार, धूल, गोबर, चारा, भूसा, अपशिष्ट चढ़ी हुई पूजा सामग्री आदि का ऐसा प्रबंधन हो कि वह जमीन के उर्वरता के काम आये न कि उसका नदियों में निपटान हो।

आज के समय में प्रत्येक नदी के संरक्षण की सामूहित पहल होनी चाहिये। ना कि समाज सरकारी तंत्र के भरोसे यह आशा करे। उपभोक्तावादी दृष्टिकोण एंव अविवेकपूर्ण कृत्य से असमय ही नदियों का अस्तित्व समाप्त हो जाने का खतरा सामने है। चूंकि मानव समाज का नदियों से ही सीधा सरोकार है, अत: अब सारे समाज को ही नदियों के संरक्षण के उपाय में सहभागी बनना आवश्यक है। नदी एवं मानव के जीवांत संबंध उसे ध्यान में रखकर इसके संरक्षण को देश की जनता समझने लगे एवं नदी के विज्ञान को भी समझने का प्रयास, रखरखाव तथा संरक्षण पर समर्पित दृष्टिकोण हो, तभी हम नदियों को बचाये रखने में सक्षम होंगे एवं जीवनोपयोगी जल की उपलब्धता हासिल कर सकेंगे।

बर्थ-डे

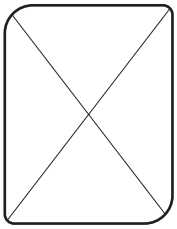

श्री नगेन्द्र सिंह परिहार –

शाहीन की आज नवी वर्षगांठ थी। अकमल की पहली बीवी नौरीन से जन्मी शाहीन के जन्म के लगभग डेढ़ वर्ष बाद ही पति–पत्नी में आपसी मतभेद को लेकर तलाक हो गया था। तब से शाहिन अपनी मां के साथ निजामुद्दीन में रह रही थी। लगभग दो माह पूर्व एक दुर्घटना में अचानक मां की मृत्यु हो जाने के पश्चात उसके पिता उसे जाकर अपने पास ले आए थे।

नौरीन से तलाक हो जाने के लगभग छः माह पश्चात ही अकमल ने दूसरा विवाह गाजियाबाद निवासी हफीजुद्दीन की पुत्री सबीना से कर लिया था। सबीना से भी अकमल को एक पुत्र जावेद प्राप्त हुआ था। जिसकी पांचवी वर्षगांठ अकमल और सबीना ने पिछले महीने अपने फ्लैट पर बड़े धूमधाम से मनाई थी। इस उत्सव में जावेद के नाना–नानी, मामा–मामी अकमल के मित्र तथा आज पड़ोस के आधा सैकड़ा बच्चे शामिल हुए थे।

शाहीन के साथ यद्यपि अकमल और सबीना का व्यवहार बड़ा आत्मिक प्यार भरा होता था, तथापि शाहीन चैबीसों घंटे डरी सहमी दुबकी–दुबकी रहती थी। उसने देखा था कि जावेद जो उसके ही कक्ष में सोता था, को उसके जन्मदिन के दिन प्रातरू ही उसकी मां एवं पिता ने आकर गोद में उठा लिया था, और हैप्पी बर्थडे बोलकर प्यार किया था। परंतु आज जबकि उसका बर्थडे है, यह बात डैडी और मां जानने हैं। उसके बावजूद सुबह से ही उसे हैप्पी बर्थडे बोलने नहीं आए। वह विचार रही है कि अन्य दिन तो वह स्वयं ही उनके सामने नहीं जाती थी, परंतु आज वह सुबह से तीन चार बार डैडी और मां के आसपास किसी न किसी बहाने से चक्कर लगा आई है। सामना होने पर भी किसी ने उसे प्यार नहीं किया। किसी ने भी उसे हैप्पी बर्थडे नहीं कहा। वह भावुक हो उठी और उसकी आंखों में आंसू आ गए।

वह पुनः विचारने लगी कि पिछले वर्ष जब उसका आठवां बर्थडे पड़ा था और वह अपनी रियल मां के साथ निजामुद्दीन में रह रही थी। तब कितनी धूमधाम से मां ने उसका भी बर्थडे मनाया था। बिल्कुल जावेद जैसे ही। तब डैडी भी सुबह–सुबह आठ बजे ही उसके लिए कितना अच्छा बर्थडे गिफ्ट वीडियो गेम लेकर पहुंच गए थे।

यह विचार कर एक बार वह फिर से भावुक हो उठी कि उसकी रियल मां नहीं रही इसलिए डैडी भी उसका ध्यान नहीं रखते।

अपने दोनों हाथों से उसने आंसू पोंछे और मन ही मन यह कहती हुई अपने स्थान से उठी कि अब उसकी रियल मां, जो उसे प्यार करती थी, रही ही नहीं, इसलिए वह किसी भी तरह रही आएगी। उसने आलमारी खोली और अपने कपड़े निकालने लगी। परंतु पुनः उसे अपनी मां की याद आ गई। मां ने पिछली बार उसके लिए नया ड्रेस खरीदा हुआ था और सुबह–सुबह उसे सरप्राइस गिफ्ट में वह भी दिया था। पुनः उसकी आंखों में आंसू आ गए। अपने कपड़ों से ही गालों पर ढ़रक आए आंसुओं को पोंछती हुई वह आलमारी को बंद करके नहाने चली गई।

आधे घंटे पश्चात जब शाहीन अपने कक्ष में बैठी अपना होमवर्क चेक कर रही थी, तभी उसके डैडी और सौतेली मां सबीना आए और उसकी और मुस्कुरा कर निहारते हुए बोले – शाहीन बेटी ! आज तुम बहुत जल्दी नहा ली ?

गहन उदासी के भाव मुखड़े पर धारण किए हुए शाहीन बोली – हां डैडी जल्दी नहा लिया।

शाहीन को लगा शायद अभी ही डैडी को याद आ जाए कि आज उसका बर्थडे है और डैडी उसे प्यार करते हुए हैप्पी बर्थडे बोल दें।

मां तो उसकी दृष्टि में सौतेली ही थी। उनसे उसे वैसे ही कोई उम्मीद नहीं थी। परंतु ना तो उसके डैडी ने और ना ही मां ने हैप्पी बर्थडे कहा।

अकमल ने प्रश्न किया – क्यों बेटी ?

बस यूं ही य संक्षिप्त जवाब दिया शाहीन ने।

अकमल ने मुस्कुराते हुए कहा – हमें लग रहा है कि हमारी प्यारी बेटी किसी बात को लेकर हमसे नाराज हो गई है।

शाहीन ने सोचा कि वह डैडी को बता दे कि वह सचमुच उनसे नाराज हो गई है। उसका बर्थडे है और उन्हें याद तक नहीं है। परंतु फिर उसने इस संबंध में कुछ नहीं कहा। शाहीन को अबोल रह गया देखकर अकमल ने पुन: कहा – हमारी बेटी के गाल फूलते चले जा रहे हैं। कोई बात जरूर गालों के अंदर छुपी हुई है। लेकिन पता नहीं बेटी बता क्यों नहीं रही ?

शाहीन ने मन ही मन में यह निश्चित कर लिया कि वह अपने मुख से डैडी को नहीं बताएगी कि आज उसका बर्थडे है। उन्हें अपने से याद आ जाए तो आ जाए। उसने बात बदलते हुए कहा – अभी मैं अपना होमवर्क चेक कर रही हूं कि वह पूरा हो पाया है या नहीं। डैडी प्लीज आप मुझे अभी डिस्टर्ब मत करिए।

शाहीन की बातें सुनकर अकमल और सबीना दोनों मुस्कुराने लगे अकमल ने कहा – बेटे जल्दी से होमवर्क चेक करके नाश्ते की टेबल पर आ जाओ। सबीना ने तुम्हारा फेवरेट डिश बनाया हुआ है।

शाहीन डैडी और सौतेली मां के चले जाने के उपरांत विचारने लगी, लगता है इन लोगों को मालूम है कि आज मेरा बर्थडे है परंतु ज्यादा पैसे खर्च ना हो जाएं, इसलिए ये लोग बर्थडे मनाना नहीं चाहते, केवल मेरा फेवरेट डिश मुझे खिलाकर फुर्सत कर देना चाहते हैं। ''शाहीन होमवर्क कहां चेक कर रही थी। होमवर्क तो उसने कल ही कर लिया था। वह तो क्रोध के कारण पन्ने पलटती हुई बैठी थी। वह अपने पिछले बर्थडे की धूमधाम में पुन: खो गई। मां ने काम के कारण अपने ऑफिस से छुट्टी ली हुई थी और सुबह से ही वह कितना व्यस्त हो गई थी। उसे भी उन्होंने उस दिन स्कूल नहीं जाने दिया था। लगभग 10: 00 बजे उनके ऑफिस के दोनों प्यून आ गए थे। वह लगातार काम में लगे हुए थे. कभी मार्केट जाते तो कभी घर पर ही काम करते। माँ ने कुछ डिशेज घर पर बनाई हुई थी। जबकि कुछ मार्केट से मंगवाई थी। अपने घर को भी कितना सुन्दर सजाया हुआ था उन्होंने।

वह विचार मग्न थी। उसका ध्यान तब भंग हुआ जब कानों में डैडी की आवाज पड़ी – बेटे.. शाहीन.. हम तुम्हारा वेट कर रहे हैं, जल्दी आओ।

बिना मन के शाहीन बोली आ रही हूं।

वह धीरे–धीरे अपनी कुर्सी से उठी। खड़े–खड़े ही उसने अपनी नोटबुक्स अपने बैग में रखी और डाइनिंग रूम की ओर चल पड़ी।

उसने देखा उसके डैडी सौतेली मां और जावेद तीनों डाइनिंग टेबल पर बैठे हैं। डैडी और सौतेली मां तो उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे जबकि जावेद ने खाना प्रारंभ कर दिया था।

शाहीन को देखते ही अकमल ने कहा बेटे जल्दी करो, आज बहुत जरूरी काम से मेरे साथ तुम्हारी मां को भी बाहर जाना है हम लोग लेट हो जाएंगे।

शाहीन को बुलाकर अकमल और सबीना ने अपने बीच वाली कुर्सी पर बैठा लिया। उसके खाने पर विशेष ध्यान रखा गया। उसे उसकी फेवरेट डिश जोर देकर मां ने दोबारा उसकी प्लेट पर रख दी। डाइनिंग टेबल से उठते हुए अकमल ने शाहीन से कहा – बेटे बस आएगी तो तुम जावेद को लेकर स्कूल चली जाना।

सबीना ने कुर्सी छोड़ते हुए कहा – टिफिन आया से लगवा लेना य चलते–चलते पुन: कहा – बेटे देखना जावेद का टिफिन कोई दूसरा ले लिया करता है। तुम ध्यान देना अपने भाई पर।

अब तक अकमल कक्ष से बाहर की ओर निकल गया था. शायद सबीना ने भीतर समय ज्यादा ले लिया था, इसलिए बाहर से ही

अकमल ने पुन: आवाज लगाई – जल्दी करो सबीना।

हां आई .... य अकमल को जवाब देकर सबीना चलकर शाहीन के पास गई और प्यार से उसका तदन्तर जावेद का मुख चूम कर घर से निकलते हुए आया से बोली – बच्चों का ध्यान रखना। देखना समय से स्कूल चले जाएं।

अकमल और सबीना के चले जाने के पश्चात शाहीन मन ही मन सोचने लगी। बड़ा दिखावा करती हैं। प्यार करने का नाटक कर रही हैं.यदि सचमुच प्यार करतीं तो यह याद ना रहता की आज मेरा बर्थडे है।

अकमल और सबीना के चले जाने के पश्चात बाहर का दरवाजा बंद करके जब आया पुन: डाइनिंग रूम में आई तो यह विचार कर कि शायद शाम को मेरा बर्थडे मनाया जाने वाला है शाहीन ने आया से प्रश्न किया – आज डैडी और मां ने आपसे शाम को कुछ करने के लिए नहीं कहा है क्या ?

आया कि समझ में ही नहीं आया कि शाहीन क्या कहना चाह रही है ? उसने विस्मय से प्रश्न किया – मैं समझी नहीं शाहीन बेबी, आप क्या कहना चाहती हो ?

शाहीन को पहले लगा कि वह आया को बता दे कि उसका आज बर्थडे है इसलिए क्या घर पर बर्थडे मनाए जाने की कोई जानकारी उन्हें है ? परंतु बाद में उसने सोचा नहीं वह किसी को भी अपने मुख से नहीं बताएगी कि आज उसका बर्थडे है। आया के प्रश्न पर शाहीन ने बात स्पष्ट करते हुए कहा – मैं यह जानना चाह रही हूं आपा कि शाम को घर पर कोई पार्टी तो नहीं है ?

आया ने शाहीन के प्रश्न का मंतव्य जानकर जवाब दिया – नहीं शाहीन बेबी, मुझे तो ऐसी कोई जानकारी नहीं है।

शाहीन ने आया से कहा – आप जाओ आपा, टिफिन लगा दो।

''अच्छा बेबी'' कहकर आया वहां से चली गई शाहीन पुन: उदास हो गई. उसके मन में विचार आया कि हो सकता है कभी–कभी यह लोग बर्थडे ना मनाते हों. लेकिन इसका पता कैसे चले।

तभी सामने बैठे अपने खिलौनों से खेल रहे जावेद पर उसका ध्यान गया। उसके मन में विचार आया कि वह उससे पूछे कि क्या डैडी और मम्मी ने पहले के उसके सभी बर्थडे मनाए हैं ? परंतु पुन: उसके मस्तिष्क में विचार आया जावेद तो अभी ही बहुत छोटा है, उसको और पहले का तो याद ही नहीं होगा। उसने यह भी विचारा, ''लगता है डैडी और मां उसे बड़ा मानने लगे हैं। बर्थडे तो बच्चों का मनाया जाता है। वह अब बच्ची तो है नहीं, बड़ी हो गई है। इसलिए उसका बर्थडे नहीं मनाया जा रहा होगा।''

सोचते विचारते स्कूल का समय हो गया बस आई अपना–अपना टिफिन लेकर शाहीन और जावेद स्कूल चले गए।

स्कूल में भी शाहीन को प्रतीक्षा रही आई कि शायद कोई उसे आकर हैप्पी बर्थडे कहेगा। परंतु ऐसा कुछ ना हुआ। पुन: वह सोचने लग गई, जब डैडी को ही मेरे बर्थडे की याद नहीं रही, उन्होंने ही हैप्पी बर्थडे नहीं कहा, तो यहां कोई क्यों कहेगा ? इन्हें तो कुछ मालूम भी नहीं होगा।

आज पूरे दिन शाहीन स्कूल में उदास रही। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह किसी से बातें भी नहीं कर रही थी और उसका पढ़ने में भी मन नहीं लग रहा था। उसने अपनी क्लास में लगी घड़ी की ओर दृष्टि दौडाई। घड़ी में चार ही बजा था। अभी स्कूल की छुट्टी होने में भी एक घंटा बाकी था। मैडम पढ़ाए जा रही थी। परंतु शाहिन अपनी पुस्तक पर नजरें स्थिर करके सोच विचार में मग्न थी।

उसका ध्यान भंग हुआ जब स्कूल का प्यून क्लास के दरवाजे पर आकर मैडम से बोला – मैडम ! शाहीन को प्रिंसिपल मैडम ने बुलवाया है।

क्यों बुलवाया होगा उसे प्रिंसिपल मैडम ने ? उसने अपनी प्रश्न भरी निगाह प्यून के मुखड़े पर स्थिर कर दी. तभी मैडम ने कहा – जाओ शाहीन।

शाहिन अपनी सीट से उठकर जब चलने को हुई तो प्यून बोला – आपको अपना बैग लेकर बुलवाया गया है।

मैडम ने पुन: शाहीन से कहा – बैग लेकर जाओ शाहीन।

अपना बैग लेकर शाहीन कक्षा से बाहर निकल आई और प्यून के साथ प्रिंसिपल मैडम के ऑफिस की ओर बढ़ते हुए प्रश्न किया – बैग लेकर मुझे क्यों बुलवाया गया है भैया ?

मुस्कुरा कर प्यून बोला – आपके डैडी और मां आए हैं।

अच्छा..... य चहक उठी शाहीन और एक बार फिर से विचार सागर में गोते लगाने लगी, लगता है डैडी और मां को अभी याद आया है कि आज मेरा बर्थडे है, इसलिए वह लोग बेचारे स्कूल छूटने के पहले ही मुझे बुलाने आ गए। मैं भी कितनी गंदी हूं। क्या–क्या सोच रही थी दोनों के लिए।

प्रिंसिपल ऑफिस में प्रविष्ट होते ही प्रिंसिपल मैडम ने शाहीन से कहा – बेटे तुम्हारे डैडी और मां तुम्हें आज लेने आए हैं शायद कहीं बाहर जाने वाले हैं।

शाहीन पुन: उदास हो गई, यह विचार कर की डैडी और मां उसे हैप्पी बर्थडे नहीं बोल रहे हैं. उसने चुपचाप उस ओ र दृष्टि फेरी जहां कुर्सियों पर उसके डैडी और मां बैठे हुए थे। जावेद भी आ चुका था। शाहीन चुपचाप जाकर उनके निकट खड़ी हो गई।

शाहीन के भी पहुंच जाने पर अकमल और सबीना ने प्रिंसिपल से विदा ली और अपने बच्चों के साथ कार से चल पड़े. रास्ते में ही एक बहुत बड़ा शोरूम जिसके ऊपर बोर्ड लगा था, प्रेडीमेड फेयर फॉर किड्स के सामने अकमल ने कार रोक दी। अकमल के साथ सबीना और जावेद भी उतर गए नीचे. शाहीन को ना उतरता देख जावेद ने कहा – शाहीन बेटे तुम भी आओ ना. यहीं बैठी रहोगी क्या ?

शाहीन ने अपने डैडी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया. चुपचाप कार से उतर कर नीचे आ गई. अकमल ने कार लाक की और सबके साथ शोरूम के भीतर प्रविष्ट हो गए. शोरूम में उन्होंने काउंटर पर खड़े व्यक्ति से कपड़े दिखाने के लिए कहा।

उसने प्रश्न किया – किसके लिए।

जावेद और शाहीन की ओर संकेत करके अकमल ने कहा – इनके लिए।

वह कपड़े निकालने लगा तो अकमल ने पुन: कहा बढ़िया सूट दिखाइए। हमारी बेटी शहजादी दिखनी चाहिए।

डैडी के द्वारा स्वयं के लिए आज नए कपड़े खरीदे जाते देख एक बार पुन: शाहीन असमंजस में पड़ गई, क्या डैडी और मां को मेरे बर्थडे की याद है ? यदि याद है तो वह मुझे हैप्पी बर्थडे क्यों नहीं बोल रहे ? फिर आज के दिन मेरे लिए नए कपड़े भी खरीद रहे हैं, लगता है घर पर तैयारी की गई है।

एक बहुत सुंदर सूट शाहीन के लिए और एक और जावेद के लिए खरीद कर अकमल पुन: सबको साथ लेकर घर के लिए निकल पड़े। शाहीन मन ही मन विचार रही है कि घर पर डैडी और मां के द्वारा निश्चित ही तैयारी की जा चुकी होगी, तभी वह लोग हमें स्कूल बुलाने गए थे।

शाहीन का विचार मंथन चल ही रहा था कि घर भी आ गया। घर में कहीं कोई तैयारी शाहीन का बर्थडे मनाए जाने की नहीं चल रही थी। मन ही मन शाहीन बुरी तरह से अपने डैडी और मां से रुष्ट हो गई। वह अपने कक्ष में गई और अपना बैग टेबल पर रखकर नोटबुक्स निकालने लगी। तभी उसे डैडी की आवाज सुनाई पड़ी – शाहीन ! बिटिया हांथ मुंह धो कर नए कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ। एक पार्टी में चलना है।

शाहीन कहीं भी जाने के लिए तैयार नहीं थी वह बोलती है – मैं नहीं जाऊंगी डैडी।

अकमल शाहीन के कक्ष में प्रविष्ट हो गए. शाहीन के निकट जाकर उसकी आंखों में झांकते हुए बोले – क्यों नहीं जाएगी हमारी बिटिया ?

मुंह फुला कर संक्षिप्त सा उत्तर दिया शाहीन ने – बस यूं ही।

अब तक वहां सबीना भी आ चुकी थी, बोली – तुम नहीं जाओगी शाहीन तो सलीम अंकल नाराज हो जाएंगे।

सलीम अकमल के मित्र थे, और अक्सर वह अकमल के घर अपने परिवार के साथ घूमने आया करते थे। सलीम की भी एक लड़की थी रेहाना, जो शाहीन के साथ ही पढ़ा करती थी। शाहीन को लगा कि शायद पार्टी में रेहाना भी आए। उसने प्रश्न किया अपने डैडी की ओर उन्मुख होकर – वहां रेहाना भी आएगी क्या ?

बिल्कुल आएगी रेहाना य अकमल ने प्यार से शाहीन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा – वहां तुम्हारे और भी फ्रेंड आएंगे। तुम जल्दी से तैयार होकर चलो।

अंतत: शाहीन पार्टी में जाने के लिए तैयार हो गई. अकमल और सबीना ने उसे बहुत अच्छे से सजाया। जावेद को भी नए कपड़े पहनाए गए. शीघ्र ही अकमल और सबीना घर से निकलने के लिए बाहर तैयार खड़े थे. कार दिल्ली की सड़कों पर दौड़ने लगी। शाहीन बाहर की ओर निहारती हुई यह विचार–विचार कर भावुक हुई जा रही है कि डैडी और मां को आज घर पर मेरा बर्थडे मनाना चाहिए, तो ये लोग दूसरे की पार्टी में जा रहे हैं. कितने गंदे हैं ये लोग. दूसरे की पार्टी से भी इन्हें ध्यान नहीं आया कि आज मेरा बर्थडे है।

इसी समय कार रुक गई। अकमल और सबीना तत्परता से गाड़ी से नीचे उतरकर शाहीन और जावेद से बोले – तुम लोग भी तो उतरो।

कार से नीचे उतरते ही शाहीन ने देखा कि वो लोग एक बैंक्वेट हॉल के सामने रुके हुए हैं। वहां की गई लाइटिंग से शाहीन का मन और भी उदास हो गया। धीरे–धीरे अपने डैडी और मां के साथ वह जावेद का हांथ पकड़े हाल की और बढ़ने लगी। शाहीन ने देखा हाल में उसके डैडी के बहुत सारे फ्रेंड थे। उसकी भी बहुत सारी फ्रेंड दिखाई पड़ रही थीं। शाहीन पर दृष्टि पढ़ते ही सभी ने एक स्वर में कहना प्रारंभ किया – हैप्पी बर्थडे टू यू शाहीन..... । हैप्पी बर्थडे टू यू। हैप्पी बर्थडे टू यू।

विस्मय से अकमल और सबीना की ओर निहारती हुई शाहीन बोली – ये क्या है डैडी ?

अकमल और सबीना ने भी कहा – हैप्पी बर्थडे टू यू माय लविंग डॉटर। हैप्पी बर्थडे टू यू।

विस्मय से शाहीन अपने डैडी की आंखों में झांकने लगी. अकमल ने कहा – आज हमारी प्यारी बेटी का बर्थडे है न।

शाहीन को रुलाए आ गई। भावावेश में वह अपने डैडी के गले लगाती हुई बोली – मैं तो सोच रही थी कि आपको याद ही नहीं है डैडी।

सबीना ने स्नेह से शाहीन की आंखों में भर आए आंसुओं को पोंछते हुए कहा – हम अपनी बड़ी और खूब समझदार बेटी का बर्थडे भला कैसे भूल सकते थे ? हमारी बेटी बड़ी हो गई है। उसका बर्थडे भी अब अच्छे से मनाया जाना चाहिए न। इसलिए हम लोगों ने बैंक्वेट हॉल बुक करवाया और अपनी समझदार बेटी को सरप्राइज बर्थडे विश किया। कैसी रही.... बेटे ?

मां..... य बोलकर शाहीन अपने डैडी को छोड़कर सबीना के गले से लग गई और रोने लगी। सबीना ने उसके आंसू पोंछते हुए कहा – हमें मालूम था सुबह से ही की हमारी बेटी का आज मुख क्यों फूला हुआ है ? लेकिन हम तो सरप्राइज देना चाहते थे ?

तभी शाहीन को उसकी सहेलियों ने आकर घेर लिया और एक स्वर में बोलने लगी – हैप्पी बर्थडे टू यू शाहीन, हैप्पी बर्थडे टू यू।

अकमल ने सभी बच्चों से कहा – चलिए चलिए आप सब लोग केक के पास चलिए अभी तो शाहीन को केक काटना है।

अकमल से एक बार पुन: गले लगाती हुई शाहीन बोली – डैडी.. ! मैं आपको और मां को मन ही मन गंदा कह रही थी। लेकिन आप दोनों बहुत अच्छे हैं।

अकमल ने भावुक होकर कहा – बेटे हम भला कैसे भूल सकते थे तुम्हारा बर्थडे ? हम दोनों तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।

कवितायें

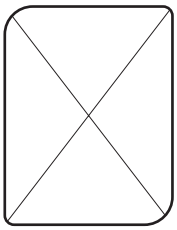

नरेन्द्र सिंह -

रोशनी से नहाया शहर

आज फिर से सजाया शहर।
रोशनी से नहाया शहर।।
फिर से सजधज के आया शहर।
रोशनी से नहाया शहर।।

आज मावस में तम का,
बहुत जोर था।
राम के आगमन का,
बहुत शोर था।।

मन में छाया था उल्लास दर दर नगर,
रोशनी से नहाया शहर।।1।।

साँझ उतरी धरा,
दीप जगमग जले।
दीपमाला जली,
मन में सरसिज खिले।।

राम का आगमन, सब उतारें नजर।
रोशनी से नहाया शहर।। 2।।

आज साकेत को,
फिर से जीवन मिला।
आज सरयू के तट,
फिर से जीवन खिला।।

राम दरबार का, छाया जग में असर।
रोशनी से नहाया शहर।। 3।।

कवितायें

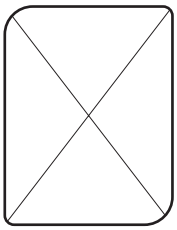

शैलेन्द्र शेल –

छप्पर फाड़ के

बहुत दिन सूखे पड़े थे, तुम झरे आषाढ़ के।
हो तुम निकल ही आओगे, छप्पर फाड़ के।

आदमी की तरह तुम तो नहीं,
सोहबत में पले हो।
तुम गए उड़कर हवा में ,
नहीं पानी में गले हो ।
मार पाए नहीं तुमको,
गर्म सर्दी और जूड़ा।
तुम सहे कितने यहां पर,
ठंड सूखा और बूड़ा ।
तुम विरासत हो सदा, सदियों से ऊंचे झाड़ के।
बीज हो तुम निकल ही आओगे, छप्पर फाड़ के।

तुम कभी भी नहीं,
गैरों के जगाने पर जगे हो ।
पत्थरों पर भी सदा तुम,
तान कर सीना उगे हो।
आंधियां तूफान जैसे,
जाने कितने मोड़ आए ।
पर तुम्हारे इस अटल,
संकल्प को ना तोड़ पाए।
तुम नहीं हो मनुज जैसे, मांस के या हाड़ के।
बीज हो तुम निकल ही आओगे, छप्पर फाड़ के।

आग खुद ही जल गई ,
तुमको जला पाई नहीं ।
पर तुम्हारे बाल हठ को,
वह डिगा पाई नहीं ।
पल रहे अंदर तुम्हारे,
फल व सुंधर फूल हैं ।
और कितने वंश ,
कितनी पीढ़ियों के मूल हैं।
खोखरों में भी उगे ,तुम हो निशानी बाढ़ के ।
बीज हो तुम निकल ही आओगे, छप्पर फाड़ के।

गुलाब

प्रेम का प्रतीक चिन्ह, भाव में रुआब है।
शान से खिला हुआ, ये बाग का नवाब है।

रंग है अनेक किंतु,
अंग सबके एक है।
हैं जनक जुदा–जुदा,
सुगंध सब में एक है।
कंटकों के बीच एक, जीत का जवाब है ।
शान से खिला हुआ, ये बाग का नवाब है ।

जब कभी भी प्रीत के,
पुनीत पृष्ठ खोलते ।
अनलिखी अतीत की,
कहानियां है बोलते ।
शुष्क हो चुके पटल,
दबे हुए गुलाब के ।
आज भी महक रहे हैं ,
पृष्ठ उस किताब के ।
बाग में खिलें सभी,ये हर कली का ख्वाब है ।
शान से खिला हुआ, ये बाग का नवाब है ।

कंटकों के बीच ,
सर उठाके जो खड़ा हुआ ।
जिंदगी के कष्ट जो सहा,
वही बड़ा हुआ।
सादगी भी जिंदगी की,
एक सफल साधना ।
दिल में हर किसी के लिए,
हो पुनीत भावना।
हर किसी को दे रहा, संदेश ये गुलाब है ।
शान से खिला हुआ, ये बाग का नवाब है।

समय समय की बात

रे मनुआ समय-समय की बात ।

कभी समय है साथ निभाता,
कभी करे है घात ।

कभी फकीर बन गया राजा,
राजा बना फकीर।
चला समय का पहिया ऐसे,
बदल गई तकदीर।
प्यादा बना वजीर कहीं पर, हुई पैदली मात ।

रे मनुआ समय-समय की बात।

किस्मत से है हीरा मिलता,
और रांझे की हीर ।
कितना भी पाताल खोद लो,
मिलता नहीं है नीर ।
डूबा नहीं कभी जो गहरे, उसे मिली सौगात।

रे मनुआ समय-समय की बात ।

खुशियों के हैं फूल कहीं पर,
गमों के हैं अंगार ।
हानि लाभ सुख दुख है सबके,
जीवन के श्रृंगार,
सब की जाती अंत समय में, सज धज कर बारात।

रे मनुआ समय-समय की बात।

पागल मन

पंचभूत में आखिर मिल जाता तन।
क्यों गुमान करता है, रे पागल मन।

सुख दुख वा रोग शोक,
जीवन के रंग,
जीवन भर चलती है,
तन मन की जंग,
काम नहीं आता है पैसा और धन।
क्यों गुमान करता है रे पागल मन।

मतलब की दुनिया है,
मतलब के यार।
हाथी के दांत सा,
दिखावे का प्यार।
जहरीले खार लिए, बैठे स्वजन।
क्यों गुमान करता है, रे पागल मन।

सुरसा सी मुंह फाड़े,
बढ़ती इच्छाएं,
सारस सी एक पैर,
खड़ी समस्याएं,
कभी नहीं बुझती,ये पेट की अगन।
क्यों गुमान करता है, रे पागल मन।

जीवन का सार,
सिर्फ प्रेम और प्यार,
राम नाम से होगा,
भवसागर पार,
अगर शांति पाना है, कर ले भजन।
क्यों गुमान करता है, रे पागल मन।

पंचभूत में आखिर मिल जाता तन।
क्यों गुमान करता है रे पागल मन।।

गजलें

कोई ऐसा जतन करो भाई।
नेक अपना वतन करो भाई।

मैल बह जाय, सारा तन मन का,
साफ अपना बदन करो भाई।

दीप मन का जला रहे हरदम ,
सीप जैसा सदन करो भाई।

हांथ जलने का जहां खतरा हो ,
नहीं ऐसा हवन,करो भाई।

जिंदगी जोंक बन के, मत काटो,
अब तो कोई भजन, करो भाई।

खूब हमने भी सियासत कर ली,
अब तो गंगो जमन, करो भाई।

जान हाजिर करे वतन के लिए,
दिल में ऐसी अगन, करो भाई।

देख कर पांव रखना यहां।
मत किसी को परखना यहां।

भूल है आज के दौर में,
सबको अपना समझना यहां।

स्वर्ण चिड़िया है कब की उड़ी
हैं दबे सिर्फ पखना यहां।

घोर महंगाई के दौर में,
पेट से पीठ ढंकना यहां ।

चक्रव्यूही सियासत हुई,
सोचकर पैर रखना यहां।

हम तो पूरब को चलते रहे,
हो गए लोग दखना यहां।

शैल तू मन रमा राम में,
सिर्फ तन अपना रखना यहां।